

**2BEDT9**

## **अधिगम और अध्यापन**



**डॉ.सी.वी. रमन विश्वविद्यालय**

करगी रोड, कोटा, बिलासपुर छत्तीसगढ़

फोन: 07723-253801, 07753-253872

ई मेल: [info@cvru.ac.in](mailto:info@cvru.ac.in) वेबसाइट: [www.cvrु.ac.in](http://www.cvrु.ac.in)

**2BEDT9**  
**अधिगम और अध्यापन**

**Credit- 4**

---

**Subject Expert Team**

---

**Prof. Raina Tiwari** HEAD,  
Department of Education, Vijayashree  
Educational Institute, Rani Durgavati  
Vishwavidhyalaya Jabalpur (MP)

**Prof. Jubraj Khamari**  
Department of Education, Sambalpur  
University Jyoti Vihar, Burla,  
Sambalpur, Odisha.

**Dr. Dheerendra Singh** Assistant  
Professor, Department of Education,  
Guru Ghasidas Vishwavidhyalaya  
Bilaspur (C.G.)

**Dr. Renu Shukla** Assistant Professor,  
Department of Sanskrit, Dr. C.V. Raman  
University Kota, Bilaspur (C.G.)

**Dr. Ravi Prakash Choudhary** Dean,  
Department of Law Dr. C.V. Raman  
University Kota. Bilaspur (C.G.)

**Dr. Krishna Kumar Pandey**, Assistant  
Professor, Dr.C.V. Raman University  
Kota. Bilaspur (C.G.)

**Mre. Meenakshi Chandravanshi**,  
Assistant Professor, Dr. C.V. Raman  
University Kota. Bilaspur (C.G.)

**Dr. Parvati Yadav**,  
Assistant Professor, Dr. C.V. Raman  
University Kota. Bilaspur (C.G.)

**Dr. Smriti Kiran Saimons**,  
Associate Professor, Dr. C.V. Raman  
University Kota. Bilaspur (C.G.)

---

**Course Edited By:**

---

**Dr. Arvind Yadav**

Professor, D.P. Vipra, College, Birkona Road, Bilaspur, Chhattisgarh

---

**Unit Written By:**

---

**Dr. Alka Singh**

Assistant Professor, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh

---

**Warning:** All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

---

**Edition: 2026**

Published by: Dr. C.V. Raman University Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.), Ph.  
+07753- 253801,07753-253872 E-mail: info@cvru.ac.in, Website: www.cvru.ac.in

## कार्यक्रम की संरचना

|                     |   |                                   |
|---------------------|---|-----------------------------------|
| कार्यक्रम का शीर्षक | : | बैचलर ऑफ़ एजुकेशन                 |
| कार्यक्रम का प्रकार | : | स्नातक                            |
| कार्यक्रम क्रेडिट   | : | 80                                |
| कार्यक्रम का समय    | : | 2 साल                             |
| पात्रता मापदंड      | : | किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री |

### कार्यक्रम के उद्देश्य (PROGRAMME OBJECTIVES)

बैचलर ऑफ़ एजुकेशन (B.Ed.) कार्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-के लिए अभ्यास करने वाले शिक्षकों में समझ और आवश्यक योग्यताओं का विकास करना है। यह कार्यक्रम भावी शिक्षकों को बच्चे के विकास के मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय पहलुओं को समझने तथा विभिन्न परिस्थितियों में उसके व्यवहार को समझने के लिए तैयार करता है। यह शिक्षण के कठोर अभ्यास के साथ मिलकर शिक्षक प्रशिक्षुओं को शिक्षण की कला में महारत हासिल करने और विभिन्न कक्षा की स्थितियों में छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर उनसे निपटने की क्षमता प्रदान करता है।

### कार्यक्रम के परिणाम (PROGRAMME OUTCOMES)

कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद छात्र निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

- शिक्षार्थियों के निरंतर बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास का मूल्यांकन करने और सुनिश्चित करने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक मूल्यांकन रणनीतियों को समझना और उनका उपयोग करना।
- स्कूल आधारित सीखने के अनुभवों और चिंतनशील प्रथाओं के माध्यम से 'शिक्षक' के रूप में अपनी आत्मपहचान को पहचानना, जो लगातार उनकी पसंद और कार्यों के प्रभावों का मूल्यांकन करते हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षुओं के व्यवहार, दृष्टिकोण और मूल्यों को बदलना ताकि वे स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक चिंताओं तथा मानव जीवन, प्रगति और विकास के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों के परिप्रेक्ष्य में समाज में जिम्मेदार और जवाबदेह परिवर्तनकर्ता के रूप में ढल सकें।

### कार्यक्रम के विशिष्ट परिणाम (PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES)

- सामान्य रूप से शिक्षा और विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा के विषयों की केंद्रीय अवधारणाओं, जांच के उपकरणों और संरचनाओं को समझने के लिए छात्रों को सक्षम बनाना।

- शिक्षक प्रशिक्षुओं को ऐसे अवसर प्रदान करना जो सीखने के अनुभवों को सार्थक बनाने में सक्षम हों।
- छात्र शिक्षकों को यह समझने के लिए प्रेरित करना कि बच्चे कैसे सीखते और विकसित होते हैं, सीखने के उनके दृष्टिकोण कैसे भिन्न होते हैं, और सीखने के अवसर कैसे सृजित किए जाते हैं।
- कक्षा के अंदर और बाहर सीखने के अनुभवों की योजना बनाने के लिए छात्र शिक्षकों के कौशल का विकास करना जो शिक्षार्थियों की मौजूदा दक्षता, रुचियों, अनुभवों और ज्ञान पर आधारित हों, और उन्हें यह समझने में सक्षम बनाना कि छात्र पाठ्यक्रम में निहित विषय वस्तु को कैसे देखना, विकसित करना, सीखना और समझना सीखते हैं।
- कक्षा में सक्रिय पूछताछ, सहयोग और सहायक बातचीत को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी मौखिक, गैर मौखिक और मीडिया संचार तकनीकों के ज्ञान का उपयोग करने की छात्र शिक्षकों की-क्षमता का विकास करना।

## पाठ्यक्रम की संरचना

|                 |   |                  |
|-----------------|---|------------------|
| कोर्स का शीर्षक | : | अधिगम और अध्यापन |
| कोर्स का प्रकार | : | मूल पाठ्यक्रम    |
| कोर्स कोड       | : | 2BEDT9           |
| कोर्स क्रेडिट   | : | 4                |
| समसत्र          | : | 2                |

### पाठ्यक्रम सीखने का उद्देश्य-

- अधिगम की अवधारणा की समझ विकसित करना।
- चिंतनशील अधिगम का विश्लेषण करना। अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण करना।
- अधिगम प्रक्रिया में अधिगम के संज्ञानात्मक परिप्रेक्ष्य को लागू करना।
- अधिगम प्रक्रिया में रचनावादी अधिगम दृष्टिकोण को लागू करना।

### पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम-

- विद्यार्थी अधिगम के विभिन्न दृष्टिकोणों और अधिगम को प्रभावित करने वाले तत्वों के महत्व को समझने में सक्षम हों।
- छात्र सोचने, याद रखने और भूलने के बीच अंतर को समझने में सक्षम हों।
- विद्यार्थी शिक्षण के विभिन्न दृष्टिकोणों को सीखने और लागू करने में सक्षम हों।

| ब्लॉक<br>(Block) | इकाई<br>(Unit) | विषय / शीर्षक (Topic / Title)                                  | Page<br>No. |
|------------------|----------------|----------------------------------------------------------------|-------------|
| <b>ब्लॉक - 1</b> | इकाई - 1       | सीखने की अवधारणा                                               | 1           |
|                  | इकाई - 2       | अधिगम की विशेषताएं, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक           | 7           |
|                  | इकाई - 3       | थार्नडाइक का अधिगम नियम                                        | 14          |
|                  | इकाई - 4       | पावलोव का शास्त्रीय अनुबंधन एवं कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धांत    | 21          |
| <b>ब्लॉक - 2</b> | इकाई - 5       | पियाजे का संज्ञानात्मक सिद्धांत                                | 31          |
|                  | इकाई - 6       | कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत                               | 40          |
|                  | इकाई - 7       | गैरे का अधिगम स्तर एवं अधिगम की सूचना एवं प्रसंस्करण प्रक्रिया | 49          |
|                  | इकाई - 8       | वाइगोत्सकी का सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धांत                | 56          |
| <b>ब्लॉक - 3</b> | इकाई - 9       | अधिगम के प्रेरक एवं व्यक्तिगत आयाम                             | 63          |
|                  | इकाई - 10      | मास्लो का सिद्धांत                                             | 69          |
|                  | इकाई - 11      | कर्ट लेविन का क्षेत्र सिद्धांत                                 | 78          |
|                  | इकाई - 12      | अधिगम की अभिरुचि, अभिवृत्ति                                    | 85          |
| <b>ब्लॉक - 4</b> | इकाई - 13      | सीखने की अवधारणा                                               | 93          |
|                  | इकाई - 14      | शिक्षण की प्रक्रिया एवं रणनीतियां                              | 99          |
|                  | इकाई - 15      | शिक्षण की विधियां                                              | 106         |
|                  | इकाई - 16      | शिक्षण के प्रकार                                               | 113         |
| <b>ब्लॉक - 5</b> | इकाई - 17      | शैक्षिक मूल्यांकन                                              | 121         |
|                  | इकाई - 18      | मूल्यांकन, चिंतन एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य                       | 135         |
|                  | इकाई - 19      | चिंतनशील शिक्षण                                                | 145         |
|                  | इकाई - 20      | सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी                                   | 155         |

# खण्ड – 01

# इकाई -1

## सीखने की अवधारणा

---

### 1.1 प्रस्तावना

### 1.2 उद्देश्य

### 1.3 अधिगम की अवधारणा

#### 1.3.1 अधिगम की परिभाषा

#### 1.3.2 अधिगम की प्रकृति

### 1.4 सारांश

### 1.5 शब्दावली

### 1.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 1.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 1.8 संदर्भ

### 1.9 अभ्यास

---

## 1.1 प्रस्तावना

मानव जीवन की विकास यात्रा में 'अधिगम' (Learning) सबसे महत्वपूर्ण और आधारभूत प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है। वास्तव में, मानव की संपूर्ण प्रगति, व्यवहार में परिमार्जन और समाज में उसका सामंजस्य पूर्ण रूप से उसकी अधिगम क्षमता पर ही निर्भर करता है। साधारण शब्दों में अधिगम का अर्थ 'सीखना' या 'व्यवहार में परिवर्तन' है, जहाँ केवल जानकारी प्राप्त करना ही अधिगम नहीं है, बल्कि नए अनुभवों और प्रशिक्षण के आधार पर अपने स्वाभाविक व्यवहार में प्रगतिशील व सकारात्मक सुधार लाना है। इस विषय की गंभीरता को स्पष्ट करते हुए वूडवर्थ ने कहा है कि नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया ही अधिगम की प्रक्रिया है, वहीं गेट्स व अन्य के अनुसार अनुभव और प्रशिक्षण के द्वारा अपने व्यवहार में होने वाला संशोधन ही अधिगम है।

अधिगम की प्रकृति अत्यंत व्यापक है; यह एक सतत, जीवन पर्यंत और सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो संसार के सभी प्राणियों व समाजों में समान रूप से पाई जाती है, और इसका प्रत्यक्ष परिणाम व्यक्ति के विचारों, कौशलों तथा अनुकूलन क्षमता में दिखने वाले बदलावों के रूप में सामने आता है। आज के आधुनिक युग में, जहाँ ज्ञान और तकनीक का नित नया विस्तार हो रहा है, जीवन को सुगम व प्रभावी बनाने के लिए सीखने के नए-नए आयामों, प्रवृत्तियों और अनुप्रयोगों का विकास दिन-प्रतिदिन हो रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में, प्रस्तुत अध्याय मनुष्य के सीखने की प्रारंभिक अवस्था, उसकी आंतरिक प्रक्रियाओं और मूलभूत सिद्धांतों से लेकर आधुनिक 'अधिगम तकनीकी' (Learning Technology) का विस्तृत व गहन

विश्लेषण करता है, जिसका मुख्य उद्देश्य अधिगम के व्यावहारिक उपयोगों, इसके विविध प्रयोगों और समकालीन परिदृश्य में इसकी अनिवार्य आवश्यकताओं पर प्रकाश डालना है ताकि शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, न्यायसंगत और समावेशी बनाया जा सके।

---

## 1.2 उद्देश्य -

---

- अधिगम का अर्थ को स्पष्ट करना।
- अधिगम को परिभाषित करना।
- अधिगम की प्रकृति को स्पष्ट करना।

---

## 1.3 . अधिगम की अवधारणा -

---

अधिगम का अर्थ है- सीखना अथवा व्यवहार में परिवर्तन। यह परिवर्तन अनुभव के द्वारा होता है। जीवन की विभिन्न क्रियाओं को किस प्रकार किया जाये वह "सीखना" है। संकुचित अर्थ में सीखना केवल ज्ञान प्राप्ति की क्रिया है और व्यापक अर्थ में सीखना घर पर भी होता है और बाहर भी। यह एक मानसिक क्रिया है, जिसे व्यक्ति जान-बूझकर अपनाता है, जिससे वह अपने लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त सके।

अधिगम शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य घटक है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका विशेष स्थान बताया गया है। क्योंकि शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य ही सीखना है। हम सभी जानते हैं मनुष्य का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखना ही है। घर, स्कूल एवं अपने आस-पास के वातावरण से मनुष्य कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है और अपना सर्वपक्षीय विकास करता है।

**उदाहरण** - पहली बार आग को देखकर बालक उसे छू लेता है और जल जाता है। फलस्वरूप उसे एक नया अनुभव होता है। अतः जब वह आग को फिर देखता है तब उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया भिन्न होती है। अनुभव ने उसे आग को न छूना सिखा दिया है। अतः वह आग से दूर रहता है।

### 1.3.1 अधिगम की परिभाषा -

कुछ विद्वानों ने अधिगम की अवधारणा को स्पष्ट करते के लिए इस प्रकार परिभाषित किया है -

1. वुडवर्थ (Woodworth)- "सीखना विकास की प्रक्रिया है।"
2. स्किनर (Skinner) के अनुसार, "सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"
3. क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) - "सीखना-आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"
4. गिलफोर्ड (Guilford) के शब्दों में, "व्यवहार के कारण, व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है।"

### 1.3.2 अधिगम की प्रकृति -

अधिगम की प्रकृति को निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है-

#### 1. व्यवहार में परिवर्तन (Behavioral Modification)

अधिगम का सीधा संबंध सीखने वाले के व्यवहार में परिवर्तन लाने से है। अनुभव, अभ्यास और प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के पुराने व्यवहार में सुधार या नया व्यवहार जुड़ता है।

## **2. सतत् और जीवन पर्यन्त प्रक्रिया (Continuous & Lifelong Process)**

सीखना केवल कक्षा तक सीमित नहीं है। यह गर्भ से कब्र (womb to tomb) तक चलने वाली निरंतर प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म के बाद से ही कुछ न कुछ सीखना शुरू कर देता है।

## **3. सार्वभौमिक प्रक्रिया (Universal Process)**

अधिगम केवल मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सभी जीवित प्राणियों (पशु-पक्षियों आदि) में किसी न किसी रूप में पाया जाता है। हर व्यक्ति अपने परिवेश में रहकर सीखता है।

## **4. उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया (Goal-oriented)**

अधिगम हमेशा किसी न किसी उद्देश्य या लक्ष्य से प्रेरित होता है। बिना उद्देश्य के सीखने की प्रक्रिया धीमी और कम प्रभावी होती है। लक्ष्य व्यक्ति को सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।

## **5. सक्रिय प्रक्रिया (Active Process)**

सीखने के लिए अधिगमकर्ता (learner) का मानसिक और शारीरिक रूप से सक्रिय होना आवश्यक है। निष्क्रिय रहकर ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता, करके सीखने (learning by doing) से अधिगम स्थाई होता है।

## **6. समायोजन की प्रक्रिया (Process of Adjustment)**

अधिगम व्यक्ति को अपने वातावरण और नई परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाने या समायोजित (adjust) करने में मदद करता है।

## **7. व्यक्तिगत व सामाजिक प्रक्रिया (Individual & Social Process)**

सीखना एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है क्योंकि हर व्यक्ति अपनी गति और क्षमता के अनुसार सीखता है। साथ ही, यह सामाजिक भी है क्योंकि मनुष्य समाज, परिवार और समूह में रहकर पारस्परिक क्रियाओं (interaction) से बहुत कुछ सीखता है।

## **8. अनुभवों का संगठन (Organization of Experiences)**

अधिगम केवल नई जानकारियों को रटना नहीं है, बल्कि नवीन अनुभवों को पूर्व अनुभवों के साथ जोड़ना और संगठित करना है।

### **जाँच करें अपनी प्रगति**

1. अधिगम का अर्थ स्पष्ट कीजिए -

2. अधिगम की प्रमुख दो परिभाषा दीजिए -

3." अधिगम जीवन पर्यन्त सीखने वाली प्रक्रिया है " स्पष्ट कीजिए -

### 1.4 सारांश -

अतः अधिगम शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य घटक है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका विशेष स्थान बताया गया है। क्योंकि शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य ही सीखना है। हम सभी जानते हैं मनुष्य का जीवन जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखना ही है। घर, स्कूल एवं अपने आस-पास के वातावरण से मनुष्य कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है और अपना सर्वप्रथम विकास करता है।

### 1.5 शब्दावली

**अधिगम (Learning)** - सीखना या व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन।

**जीवन पर्यन्त (Lifelong / Throughout Life)** जीवन भर, जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर।

**परिदृश्य (Scenario / Landscape)** आँखों के सामने दिखने वाला दृश्य, वर्तमान स्थिति या माहौल।

**परिप्रेक्ष्य (Perspective)** दृष्टिकोण, देखने का नजरिया या संदर्भ।

**न्यायसंगत (Just / Equitable / Fair)** जो न्याय के अनुकूल हो, उचित हो, या जिसमें किसी के साथ भेदभाव न हो।

### 1.6 अपनी प्रगति जांचे - सम्भावित उत्तर

1. अधिगम का अर्थ है अनुभव और अभ्यास के द्वारा ज्ञान, कौशल, व्यवहार तथा योग्यताओं को सीखने की प्रक्रिया। जब व्यक्ति किसी अनुभव या अभ्यास के परिणामस्वरूप अपने व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाता है, तो उसे अधिगम कहा जाता है। अधिगम के माध्यम से व्यक्ति नई बातें सीखता है, अपनी गलतियों को सुधारता है और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को विकसित करता है। यह प्रक्रिया केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होती, बल्कि परिवार, समाज और दैनिक जीवन में भी निरंतर चलती रहती है।

#### 2. i. गेट्स (Gates) के अनुसार:

"अधिगम अनुभव और प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में होने वाला परिवर्तन है।"

#### ii. क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार:

"अधिगम आदतों, ज्ञान और दृष्टिकोण को प्राप्त करने की प्रक्रिया है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अधिगम अनुभव, अभ्यास और प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्ति के ज्ञान, कौशल तथा व्यवहार में परिवर्तन लाता है।

3. अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर जीवन के अंत तक चलती रहती है। मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक चरण में अपने अनुभवों, वातावरण, परिवार, समाज, शिक्षा तथा कार्यों से कुछ न

कुछ सीखता रहता है। बचपन में व्यक्ति बोलना, चलना और व्यवहार करना सीखता है। विद्यालय में वह विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है तथा आगे चलकर अपने कार्य और सामाजिक जीवन से नए अनुभव प्राप्त करता है।

अधिगम केवल विद्यालय या कक्षा तक सीमित नहीं है। व्यक्ति अपने अनुभवों से अपनी गलतियों को सुधारता है और नई परिस्थितियों के अनुसार अपने ज्ञान एवं व्यवहार में परिवर्तन करता है। इस प्रकार बदलती परिस्थितियों के साथ सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है।

---

### 1.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन;

---

इंटरैक्टिव पीपीटी (Interactive PPTs): शिक्षण के स्तर (स्मृति, अवबोध, और चिंतन स्तर) को बहु-विकल्पीय प्रश्नों और व्यावहारिक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत करने के लिए।

---

### 1.8 संदर्भ

---

<http://14.139.237.190>

<https://bedhindiarticles.blogspot.com>

अग्रवाल जे.सी., (1995) एसेंशियल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड,

भटनागर एस. और सक्सेना ए., (1990) एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

चौहान एस.एस., (1990) एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी, विकास पब्लिकेशन हाउस, एन.डी.,

---

### 1.9 अभ्यास:

---

#### वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

1. अधिगम (Learning) का सामान्य अर्थ क्या है?

(अ) केवल जानकारी प्राप्त करना

(ब) व्यवहार में अनुभव एवं प्रशिक्षण के आधार पर सकारात्मक परिवर्तन लाना

(स) केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना

(द) जन्मजात क्षमता का विकास करना

2. वूडवर्थ के अनुसार अधिगम क्या है?

(अ) आदतों का निर्माण

(ब) नवीन ज्ञान एवं नवीन प्रति जिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया

(स) केवल अनुभव प्राप्त करना

(द) अनुकरण करना

### 3. निम्नलिखित में से अधिगम की कौन-सी विशेषता सही है?

(अ) यह केवल बाल्यावस्था तक सीमित है।

(ब) यह केवल विद्यालय में होता है।

(स) यह जीवनपर्यंत चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है।

(द) यह केवल मानव में पाया जाता है।

### 4. आधुनिक अधिगम तकनीकी का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

(अ) केवल परीक्षा परिणाम सुधारना

(ब) शिक्षण-प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी, न्यायसंगत एवं समावेशी बनाना

(स) केवल तकनीकी ज्ञान देना

(द) केवल ऑनलाइन शिक्षा देना

### लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)

1. अधिगम की संकल्पना स्पष्ट करते हुए इसकी दो प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

2. वूडवर्थ तथा गेट्स द्वारा दी गई अधिगम की परिभाषाओं की तुलना कीजिए।

3. आधुनिक शिक्षा में अधिगम तकनीकी की आवश्यकता एवं उपयोगिता का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)

1. अधिगम की अवधारणा, प्रकृति एवं विशेषताओं का विस्तृत विवेचन कीजिए तथा मानव जीवन के विकास में इसकी भूमिका स्पष्ट कीजिए।

2. अधिगम की विभिन्न परिभाषाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए स्पष्ट कीजिए कि अनुभव एवं प्रशिक्षण व्यवहार परिवर्तन में किस प्रकार सहायक होते हैं।

3. आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में अधिगम तकनीकी (Learning Technology) की आवश्यकता, उद्देश्य एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और इसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों की विस्तारपूर्वक व्याख्या कीजिए।

## इकाई - 2

# अधिगम की विशेषताएं, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

---

- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 उद्देश्य
- 2.3. अधिगम की विशेषताएं
  - 2.3.1 अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- 2.4 सारांश
- 2.5 शब्दावली
- 2.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर
- 2.7 सहायक पाठ्य सामग्री
- 2.8 सन्दर्भ
- 2.9 अभ्यास

---

### 2.1 प्रस्तावना –

---

अधिगम (Learning / सीखना) एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से अधिगम कर्ता अपने अनुभवों, अभ्यास और प्रशिक्षण के माध्यम से अपने व्यवहार, ज्ञान और कौशलों में परिवर्तन लाता है। सरल शब्दों में कहें, तो अनुभव के कारण व्यवहार में आने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन ही अधिगम है। अधिगम केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों से सीखकर खुद को ढालना है। यह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो शिक्षार्थी की आंतरिक क्षमता (बुद्धि, प्रेरणा) और बाहरी वातावरण (शिक्षक, समाज, स्कूल) के बीच आपसी तालमेल से प्रभावित होती है। इस कालखंड में अधिगम की प्रमुख विशेषताओं और इसे प्रभावित करने वाले कारकों का संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा। शैक्षणिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अधिगम की भूमिका को यदि बिना बिंदुओं के एक प्रवाहमयी पैराग्राफ के रूप में समझा जाए, तो यह संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मूल प्राण है। शिक्षा शास्त्र में अधिगम का तात्पर्य केवल सूचनाओं को ग्रहण करना या रटना नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थी के भीतर एक प्रगतिशील और स्थायी व्यवहार-परिवर्तन की प्रक्रिया है। जब हम इसकी विशेषताओं की भूमिका को देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का अंतिम लक्ष्य बालक के संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों का सर्वांगीण विकास करना है। यह एक ऐसी सक्रिय प्रक्रिया है जहाँ शिक्षार्थी मूक दर्शक बनने के बजाय अपने पूर्व ज्ञान और नए अनुभवों के पुनर्गठन से ज्ञान की नई संरचना का निर्माण करता है। जॉन डीवी और जीन पियाजे जैसे शिक्षाशास्त्रियों के विचार भी इसी बात की पुष्टि करते हैं कि सार्थक अधिगम हमेशा उद्देश्यपूर्ण और अनुकूलन पर आधारित होता है, जो छात्र को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जूझने के योग्य बनाता है।

दूसरी ओर, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों की भूमिका इस पूरी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को दिशा और गति प्रदान करती है। एक कुशल शिक्षक इन कारकों को समझे बिना प्रभावी शिक्षण की कल्पना भी नहीं कर सकता। शिक्षार्थी की शारीरिक और मानसिक परिपक्वता जहाँ पाठ्यक्रम के निर्धारण

का आधार बनती है, वहीं उसकी व्यक्तिगत भिन्नता और सीखने की शैली यह तय करती है कि कक्षा में समावेशी शिक्षा को कैसे लागू किया जाए। शिक्षा में अभिप्रेरणा को सीखने का राजमार्ग माना गया है, जो विद्यार्थी के भीतर की जिज्ञासा को जगाकर उसे स्व-अधिगम के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही, शिक्षण-शास्त्रीय तरीके जैसे कि खेल विधि, खोज विधि और उचित सहायक सामग्रियों का प्रयोग अमूर्त विचारों को जीवंत और बोधगम्य बना देता है। बी.एफ. स्किनर के सिद्धांतों के अनुरूप, सही समय पर मिलने वाला सकारात्मक पुनर्बलन और स्नेहपूर्ण व्यवहार सीखने की दर को कई गुना बढ़ा देता है।

अंततः, वाइगोत्स्की के सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण के अनुसार, बच्चा अपने परिवेश और समाज के साथ अंतःक्रिया करके ही सर्वोत्तम तरीके से सीखता है। इसीलिए, कक्षा का वातावरण भयमुक्त, सौहार्दपूर्ण और छात्र के वास्तविक जीवन से जुड़ा होना अनिवार्य है। यदि स्कूल या घर का माहौल तनावपूर्ण हो, तो अधिगम में अवरोध पैदा हो जाता है। इस प्रकार, व्यापक शैक्षिक संदर्भ में अधिगम की विशेषताएं हमें यह बताती हैं कि शिक्षा के माध्यम से व्यवहार में कैसा सकारात्मक बदलाव लाना है, और प्रभावित करने वाले कारक हमें वह मार्ग दिखाते हैं जिससे उस बदलाव को अत्यंत सुगम, वैज्ञानिक और आनंददायक बनाया जा सके। यही इन दोनों तत्वों की शिक्षा में वास्तविक भूमिका है।

---

## 2.2 उद्देश्य -

---

- छात्र अध्यापकों को अधिगम के विशेषताओं को स्पष्ट करना।
- छात्र अध्यापकों को अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना।

---

## 2.3 अधिगम की विशेषताएं

---

अधिगम (Learning) एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अनुभव और प्रशिक्षण के माध्यम से अपने व्यवहार, ज्ञान और कौशल में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन करता है। यह केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन पर्यंत चलने वाली एक व्यापक प्रक्रिया है।

### अधिगम (सीखने) की प्रमुख विशेषताएं

निम्नलिखित हैं: व्यवहार में परिवर्तन: अधिगम के परिणामस्वरूप व्यक्ति के व्यवहार में सकारात्मक या नकारात्मक संशोधन होता है। जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया: यह जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत रूप से चलती रहती है। उद्देश्यपूर्ण: अधिगम हमेशा किसी न किसी उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित होता है। सार्वभौमिक (Universal): यह प्रक्रिया हर जगह और हर समय होती है, चाहे वह औपचारिक कक्षा हो या अनौपचारिक समाज। वातावरण की उपज: व्यक्ति अपने परिवेश, समाज और परिस्थितियों के साथ अंतःक्रिया करके सीखता है। सक्रिय प्रक्रिया: सीखने वाले की सक्रिय भागीदारी और मानसिक सहभागिता इसके लिए अनिवार्य है। समस्या समाधान: अधिगम व्यक्ति को नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करने और समस्याओं का समाधान खोजने में मदद करता है।

अधिगम (सीखना) की 10 प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं: 10 विशेषताएं अधिगम उद्देश्य है – कोई भी सीखना उद्देश्य या लक्ष्य के बिना नहीं होती; वह किसी जरूरत, समस्या या चाहत से प्रेरित होती है।

- अधिगम अनुभवों का संगठन है – सीखना नए अनुभवों और पुराने अनुभवों के बीच संबंध बनाकर, उनका व्यवस्थित Protest करना है।
- अधिगम व्यवहार में स्थायी परिवर्तन है – सीखने के कारण व्यवहार में आने वाले परिवर्तन अस्थायी नहीं होते, वे अपेक्षाकृत स्थायी रहते हैं।
- अधिगम सक्रिय / क्रियाशील है – व्यक्ति सीखते समय शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक रूप से सक्रिय रहता है, बस देखने या सुनने से सीखना पूरी तरह नहीं होता।
- अधिगम विवेकपूर्ण और सृजनशील है – अधिगम में व्यक्ति स्थिति को समझता, तर्क करता और नए तरीके खोजता है; वहम या रोबोटिक रीति-रिवाज नहीं है।
- अधिगम समायोजन और अनुकूलन है – व्यक्ति सीखकर अपने वातावरण के साथ खुद को ढालता है, समस्याओं को हल करता और नई स्थितियों में ढल जाता है।
- अधिगम व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों है – सीखना व्यक्ति के अपने अनुभवों से होती, लेकिन समाज, परिवार, स्कूल, मित्रों आदि के प्रभाव से भी प्रभावित होती है।
- अधिगम विकास है – सीखना मानव के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक विकास का एक प्रमुख भाग है; वह विकास को गति देती है।
- अधिगम सार्वभौमिक है – सभी लोग, सभी आयुवर्ग, सभी क्षेत्रों में सीखते हैं; अधिगम की प्रक्रिया सभी प्रकार के जीवित मनुष्यों में पाई जाती है।
- अधिगम सम्पूर्ण जीवन चलने वाली प्रक्रिया है – जन्म से लेकर मृत्यु तक, व्यक्ति हर समय नई चीजें सीखता रहता है; यह एक निरंतर प्रक्रिया है।

ये विशेषताएं बताती हैं कि अधिगम एक उद्देश्यपूर्ण, सक्रिय, स्थायी परिवर्तन लाने वाली और जीवन पर्यंत चलती रहने वाली प्रक्रिया है।

### 2.3.1 अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

अधिगम (सीखने) की प्रक्रिया को मुख्य रूप से शिक्षार्थी की मानसिक/शारीरिक स्थिति, शिक्षण विधियों, और पर्यावरण से जुड़े कारक प्रभावित करते हैं।

| घर से संबंधित <b>Home Factors</b>  | विद्यालय से संबंधित <b>School Factors</b> | वातावरण से संबंधित <b>Environmental</b> |
|------------------------------------|-------------------------------------------|-----------------------------------------|
| प्रथम गुरु माँ के रूप में          | शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक              | वंशानुक्रम,                             |
| प्रथम पाठशाला,                     | शिक्षक से सम्बन्धित कारक                  | वातावरण का प्रभाव                       |
| परिवार की मानसिकता                 | अधिगम प्रक्रिया व व्यवस्था                | शिक्षा के साधन,                         |
| सामाजिक व्यवहार व मूल्यों का विकास | विषय-वस्तु या पाठ्यवस्तु...               | व्यक्तित्व                              |

अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विस्तृत विवरण निम्नलिखित है:

**1. शिक्षार्थी (अधिगमकर्ता)** से संबंधित कारक अधिगम की सफलता काफी हद तक सीखने वाले की व्यक्तिगत स्थिति पर निर्भर करती है:

\* प्रेरणा और रुचि: सीखने के प्रति उत्सुकता और प्रेरणा (**Motivation**) सबसे महत्वपूर्ण कारक है। रुचि होने पर विद्यार्थी तेजी से और स्थायी रूप से सीखते हैं।

\* बुद्धि और संज्ञानात्मक क्षमता: शिक्षार्थी की मानसिक क्षमता, याददाश्त (**Memory**), समस्या-समाधान कौशल और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता सीधे तौर पर अधिगम की गति को निर्धारित करती है।

\* शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य: शारीरिक रूप से स्वस्थ और तनावमुक्त व्यक्ति सीखने में अधिक सक्रिय होता है। थकान, बीमारी या चिंता सीखने की क्षमता को कम करते हैं।

\* परिपक्वता (**Maturity**): आयु के साथ शारीरिक और मानसिक परिपक्वता बढ़ती है, जो सीखने की गति और स्तर को प्रभावित करती है।

\* पूर्व ज्ञान: शिक्षार्थी का पूर्व अनुभव नई जानकारी को समझने और उसे याद रखने के लिए एक मजबूत नींव का काम करता है।

**2. शिक्षक और शिक्षण प्रक्रिया** से संबंधित कारक पढ़ाने का तरीका और शिक्षक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को आकार देते हैं

शिक्षण विधियाँ: शिक्षक द्वारा अपनाई गई रोचक, व्यावहारिक और सरल शिक्षण विधियाँ (जैसे- दृश्य-श्रव्य सामग्री का उपयोग) अधिगम को प्रभावी बनाती हैं। शिक्षक का व्यवहार: एक सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण और विषय-विशेषज्ञ शिक्षक छात्रों को प्रेरित कर सकता है। अभ्यास और प्रतिपुष्टि

**(Feedback):** निरंतर अभ्यास और समय पर उचित फीडबैक छात्रों को अपनी गलतियों को सुधारने में मदद करता है।

**3. भौतिक और पर्यावरणीय कारक सीखने का परिवेश जितना अनुकूल होगा, अधिगम उतना ही बेहतर होगा:** वातावरण: कक्षा का शांत, हवादार, और सुविधाजनक होना ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।

**शैक्षणिक संसाधन:** पर्याप्त अध्ययन सामग्री, पुस्तकालय, और आधुनिक तकनीक की उपलब्धता अधिगम को आसान बनाती है।

**4. सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक परिवार और सहपाठी:** पारिवारिक समर्थन, माता-पिता का दृष्टिकोण और हमउम्र साथियों (**Peer group**) के साथ सकारात्मक संबंध सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं।

**भावनात्मक स्थिति:** सकारात्मक भावनाएं जैसे आत्मविश्वास और उत्साह सीखने की क्षमता को बढ़ाते हैं, जबकि भय या अत्यधिक दबाव अधिगम में बाधा उत्पन्न करते हैं।

### जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1. अधिगम (Learning) से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. अधिगम की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 3. अधिगम को प्रभावित करने वाले चार प्रमुख कारक लिखिए।

प्रश्न 4. अधिगम में अभिप्रेरणा (Motivation) का क्या महत्व है?

---

## 2.4 सारांश

---

अधिगम अनुभव, अभ्यास और अध्ययन के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार या व्यवहार करने की क्षमता में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है, जिसकी प्रमुख विशेषताओं में व्यवहार में परिवर्तन, अनुभव पर आधारित होना, स्थायित्व, सक्रिय प्रक्रिया, लक्ष्य-उन्मुखता, व्यक्तिगत भिन्नता, सामाजिक प्रक्रिया, समायोजन और विकास, तथा मापनीयता व स्थानांतरणीयता शामिल हैं। यह प्रक्रिया विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें अधिगम सामग्री का स्वरूप (सरल व सार्थक सामग्री शीघ्र सीखी जाती है), अभिप्रेरणा या प्रेरणा (सीखने की इच्छा व रुचि), अभ्यास (अधिक अभ्यास से धारण शक्ति बढ़ती है), प्राणीजन्य कारक (बुद्धि, आयु, लिंग, चिंता, आकांक्षा स्तर), वातावरण (अनुकूल वातावरण सहायक), तथा तत्परता और प्रभाव के नियम (व्यक्ति तभी अच्छी तरह सीखता है जब तैयार हो और सुखद अनुभव अधिगम को सुदृढ़ करते हैं) प्रमुख हैं, अतः अधिगम एक जटिल, बहु-आयामी और सतत प्रक्रिया है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

---

## 2.5 शब्दावली-

---

- पैराग्राफ - अनुच्छेद
- अनवरत - निरंतर, बिना रुके

- क्रियात्मक - कार्य से संबंधित, कार्य करने वाला
- पुनर्बलन - प्रोत्साहन,
- रोबोटिक- रोबोट से संबंधित या मशीन
- परिपक्वता - पूर्ण विकास की अवस्था

---

## 2.6 अपनी प्रगति जांचे - संभावित उत्तर

---

उत्तर 1 : अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अनुभव, अभ्यास एवं प्रशिक्षण के माध्यम से अपने ज्ञान, कौशल, व्यवहार और दृष्टिकोण में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन लाता है।

उत्तर 2 : अधिगम एक सतत प्रक्रिया है। यह अनुभव एवं अभ्यास पर आधारित होता है। अधिगम से व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है। यह उद्देश्यपूर्ण एवं लक्ष्य-उन्मुख प्रक्रिया है।

उत्तर 3 : अभिप्रेरणा (Motivation), बुद्धि एवं योग्यता, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक एवं विद्यालयी वातावरण।

उत्तर 4 : अभिप्रेरणा विद्यार्थी में सीखने की रुचि, उत्साह और निरंतर प्रयास करने की इच्छा उत्पन्न करती है। इससे अधिगम अधिक प्रभावी, सार्थक और स्थायी बनता है।

---

## 2.7 सहायक पाठ्य सामग्री

---

<https://nobaproject.com>

<https://krmangalamnoidaextn.com>

---

## 2.8 सन्दर्भ

---

Mangal, S. K. (2019). Advanced educational psychology (3rd ed.). PHI Learning.

Bhatia, H. R. (2018). A textbook of educational psychology. Surjeet Publications.

पाण्डेय, रामशकल. (2020). शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

शर्मा, आर. ए. (2019). शैक्षिक मनोविज्ञान. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

पाठक, पी. डी. (2021). शिक्षण एवं अधिगम. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

---

## 2.9 अभ्यास

---

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अधिगम का मुख्य आधार क्या है? (ज्ञान स्तर – Remembering)

A. जन्मजात प्रवृत्ति

B. अनुभव एवं अभ्यास

C. संयोग

D. वंशानुक्रम

2. निम्नलिखित में से अधिगम को प्रभावित करने वाला आंतरिक कारक कौन-सा है? (समझ स्तर – Understanding)

A. विद्यालय का वातावरण

B. परिवार

C. अभिप्रेरणा (Motivation)

D. सामाजिक परिवेश

3. निम्नलिखित में से अधिगम की कौन-सी विशेषता सही है? (समझ स्तर – Understanding)

A. अधिगम केवल बचपन में होता है।

B. अधिगम से व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।

C. अधिगम केवल विद्यालय में होता है।

D. अधिगम जन्मजात होता है।

### **(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. अधिगम से आप क्या समझते हैं? इसकी दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

2. अधिगम को प्रभावित करने वाले किसी चार कारकों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

3. अभिप्रेरणा (Motivation) अधिगम को किस प्रकार प्रभावित करती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

### **(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (2)**

1. अधिगम की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसकी प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उनके महत्व की विवेचना कीजिए।

2. अधिगम को प्रभावित करने वाले विभिन्न आंतरिक एवं बाह्य कारकों का उदाहरण सहित समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए तथा बताइए कि एक शिक्षक प्रभावी अधिगम के लिए इन कारकों का किस प्रकार उपयोग कर सकता है।

## इकाई – 03

### थॉर्नडाइक का अधिगम नियम

#### 3.1 प्रस्तावना

#### 3.2 उद्देश्य

#### 3.3. एडवर्ड ली थॉर्नडाइक का जीवन परिचय

- 3.3.1 एडवर्ड ली थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त
- 3.3.2 थॉर्नडाइक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक महत्व
- 3.3.3 थॉर्नडाइक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक हानि।

#### 3.4 सारांश

#### 3.5 शब्दावली

#### 3.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 3.7 सहायक पाठ्य सामग्री

#### 3.8 सन्दर्भ

#### 3.9 अभ्यास

#### 3.1 प्रस्तावना –

एडवर्ड ली थॉर्नडाइक (Edward Lee Thorndike) शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्हें आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान का जनक तथा प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक के रूप में व्यापक मान्यता प्राप्त है। उनका जन्म 31 अगस्त 1874 को अमेरिका में हुआ तथा 9 अगस्त 1949 को उनका निधन हुआ। थॉर्नडाइक ने पशुओं के व्यवहार पर किए गए अपने प्रयोगों के आधार पर अधिगम (Learning) की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने विशेष रूप से भूखी बिल्ली पर किए गए प्रसिद्ध पज़ल बॉक्स (Puzzle Box) प्रयोग के माध्यम से यह सिद्ध किया कि अधिगम मुख्यतः प्रयास एवं त्रुटि (Trial and Error) की प्रक्रिया द्वारा होता है। उन्होंने उद्दीपक-प्रतिक्रिया (Stimulus-Response या S-R) सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए बताया कि सीखना उद्दीपकों और प्रतिक्रियाओं के बीच संबंध स्थापित होने की प्रक्रिया है। उनके द्वारा प्रतिपादित अधिगम के नियम एवं सिद्धांत आज भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, पाठ्यक्रम निर्माण तथा शैक्षिक मूल्यांकन में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। थॉर्नडाइक का अधिगम सिद्धांत बताता है कि शिक्षार्थी सबसे अच्छी तरह तब सीखते हैं जब वे सीखने के लिए तैयार होते हैं, जब वे विचारों का अभ्यास और पुनरावलोकन करते हैं, और जब सफलता के बाद संतोषजनक परिणाम प्राप्त होता है। तत्परता, अभ्यास और प्रभाव के नियमों के रूप में जाने जाने वाले इन तीन सिद्धांतों ने प्रारंभिक शैक्षिक मनोविज्ञान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज भी कक्षा शिक्षण के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। शिक्षकों के लिए, ये सिद्धांत व्यावहारिक रणनीतियों की ओर इशारा करते हैं जैसे कि शिक्षार्थियों को नई सामग्री के लिए तैयार करना, उद्देश्यपूर्ण अभ्यास को शामिल करना और सही प्रतिक्रिया को मजबूत करने के लिए समय पर प्रतिक्रिया देना।

#### 3.2 उद्देश्य

- एडवर्ड ली थॉर्नडाइक के जीवन परिचय से परिचित हो सकेंगे।
- एडवर्ड ली थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त से परिचित हो सकेंगे।

- थार्नडाइक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक महत्व को समझ सकते हैं।
- थार्नडाइक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक हानि को भी समझ सकेंगे।

### 3.3 एडवर्ड ली थार्नडाइक का जीवन परिचय

एडवर्ड ली थार्नडाइक (Edward Lee Thorndike) एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्हें शैक्षिक मनोविज्ञान का जनक तथा अधिगम के वैज्ञानिक अध्ययन का अग्रदूत माना जाता है। उनका जन्म 31 अगस्त 1874 को मैसाचुसेट्स (अमेरिका) में हुआ तथा 9 अगस्त 1949 को उनका निधन हुआ। उन्होंने पशुओं पर किए गए प्रयोगों, विशेषकर पज़ल बॉक्स प्रयोग, के आधार पर प्रयत्न एवं त्रुटि (Trial and Error) अधिगम सिद्धान्त तथा संबंधवाद (Connectionism Theory) का प्रतिपादन किया। उन्होंने अधिगम के प्रभाव का नियम (Law of Effect), अभ्यास का नियम (Law of Exercise) तथा तत्परता का नियम (Law of Readiness) प्रस्तुत किए, जिन्होंने शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। उनके सिद्धान्त आज भी विद्यालयी शिक्षण, व्यवहार संशोधन तथा शैक्षिक मूल्यांकन में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

#### 3.3.1 थार्नडाइक का अधिगम सिद्धान्त-

थार्नडाइक का अधिगम सिद्धान्त (Trial and Error Theory of Learning) इस विचार पर आधारित है कि व्यक्ति या जीव प्रयत्न एवं त्रुटि (Trial and Error) के माध्यम से सीखता है। जब किसी समस्या का समाधान खोजने के लिए बार-बार प्रयास किए जाते हैं, तो गलत प्रतिक्रियाएँ धीरे-धीरे समाप्त हो जाती हैं और सही प्रतिक्रिया स्थायी हो जाती है। थार्नडाइक ने इस सिद्धान्त को बिल्ली पर किए गए पज़ल बॉक्स प्रयोग द्वारा सिद्ध किया, जिसमें बिल्ली अनेक असफल प्रयासों के बाद सही क्रिया करके पिंजरे से बाहर निकलना सीख जाती थी। इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम क्रमिक, अनुभव-आधारित तथा अभ्यास और पुनर्बलन से सुदृढ़ होने वाली प्रक्रिया है। अधिगम के नियम थार्नडाइक ने अपने इस सिद्धान्त के आधार पर सीखने के दो - मुख्य और गौण नियम दिए-

#### मुख्य नियम (Primary Laws)

- **तत्परता का नियम (Law of Readiness):** सीखने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार होना जरूरी है। जब हम तैयार होते हैं, तो सीखने में आनंद आता है।
- **अभ्यास का नियम (Law of Exercise):** किसी कार्य को बार-बार करने से वह मजबूत होता है और छोड़ देने से कमजोर पड़ जाता है (इसके दो उप-नियम हैं: उपयोग का नियम और अनुपयोग का नियम)
- **प्रभाव या संतोष का नियम (Law of Effect):** जिस कार्य का परिणाम संतोषजनक या सुखद होता है, उसे प्राणी दोबारा सीखता है और जिसका परिणाम दुखद होता है, उसे वह छोड़ देता है।

#### गौण नियम (Secondary Laws)

- बहु-अनुक्रिया का नियम (Law of Multiple Response)
- मनोवृत्ति का नियम (Law of Set/Attitude)

- आंशिक क्रिया का नियम (Law of Partial Activity)
- आत्मीकरण का नियम (Law of Assimilation)
- सहचर्य परिवर्तन का नियम (Law of Associative Shifting)

### 3.3.2 थार्नडाइक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक महत्व

थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि (Trial and Error) या संबंधात्मक अधिगम सिद्धान्त शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सिद्धान्त सीखने में प्रेरणा, अभ्यास और संतोष के महत्व को स्पष्ट करता है।

- तत्परता और प्रेरणा का महत्व मानसिक तैयारी: शिक्षा तभी प्रभावी होती है जब छात्र मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार हों (तत्परता का नियम)।
- अभिप्रेरण (Motivation): शिक्षक को पाठ शुरू करने से पहले छात्रों में रुचि और जिज्ञासा जगानी चाहिए ताकि वे सीखने के लिए प्रेरित हों।
- अभ्यास और पुनरावृत्ति कौशल विकास: लेखन, वाचन, गणितीय सवाल और खेलकूद जैसी गतिविधियों में बार-बार अभ्यास से बच्चों की दक्षता बढ़ती है।
- स्थाई अधिगम: अभ्यास करने से मस्तिष्क में उद्दीपक-अनुक्रिया (S-R) का संबंध मजबूत होता है, जिससे ज्ञान लंबे समय तक याद रहता है।
- पुरस्कार और प्रभाव का नियम सकारात्मक पुनर्बलन: अच्छे कार्य या सही उत्तर मिलने पर मिलने वाली प्रशंसा या पुरस्कार बच्चों को वैसी ही प्रतिक्रिया बार-बार दोहराने के लिए प्रेरित करते हैं।
- गलतियों से सीखना: गलतियों और असफलताओं से हताश होने के बजाय बच्चों को उनसे सीख लेकर आगे बढ़ने का अवसर देना चाहिए।
- सरल से जटिल की ओर शिक्षण क्रमबद्धता: इस सिद्धान्त के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण सरल से कठिन (Simple to Complex) क्रम में किया जाना चाहिए ताकि छात्र आसानी से सीख सकें

### जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1: एडवर्ड ली थार्नडाइक कौन थे?

प्रश्न 2 : थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त के तीन प्रमुख नियम कौन-से हैं?

प्रश्न 3 : थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त का एक प्रमुख शैक्षिक महत्व लिखिए।

प्रश्न 4 : थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त की एक प्रमुख सीमा (हानि) लिखिए।

### 3.3.3 थार्नडाइक अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक हानि-

थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि (Trial and Error) का सिद्धान्त शिक्षा के क्षेत्र में जितना उपयोगी है, उसके कुछ नकारात्मक पक्ष या कमियाँ (Disadvantages/Limitations) भी हैं। इस सिद्धान्त की प्रमुख शैक्षिक हानियाँ और सीमाएं निम्नलिखित हैं:

- **समय और ऊर्जा की बर्बादी धीमी प्रक्रिया:** इस सिद्धांत के अनुसार बच्चा बार-बार गलतियां करके सीखता है, जिससे सीखने में बहुत अधिक समय नष्ट होता है।
- **श्रम की अधिकता:** किसी सरल काम को सीखने के लिए भी छात्र को कई बार प्रयास करने पड़ते हैं, जिससे उसकी ऊर्जा व्यर्थ जाती है।
- **रटने की प्रवृत्ति को बढ़ावायांत्रिक अधिगम (Mechanical Learning):** यह सिद्धांत सूझ-बूझ या समझ के बजाय आदत निर्माण और बार-बार दोहराने पर बल देता है।
- **रटने पर जोर:** इससे छात्रों में बिना सोचे-समझे केवल रटकर याद करने की आदत विकसित हो सकती है, जो उच्च शिक्षा के लिए ठीक नहीं है।
- **उच्च मानसिक शक्तियों की उपेक्षातर्क का अभाव:** यह सिद्धांत चिंतन, तर्क, कल्पना और रचनात्मकता जैसी उच्च स्तर की मानसिक योग्यताओं को नजरअंदाज करता है। अंधाधुंध प्रयास: इसमें छात्र अपनी बुद्धि का प्रयोग करने के बजाय केवल अंधाधुंध (Blind) प्रयास करता रहता है। प्रतिभाशाली बच्चों के लिए अनुपयुक्त
- **धीमी गति:** यह सिद्धांत मंदबुद्धि बच्चों के लिए तो ठीक है, लेकिन तीव्र बुद्धि या प्रतिभाशाली बच्चों के लिए समय की बर्बादी है क्योंकि वे चीजों को एक ही बार में समझ जाते हैं।
- **पशुओं पर आधारित प्रयोगमानव स्वभाव की उपेक्षा:** थार्नडाइक ने अपने प्रयोग भूखी बिल्ली और अन्य जानवरों पर किए थे। मनुष्यों और जानवरों के सीखने के तरीके में बहुत अंतर होता है, इसलिए इसे इंसानों पर पूरी तरह लागू करना तार्किक नहीं है।

### 3.4 सारांश –

एडवर्ड ली थार्नडाइक (Edward Lee Thorndike) शिक्षा मनोविज्ञान के प्रमुख मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा मनोविज्ञान के जनक माने जाते हैं। उन्होंने अधिगम को उद्दीपक-अनुक्रिया (Stimulus-Response) के संबंध के रूप में समझाया और प्रयोगों के आधार पर प्रयास एवं त्रुटि (Trial and Error) अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके द्वारा प्रतिपादित तत्परता (Law of Readiness), अभ्यास (Law of Exercise) तथा प्रभाव (Law of Effect) के नियम आज भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण आधार हैं। यह सिद्धान्त विद्यार्थियों में प्रेरणा, नियमित अभ्यास, सकारात्मक पुनर्बलन तथा क्रमबद्ध शिक्षण को बढ़ावा देता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी, स्थायी एवं उद्देश्यपूर्ण बनता है।

यद्यपि थार्नडाइक का सिद्धान्त शिक्षण की प्रभावशीलता बढ़ाने में अत्यंत उपयोगी है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं। यह सिद्धान्त मुख्यतः बाह्य व्यवहार, अभ्यास और पुनर्बलन पर अधिक बल देता है तथा सृजनात्मकता, अंतर्दृष्टि, चिंतन, भावनात्मक एवं सामाजिक पहलुओं को अपेक्षाकृत कम महत्व देता है। इसके बावजूद अधिगम के वैज्ञानिक अध्ययन, शिक्षण विधियों के विकास तथा आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान की आधारशिला रखने में थार्नडाइक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी माना जाता है।

### 3.5 शब्दावली -

- पुनरावलोकन — सीखी हुई बातों का दोबारा अवलोकन या समीक्षा करना।
- पुनर्बलन — किसी व्यवहार या अधिगम को प्रोत्साहित एवं सुदृढ़ करने की प्रक्रिया।
- आत्मीकरण — किसी ज्ञान, विचार या अनुभव को अपने व्यक्तित्व का स्थायी भाग बना लेना।

- पुनरावृत्ति — किसी कार्य, अभ्यास या विषय को बार-बार दोहराना।
- अंतर्दृष्टि — अचानक समस्या का समाधान समझ में आ जाना या गहन सूझ-बूझ द्वारा सीखना।

### 3.6 अपनी प्रगति जांचे - सम्भावित उत्तर

उत्तर 1 : एडवर्ड ली थार्नडाइक एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे। उन्हें शिक्षा मनोविज्ञान का जनक तथा प्रयत्न एवं त्रुटि (Trial and Error) अधिगम सिद्धान्त के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है।

उत्तर 2 : (1) तत्परता का नियम (Law of Readiness), (2) अभ्यास का नियम (Law of Exercise), (3) प्रभाव का नियम (Law of Effect)।

उत्तर 3 : यह सिद्धान्त अभ्यास, पुनर्बलन तथा विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी पर बल देता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी और स्थायी बनता है।

उत्तर 4 : यह सिद्धान्त मुख्यतः प्रयत्न एवं त्रुटि पर आधारित है और उच्च स्तरीय चिंतन, तर्क तथा अंतर्दृष्टि (Insight) जैसे मानसिक पक्षों को पर्याप्त महत्व नहीं देता।

### 3.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन

एनसीईआरटी ई-पाठशाला (ePathshala) – शिक्षा मनोविज्ञान, अधिगम एवं व्यवहारवाद से संबंधित ई-पुस्तकें, वीडियो एवं अन्य डिजिटल सामग्री उपलब्ध है।

लिंक: NCERT ePathshala

CIET

स्वयं (SWAYAM) – शिक्षा मनोविज्ञान, अधिगम सिद्धान्त तथा शिक्षक शिक्षा से संबंधित निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

लिंक: SWAYAM

NIOS CMS +1

ई-आध्ययन / e-PG Pathshala (INFLIBNET) – शिक्षा एवं मनोविज्ञान विषय की उच्च शिक्षा हेतु मुक्त ई-पुस्तकें और अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

लिंक: e-Adhyayan (INFLIBNET)

INFLIBNET E-Books +1

ई-ज्ञानकोश (IGNOU eGyankosh) – शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम सिद्धान्तों पर स्व-अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

लिंक: IGNOU eGyankosh

Egyankosh

---

### 3.8 संदर्भ -

---

थॉर्नडाइक, ई. एल. (1921). एजुकेशनल साइकोलॉजी (Educational Psychology)। टीचर्स कॉलेज, कोलंबिया विश्वविद्यालय।

Schunk, D. H. (2020). Learning Theories: An Educational Perspective (8th ed.). Pearson.

Woolfolk, A. (2022). Educational Psychology (15th ed.). Pearson.

शर्मा, आर. ए. (2017). शैक्षिक मनोविज्ञान। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो। (हिंदी संदर्भ पुस्तक)

भटनागर, ए. बी., एवं सक्सेना, ए. (2019). शैक्षिक मनोविज्ञान। आगरा: आर. लाल बुक डिपो। (हिंदी संदर्भ पुस्तक)

Library of Congress – Educational Psychology

Open Library – Educational Psychology by Edward L. Thorndike

---

### 3.9 अभ्यास

---

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs) – 4 विकल्पों के साथ

1. एडवर्ड ली थॉर्नडाइक को किस अधिगम सिद्धान्त का प्रवर्तक माना जाता है?

(अ) शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त

(ब) प्रयत्न एवं त्रुटि अधिगम सिद्धान्त

(स) अंतर्दृष्टि अधिगम सिद्धान्त

(द) प्रेक्षण अधिगम सिद्धान्त

2. थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त का सबसे प्रमुख नियम कौन-सा है?

(अ) तत्परता का नियम

(ब) अभ्यास का नियम

(स) प्रभाव का नियम

(द) पुनर्बलन का नियम

3. थॉर्नडाइक ने अपना प्रसिद्ध प्रयोग मुख्यतः किस जीव पर किया था?

(अ) कुत्ता

(ब) चूहा

(स) बिल्ली

(द) बंदर

4. थॉर्नडाइक के अनुसार अधिगम मुख्यतः किस प्रक्रिया द्वारा होता है?

(अ) अनुकरण द्वारा

(ब) अंतर्दृष्टि द्वारा

(स) प्रयत्न एवं त्रुटि द्वारा

(द) अवलोकन द्वारा

### लघु उत्तरीय प्रश्न

- एडवर्ड ली थॉर्नडाइक का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।
- थॉर्नडाइक के प्रभाव के नियम (Law of Effect) की व्याख्या उदाहरण सहित कीजिए।
- कक्षा शिक्षण में अभ्यास के नियम (Law of Exercise) का उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
- थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक महत्व एवं सीमाओं का संक्षिप्त विश्लेषण कीजिए।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एडवर्ड ली थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए उसके प्रमुख नियमों का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए।
2. थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त के शैक्षिक महत्व एवं सीमाओं का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
3. थॉर्नडाइक के अधिगम सिद्धान्त के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए एक प्रभावी शिक्षण योजना (Lesson Plan) की रूपरेखा तैयार कीजिए।

## इकाई -04

# पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन एवं कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धान्त

### 4.1 प्रस्तावना

### 2.2 उद्देश्य

### 4.3. अधिगम के प्रमुख सिद्धांत का परिचय

#### 4.3.1 पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धांत

#### 4.3.2 गेस्टाल्ट का सिद्धांत

### 4.4 सारांश

### 4.5 शब्दावली

### 4.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 4.7 सहायक पाठ्य सामग्री

### 4.8 सन्दर्भ

### 4.9 अभ्यास

### 4.1 प्रस्तावना

अधिगम (Learning) मानव व्यवहार में होने वाला ऐसा अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है, जो अनुभव, अभ्यास एवं वातावरण के साथ अन्तःक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं, जिनमें इवान पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त (Classical Conditioning Theory) तथा वोल्फगैंग कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धान्त (Gestalt Theory of Learning) विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। ये दोनों सिद्धान्त अधिगम की प्रकृति, प्रक्रिया तथा व्यवहार परिवर्तन को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट करते हैं।

पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त यह प्रतिपादित करता है कि अधिगम उद्दीपक (Stimulus) और अनुक्रिया (Response) के मध्य स्थापित सम्बन्ध के माध्यम से होता है। इसके विपरीत, कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धान्त यह मानता है कि अधिगम केवल यांत्रिक प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है, बल्कि व्यक्ति समस्या की सम्पूर्ण स्थिति को समझकर अन्तर्दृष्टि (Insight) के माध्यम से समाधान प्राप्त करता है। इस प्रकार, एक सिद्धान्त व्यवहारवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जबकि दूसरा संज्ञानात्मक एवं बौद्धिक प्रक्रिया को प्रमुखता देता है।

इस अध्याय में इन दोनों प्रमुख अधिगम सिद्धान्तों की अवधारणा, प्रयोग, सिद्धान्तगत आधार, विशेषताएँ, शैक्षिक उपयोगिता, सीमाएँ तथा आधुनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उनकी प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। शिक्षा का मूल उद्देश्य शिक्षार्थी के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना है, और यह परिवर्तन अधिगम (Learning) के माध्यम से ही संभव होता है। अधिगम एक सतत, उद्देश्यपूर्ण तथा अनुभव-आधारित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने परिवेश के

साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए नए ज्ञान, कौशल एवं व्यवहार अर्जित करता है। अधिगम की इस प्रक्रिया को वैज्ञानिक रूप से समझाने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है, जिन्होंने शिक्षा एवं शिक्षण की दिशा को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

"अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त (पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन एवं कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धान्त)" पर आधारित है। इसमें पैव्लोव के शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त के माध्यम से उद्दीपक एवं अनुक्रिया के संबंध तथा व्यवहार निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। साथ ही, कोहलर के गेस्टाल्ट सिद्धान्त के माध्यम से अन्तर्दृष्टि, समस्या-समाधान एवं संपूर्ण परिस्थिति को समझकर सीखने की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है।

---

## 4.2 उद्देश्य -

---

- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित होंगे।
- पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन के सिद्धान्त को स्पष्ट समझेंगे।
- कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धान्त को समझ पाएंगे।

---

## 4.3 पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन

---

**4.3.1 अधिगम के प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय** -अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त वे वैज्ञानिक सिद्धान्त हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्ति किस प्रकार सीखता है तथा उसके व्यवहार में परिवर्तन कैसे होता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम की प्रक्रिया को समझाने के लिए अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। इनमें इवान पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त, एडवर्ड ली थार्नडाइक का प्रयत्न एवं त्रुटि सिद्धान्त, बी. एफ. स्किनर का क्रियात्मक अनुबन्धन सिद्धान्त, वॉल्फगैंग कोहलर का गेस्टाल्ट (अन्तर्दृष्टि) सिद्धान्त तथा अल्बर्ट बंदूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त प्रमुख हैं। ये सिद्धान्त अधिगम की विभिन्न प्रक्रियाओं, जैसे उद्दीपक-अनुक्रिया संबंध, अभ्यास, पुनर्बलन, अन्तर्दृष्टि, अनुकरण तथा सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से सीखने की व्याख्या करते हैं। आधुनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन सिद्धान्तों का विशेष महत्व है, क्योंकि इनके आधार पर प्रभावी शिक्षण विधियों, अधिगम वातावरण तथा विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण रणनीतियों का विकास किया जाता है।

### पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त (Classical Conditioning Theory): विश्लेषण

#### परिचय

इवान पेट्रोविच पैव्लोव (Ivan Petrovich Pavlov) रूस के प्रसिद्ध शरीर-विज्ञानी एवं मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने अपने प्रयोगों के आधार पर शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। यह सिद्धान्त व्यवहारवादी अधिगम सिद्धान्तों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पैव्लोव ने यह स्पष्ट किया कि अधिगम किसी व्यवहार को अनुभव, पुनरावृत्ति और उद्दीपकों के मध्य संबंध स्थापित होने के परिणामस्वरूप प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

## सिद्धान्त की अवधारणा

पैव्लोव के अनुसार अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक तटस्थ उद्दीपक (Neutral Stimulus) किसी प्राकृतिक उद्दीपक (Natural Stimulus) के साथ बार-बार जुड़कर एक निश्चित प्रतिक्रिया उत्पन्न करने लगता है। अर्थात् जब दो उद्दीपकों के बीच संबंध स्थापित हो जाता है, तो व्यक्ति या जीव नए व्यवहार को सीखता है। इस प्रक्रिया को अनुबन्धन (Conditioning) कहा जाता है।

### पैव्लोव का प्रयोग

पैव्लोव ने कुत्तों पर प्रयोग करके शास्त्रीय अनुबन्धन की प्रक्रिया को समझाया। उन्होंने देखा कि भोजन को देखकर कुत्ते के मुँह में स्वतः लार आने लगती है। भोजन एक प्राकृतिक उद्दीपक था और लार आना प्राकृतिक अनुक्रिया थी। इसके बाद उन्होंने भोजन देने से पहले घंटी बजानी शुरू की। कुछ समय बाद केवल घंटी की ध्वनि सुनकर ही कुत्ते के मुँह में लार आने लगी। इस प्रयोग से सिद्ध हुआ कि व्यवहार को उद्दीपकों के बीच संबंध स्थापित करके सीखा जा सकता है।

### शास्त्रीय अनुबन्धन के प्रमुख तत्त्व

#### + अशर्त उद्दीपक (Unconditioned Stimulus):

वह उद्दीपक जो बिना किसी प्रशिक्षण के स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। जैसे— भोजन।

#### + अशर्त अनुक्रिया (Unconditioned Response):

अशर्त उद्दीपक के कारण उत्पन्न होने वाली प्राकृतिक प्रतिक्रिया। जैसे— भोजन देखकर लार आना।

#### + तटस्थ उद्दीपक (Neutral Stimulus):

वह उद्दीपक जो प्रारंभ में कोई विशेष प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करता। जैसे— घंटी की ध्वनि।

#### + अनुबन्धित उद्दीपक (Conditioned Stimulus):

वह तटस्थ उद्दीपक जो प्रशिक्षण के बाद प्रतिक्रिया उत्पन्न करने में सक्षम हो जाता है। जैसे— घंटी की ध्वनि।

#### + अनुबन्धित अनुक्रिया (Conditioned Response):

अनुबन्धित उद्दीपक के कारण उत्पन्न होने वाली सीखी हुई प्रतिक्रिया।

#### + अधिगम की विशेषताएँ

- अधिगम उद्दीपक एवं अनुक्रिया के बीच संबंध स्थापित होने से होता है।
- सीखना अनुभव एवं पुनरावृत्ति पर आधारित होता है।
- व्यवहार में परिवर्तन वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होता है।
- यह सरल व्यवहारों और आदतों के निर्माण को समझाने में सहायक है।

### + शैक्षिक महत्व

- विद्यार्थियों में अच्छी आदतों एवं सकारात्मक व्यवहार के विकास में सहायक।
- कक्षा में अनुकूल वातावरण निर्माण के लिए उपयोगी।
- अभ्यास एवं पुनरावृत्ति द्वारा सीखने को प्रभावी बनाया जा सकता है।
- शिक्षक उचित उद्दीपकों और प्रोत्साहन के माध्यम से विद्यार्थियों की रुचि एवं अभिप्रेरणा बढ़ा सकते हैं।
- अनुशासन, अध्ययन-अभ्यास एवं व्यवहार परिवर्तन में इस सिद्धान्त का प्रयोग किया जा सकता है।

### + सीमाएँ

- यह सिद्धान्त मुख्य रूप से सरल एवं अनैच्छिक व्यवहारों की व्याख्या करता है।
- इसमें चिंतन, तर्क, रचनात्मकता एवं समस्या-समाधान जैसी मानसिक प्रक्रियाओं को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया है।
- मानव अधिगम के सभी जटिल रूपों को केवल उद्दीपक-अनुक्रिया संबंध से स्पष्ट नहीं किया जा सकता।

### निष्कर्ष

पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त अधिगम मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, जिसने व्यवहार परिवर्तन को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। यह सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि व्यक्ति अपने वातावरण के साथ अंतःक्रिया करके नए व्यवहार सीखता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह सिद्धान्त आदत निर्माण, व्यवहार संशोधन तथा प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को समझने में आज भी उपयोगी है।

### 4.3.2 गेस्टाल्ट (अंतर्दृष्टि) अधिगम सिद्धान्त

#### परिचय

गेस्टाल्ट (Gestalt) अधिगम सिद्धान्त आधुनिक संज्ञानात्मक (Cognitive) अधिगम सिद्धान्तों में एक प्रमुख सिद्धान्त है। 'गेस्टाल्ट' जर्मन भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ "समग्र रूप" (Whole or Organized Whole) है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मैक्स वर्त्हाइमर (Max Wertheimer), वोल्फगैंग कोहलर (Wolfgang Köhler) तथा कुर्ट कॉफ्का (Kurt Koffka) ने किया। इनमें वोल्फगैंग कोहलर ने चिंपैंजियों पर किए गए प्रयोगों के माध्यम से अंतर्दृष्टि (Insight Learning) की अवधारणा को स्पष्ट किया।

इस सिद्धान्त के अनुसार अधिगम केवल प्रयत्न एवं त्रुटि (Trial and Error) का परिणाम नहीं है, बल्कि समस्या की संपूर्ण स्थिति को समझने और उसके विभिन्न भागों के बीच संबंध स्थापित करने से अचानक समाधान प्राप्त होता है, जिसे अंतर्दृष्टि (Insight) कहा जाता है। यह सिद्धान्त समझ, तर्क, विश्लेषण, रचनात्मकता तथा समस्या-समाधान को अधिगम का आधार मानता है।

#### गेस्टाल्ट सिद्धान्त के प्रमुख सिद्धान्त (मुख्य विशेषताएँ)

- अधिगम समग्र (Whole) रूप में होता है।

- अंतर्दृष्टि (Insight) अधिगम का प्रमुख आधार है।
- समस्या की संरचना को समझना आवश्यक है।
- मानसिक प्रक्रियाओं (चिंतन, तर्क, विश्लेषण) को महत्व दिया जाता है।
- रटने की अपेक्षा समझ-आधारित अधिगम को प्राथमिकता दी जाती है।
- अधिगम अर्थपूर्ण एवं स्थायी होता है।
- पूर्व अनुभव नए अधिगम में सहायक होते हैं।

### गेस्टाल्ट सिद्धान्त के लाभ (Advantages)

- समझ-आधारित अधिगम – यह रटने के स्थान पर वास्तविक समझ विकसित करता है।
- समस्या-समाधान क्षमता का विकास – विद्यार्थियों में तार्किक एवं विश्लेषणात्मक सोच विकसित होती है।
- स्थायी अधिगम – अंतर्दृष्टि से प्राप्त ज्ञान अधिक समय तक स्मरण रहता है।
- रचनात्मकता को प्रोत्साहन – नवीन विचार एवं सृजनात्मक सोच का विकास होता है।
- सक्रिय अधिगम – शिक्षार्थी स्वयं समाधान खोजने का प्रयास करता है।
- जीवनोपयोगी शिक्षा – वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान में सहायक है।
- उच्च स्तरीय चिंतन का विकास – आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है।

### गेस्टाल्ट सिद्धान्त की सीमाएँ / हानियाँ (Limitations)

- सभी प्रकार के अधिगम पर लागू नहीं – सरल या यांत्रिक कौशलों के अधिगम में इसकी उपयोगिता सीमित है।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं की उपेक्षा – सभी विद्यार्थियों में अंतर्दृष्टि समान रूप से विकसित नहीं होती।
- अंतर्दृष्टि का मापन कठिन – इसे प्रत्यक्ष रूप से मापना या मूल्यांकन करना सरल नहीं है।
- अधिक समय की आवश्यकता – समस्या को समझने एवं समाधान खोजने में समय लग सकता है।
- जटिल विषयों में कठिनाई – प्रत्येक समस्या का समाधान केवल अंतर्दृष्टि से संभव नहीं होता।
- अभ्यास के महत्व को कम आँकता है – निरंतर अभ्यास की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व देता है।

### + शैक्षिक महत्व

- समस्या-समाधान आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित करता है।
- खोज एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण (Discovery Learning) को बढ़ावा देता है।
- विद्यार्थियों में तार्किक, विश्लेषणात्मक एवं रचनात्मक चिंतन विकसित करता है।
- शिक्षक को विषयवस्तु को समग्र एवं अर्थपूर्ण रूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा देता है।
- गणित, विज्ञान तथा अन्य विश्लेषणात्मक विषयों के शिक्षण में विशेष रूप से उपयोगी है।

### निष्कर्ष

गेस्टाल्ट अधिगम सिद्धान्त अधिगम को समझ, अंतर्दृष्टि और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित मानता है। यह विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, तार्किक चिंतन तथा रचनात्मकता का विकास करता है। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी आधुनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इसका अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है और यह आज भी प्रभावी शिक्षण की आधारशिला माना जाता है।

### जाँच करें अपनी प्रगति

1. शास्त्रीय अनुबन्धन (Classical Conditioning) सिद्धान्त क्या है?
2. पैव्लोव के शास्त्रीय अनुबन्धन प्रयोग का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. कोहलर के गेस्टाल्ट सिद्धान्त में 'सूझ (Insight)' से क्या अभिप्राय है?
4. शास्त्रीय अनुबन्धन एवं गेस्टाल्ट सिद्धान्त में एक प्रमुख अंतर लिखिए।

---

## 4.4 सारांश

---

अधिगम के प्रमुख सिद्धान्तों में इवान पैव्लोव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त तथा वोल्फगैंग कोहलर का गेस्टाल्ट (अंतर्दृष्टि) सिद्धान्त शिक्षा-मनोविज्ञान के महत्वपूर्ण आधार हैं। पैव्लोव का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि अधिगम उद्दीपक (Stimulus) और अनुक्रिया (Response) के बीच स्थापित संबंध का परिणाम है। इस सिद्धान्त के अनुसार उचित उद्दीपकों के बार-बार संयोजन से वांछित व्यवहार का निर्माण एवं संशोधन किया जा सकता है। दूसरी ओर, कोहलर का गेस्टाल्ट सिद्धान्त अधिगम को केवल प्रयास एवं त्रुटि का परिणाम नहीं मानता, बल्कि समस्या की संपूर्ण स्थिति को समझकर अंतर्दृष्टि (Insight) के माध्यम से समाधान प्राप्त करने की प्रक्रिया मानता है। यह सिद्धान्त समझ, तर्क, विश्लेषण, रचनात्मक चिंतन तथा समस्या-समाधान क्षमता के विकास पर विशेष बल देता है।

दोनों सिद्धान्त आधुनिक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अत्यंत उपयोगी हैं। जहाँ शास्त्रीय अनुबन्धन व्यवहार निर्माण एवं आदतों के विकास में सहायक है, वहीं गेस्टाल्ट सिद्धान्त अर्थपूर्ण अधिगम, उच्च स्तरीय चिंतन और रचनात्मक समस्या-समाधान को प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार, ये दोनों सिद्धान्त शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ अपनाने तथा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल और सकारात्मक व्यवहार के विकास हेतु सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार प्रदान करते हैं।

---

## 4.5 शब्दावली (अर्थ सहित)

---

### 1. अनुबन्धन (कंडीशनिंग)

अर्थ: उद्दीपक और अनुक्रिया के बीच संबंध स्थापित होने की प्रक्रिया, जिसके परिणामस्वरूप नया व्यवहार सीखा जाता है।

### 2. उद्दीपक (Stimulus)

अर्थ: कोई भी बाहरी या आंतरिक संकेत अथवा घटना, जो किसी प्रतिक्रिया को उत्पन्न करे।

### 3. अनुक्रिया (Response)

अर्थ: उद्दीपक के प्रति व्यक्ति या जीव द्वारा प्रदर्शित व्यवहार या प्रतिक्रिया।

#### 4. अंतर्दृष्टि (Insight)

अर्थ: समस्या की संपूर्ण स्थिति को समझकर अचानक समाधान प्राप्त करने की मानसिक प्रक्रिया।

#### 5. गेस्टाल्ट (Gestalt)

अर्थ: जर्मन शब्द, जिसका अर्थ "समग्र रूप" या "पूर्ण संरचना" है; अर्थात् किसी वस्तु या समस्या को संपूर्ण रूप में समझना।

### 4.6 अपनी प्रगति जांचें - संभावित उत्तर

1 उत्तर: शास्त्रीय अनुबन्धन इवान पैव्लोव द्वारा प्रतिपादित अधिगम सिद्धान्त है। इसके अनुसार, किसी तटस्थ उद्दीपक को स्वाभाविक उद्दीपक के साथ बार-बार प्रस्तुत करने पर वह स्वयं भी समान प्रतिक्रिया उत्पन्न करने लगता है। यह अधिगम उद्दीपक-प्रतिक्रिया (Stimulus-Response) के संबंध पर आधारित है।

2 उत्तर: पैव्लोव ने कुत्ते पर प्रयोग किया। प्रारम्भ में भोजन देने पर कुत्ते के मुँह में लार आती थी। बाद में भोजन देने से पहले घंटी बजाई गई। कई बार ऐसा दोहराने पर केवल घंटी की आवाज़ सुनकर भी कुत्ते के मुँह में लार आने लगी। इससे सिद्ध हुआ कि अधिगम अनुबन्धन के माध्यम से संभव है।

3 उत्तर: सूझ का अर्थ है समस्या के विभिन्न पक्षों को एक साथ समझकर अचानक उसके समाधान तक पहुँचना। कोहलर के अनुसार अधिगम केवल प्रयास एवं त्रुटि से नहीं, बल्कि परिस्थिति की समग्र समझ से भी होता है।

4 उत्तर: शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त में अधिगम उद्दीपक और प्रतिक्रिया के बीच संबंध स्थापित होने से होता है, जबकि गेस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुसार अधिगम समस्या की समग्र समझ तथा सूझ (Insight) के माध्यम से होता है।

### 4.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन; सामग्री

- SWAYAM - अधिगम एवं शैक्षिक मनोविज्ञान से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम।
- e-PG Pathshala - शैक्षिक मनोविज्ञान एवं अधिगम सिद्धान्तों पर ई-सामग्री।
- DIKSHA Portal - शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए डिजिटल शिक्षण संसाधन।
- NROER (National Repository of Open Educational Resources) - अधिगम सिद्धान्तों पर मुक्त अध्ययन सामग्री।
- NCERT e-Resources - शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षक शिक्षा से संबंधित अध्ययन सामग्री।

### 4.8 सन्दर्भ

- Mangal, S. K. (2019). Advanced Educational Psychology (2nd ed.). PHI Learning.

- Woolfolk, A. (2021). Educational Psychology (14th ed.). Pearson.  
Zetech University Library +1
- Schunk, D. H. (2020). Learning Theories: An Educational Perspective (8th ed.). Pearson.

#### NCERT

- Sharma, R. A. (2017). Shiksha Manovigyan (Educational Psychology). R. Lall Book Depot.
- Hilgard, E. R., & Bower, G. H. (1975). Theories of Learning (4th ed.). Prentice-Hall.

<https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/77752>

<https://rcbhopal.nios.ac.in/psychology-222.html>

---

## 4.9 अभ्यास

---

1. निम्न में से शास्त्रीय अनुबन्धन (Classical Conditioning) सिद्धान्त के प्रवर्तक कौन हैं?

- (A) एडवर्ड ली थॉर्नडाइक
- (B) इवान पैव्लोव
- (C) जीन पियाजे
- (D) बी.एफ. स्किनर

उत्तर: (B) इवान पैव्लोव

2. कोहलर के गेस्टाल्ट सिद्धान्त में अधिगम का मुख्य आधार क्या है?

- (A) अभ्यास एवं पुनरावृत्ति
- (B) पुरस्कार एवं दण्ड
- (C) सूझ (Insight) द्वारा समस्या का समाधान
- (D) अनुकरण

उत्तर: (C) सूझ (Insight) द्वारा समस्या का समाधान

3. पैव्लोव के प्रयोग में कुत्ते के लिए घंटी की आवाज़ किस प्रकार की उद्दीपक (Stimulus) बन गई थी?

- (A) स्वाभाविक उद्दीपक

(B) तटस्थ उद्दीपक

(C) अनुबन्धित (Conditioned) उद्दीपक

(D) अननुबन्धित उद्दीपक

उत्तर: (C) अनुबन्धित (Conditioned) उद्दीपक

4. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गेस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुरूप है?

(A) अधिगम केवल प्रयास एवं त्रुटि से होता है।

(B) अधिगम सम्पूर्ण परिस्थिति को समझकर होता है।

(C) अधिगम केवल पुरस्कार से होता है।

(D) अधिगम केवल अनुकरण से होता है।

उत्तर: (B) अधिगम सम्पूर्ण परिस्थिति को समझकर होता है।

**(क) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions) - 5**

- शास्त्रीय अनुबन्धन (Classical Conditioning) सिद्धान्त से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में लिखिए।
- इवान पेवलोव के शास्त्रीय अनुबन्धन प्रयोग का रूपाकार वर्णन।
- गेस्टाल्ट सिद्धान्त में 'सूझ (Insight)' की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
- शास्त्रीय अनुबन्धन एवं गेस्टाल्ट सिद्धान्त में दो प्रमुख अंतर लिखिए।
- पैव्लोव तथा कोहलर के अधिगम सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व संक्षेप में बताइए।

**(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)**

- शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धान्त के गुण, सीमाएँ तथा शिक्षण में इसकी उपयोगिता का विश्लेषण कीजिए।
- कोहलर के गेस्टाल्ट अधिगम सिद्धान्त का विस्तृत परिचय एवं मूल अवधारणाओं का वर्णन कीजिए।

## खण्ड - 2

## इकाई -5

### पियाजे का संज्ञानात्मक सिद्धान्त

---

#### 5.1 प्रस्तावना

#### 5.2 उद्देश्य

#### 5.3. पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का परिचय

##### 5.3.1 संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा

##### 5.3.2 सिद्धान्त के मूल तत्त्व

##### 5.3.3 संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

##### 5.3.4 सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएं

##### 5.3.5 सिद्धांत की सीमाएँ

#### 5.4 सारांश

#### 5.5 शब्दावली

#### 5.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 5.7 सहायक पाठ्य सामग्री

#### 5.8 सन्दर्भ

#### 5.9 अभ्यास

#### 5.1 प्रस्तावना

स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे (Jean Piaget) ने संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जो यह स्पष्ट करता है कि बालक का बौद्धिक विकास क्रमिक, सक्रिय एवं संरचित प्रक्रिया के माध्यम से होता है। पियाजे के अनुसार बालक केवल बाहरी ज्ञान का निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं होता, बल्कि वह अपने अनुभवों, क्रियाओं तथा वातावरण के साथ निरंतर अंतःक्रिया करके स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। इस प्रक्रिया में बालक नई सूचनाओं को अपनी पूर्व ज्ञान-संरचनाओं (Schemas) से जोड़ता है, उनमें आवश्यक परिवर्तन करता है तथा संतुलन (Equilibration) स्थापित करते हुए उच्चतर स्तर की सोच विकसित करता है।

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार क्रमिक अवस्थाओं—संवेदी-गत्यात्मक, पूर्व-संक्रियात्मक, ठोस संक्रियात्मक तथा औपचारिक संक्रियात्मक—में विभाजित किया है। प्रत्येक अवस्था में बालक की सोच, तर्क, समस्या-समाधान तथा निर्णय लेने की क्षमता में गुणात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। यह सिद्धान्त बालक-केंद्रित शिक्षा, सक्रिय अधिगम तथा विकासानुकूल शिक्षण की अवधारणा का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है और आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान में अत्यंत प्रभावशाली स्थान रखता है।

#### 5.2 उद्देश्य-

- पियाजे का संज्ञानात्मक की अवधारणा को स्पष्ट करना ।
- सिद्धान्त के मूल तत्त्व से अवगत करना।

- संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक को स्पष्ट करना ।
- शिक्षण-अधिगम में सिद्धान्त का अनुप्रयोग को समझना ।
- सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएं को स्पष्ट करना।
- सिद्धान्त की सीमाओं से अवगत कराना।
- सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा करना ।
- आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता को स्पष्ट करना।

---

### 5.3 पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का परिचय –

---

बालक का संज्ञानात्मक विकास उसकी सोच, तर्क, समस्या-समाधान तथा ज्ञान निर्माण की क्षमता का आधार है। जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि बालक अपने अनुभवों एवं वातावरण के साथ सक्रिय अंतःक्रिया करते हुए क्रमिक रूप से ज्ञान का निर्माण करता है। इस अध्याय में पियाजे के जीवन परिचय, संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा, प्रमुख अवस्थाओं, मूल सिद्धान्तों तथा उनके शैक्षिक निहितार्थों का संक्षिप्त एवं व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिससे शिक्षार्थी बालकों के बौद्धिक विकास की प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टि से समझ सकें।

**5.3.1 संज्ञानात्मक विकास की अवधारणा-** संज्ञानात्मक विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक की सोच, तर्क, स्मृति, भाषा तथा समस्या-समाधान की क्षमताओं का क्रमिक विकास होता है। यह विकास अनुभव, परिपक्वता तथा वातावरण के साथ सक्रिय अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप होता है। इसके द्वारा बालक ज्ञान का निर्माण करता है और बदलती परिस्थितियों के अनुसार प्रभावी निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है।

#### 5.3.2 सिद्धान्त के मूल तत्त्व -पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के मूल तत्त्व (Core Elements)

- A . स्कीमा (Schema / मानसिक संरचना)**
- B. अनुकूलन (Adaptation)**
- C . आत्मसातीकरण (Assimilation)**
- D. समायोजन (Accommodation)**

- E.** संतुलन (Equilibration)
- F.** परिपक्वता (Maturation)
- G.** सक्रिय ज्ञान-निर्माण (Active Construction of Knowledge)
- H.** विकास की क्रमिक अवस्थाएँ (Stages of Cognitive Development)

### **5.3.3 संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक**

- A.** वंशानुक्रम (Heredity)
- B.** परिपक्वता (Maturation)
- C.** पर्यावरण (Environment)
- D.** अधिगम एवं अनुभव (Learning and Experience)
- E.** भाषा का विकास (Language Development)
- F.** सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश (Social and Cultural Environment)
- G.** परिवार एवं पालन-पोषण (Family and Parenting)
- H.** विद्यालय एवं शिक्षण पद्धति (स्कूल एवं शिक्षण विधियाँ)
- I.** पोषण एवं स्वास्थ्य (Nutrition and Health)
- J.** प्रेरणा एवं रुचि (Motivation and Interest)

ये प्रमुख कारक बालक के संज्ञानात्मक विकास की गति, गुणवत्ता तथा प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

### **5.3.4 सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएं - पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ**

- I.** बालक-केंद्रित सिद्धान्त
- II.** संज्ञानात्मक विकास पर बल
- III.** विकास की क्रमिक अवस्थाएँ
- IV.** सक्रिय अधिगम
- V.** ज्ञान का निर्माण
- VI.** अनुकूलन की प्रक्रिया
- VII.** संतुलन (Equilibration) का सिद्धान्त

**VIII. परिपक्वता का महत्व****IX. व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान****X. शिक्षा में उपयोगिता****5.3.5 सिद्धान्त की सीमाएं -**

पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त की सीमाएँ

- I. विकास की अवस्थाओं को अत्यधिक कठोर एवं सार्वभौमिक माना गया है।
- II. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है।
- III. भाषा एवं सामाजिक अंतःक्रिया के प्रभाव का पर्याप्त वर्णन नहीं किया गया है।
- IV. व्यक्तिगत भिन्नताओं का समुचित स्पष्टीकरण नहीं मिलता।
- V. कुछ बच्चों में संज्ञानात्मक क्षमता पियाजे द्वारा बताए गए आयु-स्तर से पहले विकसित हो सकती हैं।
- VI. यह सिद्धान्त मुख्यतः बाल्यावस्था तक सीमित है तथा वयस्क संज्ञानात्मक विकास का पर्याप्त वर्णन नहीं करता।
- VII. अनुसंधान के लिए छोटे एवं सीमित नमूनों (Simple) का उपयोग किया गया था।
- VIII. अधिगम में प्रशिक्षण, शिक्षा एवं प्रत्यक्ष निर्देशन की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है।
- IX. सभी संस्कृतियों एवं परिस्थितियों पर यह सिद्धान्त समान रूप से लागू नहीं होता।
- X. कुछ अवधारणाओं का व्यावहारिक परीक्षण एवं मापन कठिन माना जाता है।

सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

**पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त**

शिक्षा-मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली सिद्धान्त है, जिसमें बालक को ज्ञान का सक्रिय निर्माता मानते हुए विकास की क्रमिक प्रक्रिया को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। इस सिद्धान्त ने बालक-केंद्रित शिक्षण, सक्रिय अधिगम तथा विकास अनुकूल शिक्षण पद्धति को प्रोत्साहित किया। तथापि, इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। पियाजे ने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, भाषा तथा शिक्षक के मार्गदर्शन की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया तथा विकास की अवस्थाओं को सभी बच्चों के लिए समान माना, जबकि आधुनिक शोध व्यक्तिगत एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। फिर भी, बालकों के संज्ञानात्मक विकास को समझने और प्रभावी शिक्षण की योजना बनाने में यह सिद्धान्त आज भी अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक माना जाता है।

**आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता**

### आधुनिक शिक्षा में पियाजे के सिद्धांत की प्रासंगिकता

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत आधुनिक शिक्षा में अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह बालक-केंद्रित, गतिविधि-आधारित एवं अनुभवात्मक अधिगम पर बल देता है। यह सिद्धांत विद्यार्थियों की आयु, रुचि एवं संज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप शिक्षण की आवश्यकता को स्पष्ट करता है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में भी यह सिद्धांत आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान, रचनात्मकता तथा सक्रिय ज्ञान-निर्माण को बढ़ावा देकर प्रभावी शिक्षण-अधिगम का आधार प्रदान करता है।

### जाँच करें अपनी प्रगति

1. प्रश्न: जीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास क्या है?
2. प्रश्न: पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की कितनी अवस्थाएं बताई हैं? उनके नाम लिखिए।
3. प्रश्न: पियाजे के सिद्धांत में 'अनुकूलन (Adaptation)' से क्या अभिप्राय है?
4. प्रश्न: पियाजे के सिद्धान्त का शिक्षा में क्या महत्व है?

### निष्कर्ष

पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त बालकों के बौद्धिक विकास को समझने का एक वैज्ञानिक एवं प्रभावशाली आधार प्रदान करता है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि बालक अनुभवों एवं वातावरण के साथ सक्रिय अंतःक्रिया द्वारा स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी बालक-केंद्रित शिक्षण, सक्रिय अधिगम तथा विकास अनुकूल शिक्षा के लिए इसकी उपयोगिता आज भी व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है।

---

### 5.4 सारांश -

---

जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त इस विचार पर आधारित है कि बालक ज्ञान का निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं, बल्कि अपने अनुभवों और परिवेश के साथ सक्रिय अंतःक्रिया द्वारा स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास क्रमिक एवं सार्वभौमिक होता है, जो चार चरणों—संवेदी-गत्यात्मक, पूर्व-संक्रियात्मक, ठोस संक्रियात्मक तथा औपचारिक संक्रियात्मक—में संपन्न होता है। प्रत्येक चरण में बालक की सोचने, तर्क करने और समस्या-समाधान करने की क्षमता क्रमशः विकसित होती है।

यह सिद्धांत शिक्षा में बालक-केंद्रित, गतिविधि-आधारित तथा अनुभवात्मक अधिगम पर बल देता है। शिक्षक की भूमिका ज्ञान देने वाले की अपेक्षा मार्गदर्शन एवं सहयोग की होती है। समग्र रूप से, पियाजे का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया बालक की आयु, मानसिक परिपक्वता तथा संज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप हो। यही कारण है कि यह सिद्धान्त आधुनिक शिक्षा एवं मनोविज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से स्वीकार्य है।

---

### 5.5 शब्दावली -

---

संज्ञान (Cognition): ज्ञान प्राप्त करने, समझने, सोचने, स्मरण करने तथा समस्या का समाधान करने की मानसिक प्रक्रिया।

आत्मीकरण (Assimilation): नई जानकारी या अनुभव को पहले से उपलब्ध मानसिक संरचनाओं (स्कीमा) में समाहित करने की प्रक्रिया।

समायोजन (Accommodation): नए अनुभवों के अनुरूप अपनी मानसिक संरचनाओं (स्कीमा) में परिवर्तन या संशोधन करने की प्रक्रिया।

स्कीमा (Schema): किसी वस्तु, घटना या अनुभव के बारे में व्यक्ति के मस्तिष्क में विकसित ज्ञान या मानसिक ढाँचा।

संतुलन (Equilibration): आत्मीकरण और समायोजन के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया, जो संज्ञानात्मक विकास को आगे बढ़ाती है।

## 5.6 अपनी प्रगति जांचे - संभावित उत्तर

1. उत्तर: संज्ञानात्मक विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक अनुभव, वातावरण और सक्रिय क्रियाओं द्वारा सोचने, समझने, तर्क करने तथा समस्या-समाधान की क्षमता का विकास करता है।

2. उत्तर: पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएं बताई हैं—

- संवेदी-गत्यात्मक अवस्था (Sensorimotor Stage)
- पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)
- ठोस संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage)
- औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)

3. उत्तर: अनुकूलन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक नई परिस्थितियों और अनुभवों के अनुसार अपने ज्ञान एवं व्यवहार में परिवर्तन करता है। इसमें आत्मसातीकरण (Assimilation) और समायोजन (Accommodation) दोनों शामिल होते हैं।

4. उत्तर: यह सिद्धांत बताता है कि शिक्षण बालकों की आयु, मानसिक परिपक्वता और विकासात्मक अवस्था के अनुरूप होना चाहिए। इससे सक्रिय अधिगम, अनुभवात्मक शिक्षण तथा बालक-केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा मिलता है।

## 5.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन सामग्री

NCERT ई-पाठशाला (ePathshala)

शिक्षाशास्त्र एवं बाल विकास से संबंधित ई-पुस्तकें और अध्ययन सामग्री।

<https://epathshala.nic.in>

DIKSHA Portal

शिक्षक शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान तथा बाल विकास पर डिजिटल पाठ्य सामग्री, वीडियो एवं ई-संसाधन:

<https://diksha.gov.in>

SWAYAM

भारत सरकार का ऑनलाइन शिक्षण मंच, जहाँ शिक्षा एवं मनोविज्ञान विषयक निःशुल्क पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

<https://swayam.gov.in>

eGyanKosh (IGNOU)

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं अधिगम सिद्धान्तों पर अध्ययन सामग्री।

<https://egyankosh.ac.in>

NROER (National Repository of Open Educational Resources)

विद्यालय एवं शिक्षक शिक्षा से संबंधित मुक्त शैक्षिक संसाधनों का भंडार।

<https://nroer.gov.in>

UNESCO – Open Educational Resources (OER)

मुक्त शैक्षिक संसाधनों की अवधारणा एवं वैश्विक पहल से संबंधित सामग्री।

<https://www.unesco.org/en/open-educational-resources>

---

## 5.8 संदर्भ

---

- पियाजे, जे. (1952). बालकों में बुद्धि की उत्पत्ति (The Origin of Intelligence in Children). इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- . पियाजे, जे. (1954) बालक में यथार्थ का निर्माण (The Construction of Reality in the Child). पुस्तकें।
- पियाजे, जे. (1972). बाल मनोविज्ञान (The Psychology of the Child). बेसिक बुक्स।
- वूलफोक, ए. (2022). शैक्षिक मनोविज्ञान (15 वाँ संस्करण). पियर्सन।
- सैट्रॉक, जे. डब्ल्यू. (2021). शैक्षिक मनोविज्ञान (7वाँ संस्करण). मैकग्रा-हिल एजुकेशन।

---

## 5.9 अभ्यास

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions) – 4

(प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्प एवं संभावित उत्तर सहित)

1. जीन पियाजे किस सिद्धान्त के प्रवर्तक हैं?

(अ) व्यवहारवादी सिद्धांत

(ब) संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त

(स) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त

(द) नैतिक विकास सिद्धान्त

उत्तर : (ब) संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त

2. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की कितनी अवस्थाएं हैं?

(अ) दो

(ब) तीन

(स) चार

(द) पाँच

उत्तर: (स) चार

3. 'आत्मसातीकरण (Assimilation)' किससे संबंधित है?

(अ) नई जानकारी को पूर्व ज्ञान में समाहित करना

(ब) स्मरण शक्ति बढ़ाना

(स) भाषा का विकास करना

(द) अनुकरण करना

उत्तर: (अ) नई जानकारी को पूर्व ज्ञान में समाहित करना

4. पियाजे के अनुसार औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था किस आयु से प्रारम्भ होती है?

(अ) 2 वर्ष

(ब) 7 वर्ष

(स) 11 वर्ष

(द) 18 वर्ष

उत्तर: (स) 11 वर्ष

### **(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न - 4**

1. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त से क्या अभिप्राय है?

संभावित उत्तर: यह सिद्धांत बताता है कि बालक का बौद्धिक विकास क्रमिक अवस्थाओं में होता है तथा वह अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है।

2. आत्मसातीकरण (Assimilation) और समायोजन (Accommodation) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

संभावित उत्तर: आत्मसातीकरण में नई जानकारी को पूर्व ज्ञान के अनुरूप ग्रहण किया जाता है, जबकि समायोजन में नई जानकारी के अनुसार पूर्व ज्ञान में परिवर्तन किया जाता है।

3. ठोस संक्रियात्मक अवस्था की दो विशेषताएँ लिखिए।

संभावित उत्तर:

(i) तार्किक चिंतन का विकास होता है।

(ii) संरक्षण (Conservation) एवं वर्गीकरण की क्षमता विकसित होती है।

4. शिक्षा में पियाजे के सिद्धान्त का कोई दो महत्व लिखिए।

संभावित उत्तर:

(i) बाल-केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देता है।

(ii) आयु एवं विकास स्तर के अनुरूप शिक्षण की आवश्यकता पर बल देता है।

### **(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – 2**

1. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत का विस्तार से वर्णन करते हुए इसकी प्रमुख अवस्थाओं एवं शैक्षिक निहितार्थों की व्याख्या कीजिए।

2. जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

## इकाई - 6

### कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त

---

#### 6.1 प्रस्तावना

#### 6.2 उद्देश्य

#### 6.3 कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त

##### 6.3.1 कोहलबर्ग का परिचय

##### 6.3.2 सिद्धान्त का आधार एवं पृष्ठभूमि

##### 6.3.3 नैतिक विकास के अवधारणाएँ

##### 6.3.4 नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

##### 6.3.5 सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

#### 6.4 सारांश

#### 6.5 शब्दावली

#### 6.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 6.7 सहायक पाठ्य सामग्री

#### 6.8 सन्दर्भ

#### 6.9 अभ्यास

---

#### 6.1 प्रस्तावना

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त बताता है कि व्यक्ति का नैतिक चिंतन (Moral Reasoning) क्रमिक रूप से विकसित होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार नैतिकता केवल सही-गलत व्यवहार सीखने का विषय नहीं है, बल्कि व्यक्ति के तर्क, विवेक और न्याय बोध के विकास पर आधारित होती है। कोहलबर्ग ने नैतिक विकास को तीन स्तरों तथा छह अवस्थाओं में विभाजित किया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति दंड और पुरस्कार की सोच से आगे बढ़कर सामाजिक नियमों, नैतिक मूल्यों तथा सार्वभौमिक न्याय के सिद्धान्तों के आधार पर निर्णय लेना सीखता है। यह सिद्धान्त शिक्षा में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, उत्तरदायित्व, सहानुभूति, न्यायप्रियता तथा विवेकपूर्ण निर्णय क्षमता के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

नैतिक विकास व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जो उसे उचित व अनुचित में विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। यह विकास केवल नियमों के पालन तक सीमित नहीं है, बल्कि न्याय, उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों की समझ पर आधारित होता है। लॉरेंस कोहलबर्ग ने नैतिक विकास को क्रमिक अवस्थाओं में विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट किया है जिसमें व्यक्ति का नैतिक चिंतन दंड-पुरस्कार की भावना से आगे बढ़कर सार्वभौमिक नैतिक सिद्धान्तों तक पहुँचता है। यह अध्याय कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धान्त, की अवस्थाओं, विशेषताओं, शैक्षिक निहितार्थों तथा सीमाओं का संक्षिप्त एवं समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है।

## 6.2 उद्देश्य

- कोहलबर्ग का नैतिक विकास को समझना ।
- सिद्धांत का समीक्षात्मक अध्ययन करना ।
- आधुनिक शिक्षा में सिद्धांत की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना ।
- 

## 6.3 कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त

### 6.3.1 कोहलबर्ग का परिचय-

लॉरेंस कोहलबर्ग (1927–1987) एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने नैतिक विकास का सिद्धान्त प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार व्यक्ति का नैतिक चिंतन क्रमिक अवस्थाओं में विकसित होता है। उनका सिद्धांत जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत से प्रेरित है और शिक्षा तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

### 6.3.2 सिद्धान्त का आधार एवं पृष्ठभूमि

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत मानव के नैतिक निर्णय एवं नैतिक तर्क (Moral Reasoning) के क्रमिक विकास पर आधारित है। यह सिद्धांत मुख्यतः स्विस मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे के नैतिक विकास संबंधी विचारों से प्रेरित है। पियाजे ने यह प्रतिपादित किया कि बच्चों की नैतिक समझ आयु और संज्ञानात्मक विकास के साथ विकसित होती है। इसी आधार को आगे बढ़ाते हुए अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोहलबर्ग ने नैतिक विकास का विस्तृत एवं क्रमबद्ध सिद्धांत प्रस्तुत किया।

कोहलबर्ग ने विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों और किशोरों पर नैतिक दुविधाओं (Moral Dilemmas) के माध्यम से अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि नैतिक विकास व्यक्ति के सही या गलत व्यवहार से अधिक उसके निर्णय के पीछे निहित तर्क पर निर्भर करता है। उन्होंने नैतिक विकास को तीन स्तरों तथा छह क्रमिक अवस्थाओं में विभाजित किया, जो व्यक्ति की नैतिक परिपक्वता के विकास को स्पष्ट करती हैं। यह सिद्धान्त शिक्षा, मनोविज्ञान तथा मूल्य-शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

### 6.3.3 नैतिक विकास के अवधारणाएँ -

नैतिक विकास से आशय उस क्रमिक प्रक्रिया से है जिसके द्वारा व्यक्ति सही-गलत, न्याय-अन्याय, कर्तव्य, उत्तरदायित्व तथा सामाजिक मूल्यों के आधार पर निर्णय लेना और आचरण करना सीखता है। यह विकास परिवार, विद्यालय, समाज तथा अनुभवों के प्रभाव से निरंतर परिपक्व होता है और व्यक्ति में नैतिक तर्क, मूल्यबोध तथा उत्तरदायी व्यवहार का निर्माण करता है। लॉरेंस कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास व्यक्ति के नैतिक तर्क (Moral Reasoning) के क्रमिक विकास की प्रक्रिया है। उन्होंने प्रतिपादित किया कि व्यक्ति का नैतिक स्तर उसके व्यवहार से अधिक उसके निर्णय के पीछे निहित तर्क पर निर्भर करता है। कोहलबर्ग ने नैतिक विकास को तीन स्तरों तथा छह क्रमिक अवस्थाओं में विभाजित किया, जो नैतिक परिपक्वता के क्रमिक विकास को दर्शाती हैं। उनके अनुसार व्यक्ति अनुभव,

संज्ञानात्मक विकास तथा सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से उच्चतर नैतिक स्तरों की ओर अग्रसर होता है।

### **नैतिक विकास के तीन स्तर -**

#### **I. पूर्व-परम्परागत स्तर (Pre-conventional Level)**

इस स्तर पर बालक का नैतिक निर्णय मुख्यतः दंड से बचने और व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने पर आधारित होता है। वह सही-गलत का निर्णय बाहरी परिणामों के आधार पर करता है।

#### **II. परम्परागत स्तर (Conventional Level)**

इस स्तर पर व्यक्ति परिवार, विद्यालय और समाज के नियमों, अपेक्षाओं तथा सामाजिक स्वीकृति को महत्व देता है। उसका व्यवहार सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने और दूसरों की स्वीकृति प्राप्त करने की भावना से प्रेरित होता है।

#### **III. उत्तर-परम्परागत स्तर (Post-conventional Level)**

इस स्तर पर व्यक्ति न्याय, समानता, मानवाधिकार तथा सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लेता है। वह आवश्यक होने पर अन्यायपूर्ण नियमों का भी नैतिक विवेक के आधार पर विरोध कर सकता है और नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च मानता है।

### **नैतिक विकास की छह अवस्थाएं-**

#### **पूर्व-परम्परागत स्तर (Pre-conventional Level)**

##### **1. दण्ड एवं आज्ञापालन अवस्था (Punishment and Obedience Orientation)**

इस अवस्था में बालक दण्ड से बचने के लिए नियमों का पालन करता है। उसके लिए वह कार्य सही है जिससे दण्ड न मिले।

##### **2. साधनवादी या व्यक्तिगत लाभ अवस्था (Instrumental Purpose and Exchange Orientation)**

इस अवस्था में व्यक्ति अपने हित एवं लाभ को ध्यान में रखकर निर्णय लेता है। वह "लेन-देन" और पारस्परिक लाभ के आधार पर नैतिकता को समझता है।

#### **II. परम्परागत स्तर (Conventional Level)**

##### **3. अच्छा बालक/अच्छी बालिका अवस्था (Good Boy–Good Girl Orientation)**

इस अवस्था में व्यक्ति दूसरों की स्वीकृति, प्रशंसा और अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए नैतिक व्यवहार करता है। उसके लिए सामाजिक अपेक्षाओं का पालन महत्वपूर्ण होता है।

##### **4. कानून एवं व्यवस्था अवस्था (Law and Order Orientation)**

इस अवस्था में व्यक्ति समाज के नियमों, कानूनों और कर्तव्यों का पालन नैतिक दायित्व मानता है। सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना उसका प्रमुख उद्देश्य होता है।

### III. उत्तर-परम्परागत स्तर (Post-conventional Level)

#### 5. सामाजिक अनुबंध अवस्था (Social Contract Orientation)

इस अवस्था में व्यक्ति समझता है कि कानून और नियम समाज के कल्याण के लिए बनाए गए हैं। यदि कोई नियम न्याय और मानव हित के विरुद्ध हो, तो उसे बदला जा सकता है।

#### 6. सार्वभौमिक नैतिक सिद्धान्त अवस्था (Universal Ethical Principles Orientation)

यह नैतिक विकास की सर्वोच्च अवस्था है। जिसमें व्यक्ति न्याय, समानता, मानव गरिमा और सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के आधार पर निर्णय लेता है, चाहे इसके लिए व्यक्तिगत हानि या सामाजिक विरोध ही क्यों न सहना पड़े।

### 6.3.4 नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

नैतिक विकास अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक कारकों से प्रभावित होता है। प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं—

#### 1. परिवार (Family):

परिवार नैतिक विकास का प्रथम एवं सबसे प्रभावशाली माध्यम है। माता-पिता के संस्कार, अनुशासन और व्यवहार से बालक नैतिक मूल्यों को सीखता है।

#### 2. विद्यालय (School):

विद्यालय का वातावरण, शिक्षक का आदर्श आचरण, मूल्य-आधारित शिक्षा तथा सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया नैतिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

#### 3. संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development):

बौद्धिक परिपक्वता बढ़ने के साथ व्यक्ति सही-गलत, न्याय-अन्याय तथा नैतिक दुविधाओं पर अधिक तार्किक ढंग से विचार करने लगता है।

#### 4. सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण (Social and Cultural Environment):

समाज की परंपरा, रीति-रिवाज, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति के नैतिक दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

#### 5. साथियों का समूह (Peer Group):

मित्रों एवं सहपाठियों के साथ संवाद, सहयोग और प्रतिस्पर्धा नैतिक निर्णय क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है।

**6. अनुभव एवं जीवन परिस्थितियाँ (Life Experiences):**

जीवन के विविध अनुभव, सफलता, असफलताएं और नैतिक दुविधा व्यक्ति के नैतिक परिपक्वता स्तर को विकसित करती हैं।

**7. मीडिया एवं प्रौद्योगिकी (Media and Technology):**

पुस्तकें, समाचार, इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा अन्य संचार माध्यम नैतिक विचारों और व्यवहार को सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

**8. व्यक्तित्व एवं भावनात्मक परिपक्वता (Personality and Emotional Maturity):**

आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व और आत्मचिंतन जैसे गुण नैतिक विकास को सुदृढ़ बनाते हैं।

**सिद्धांत का शैक्षिक महत्व -**

1. मूल्य-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन: यह सिद्धान्त विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, न्याय, उत्तरदायित्व एवं नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक है।
2. नैतिक तर्कशक्ति का विकास: यह विद्यार्थियों को केवल नियमों का पालन करने के बजाय सही-गलत का तार्किक एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेना सिखाता है।
3. लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास: विद्यार्थियों में समानता, सहयोग, सहिष्णुता एवं मानवाधिकारों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है।
4. नैतिक दुविधाओं के समाधान की क्षमता: शिक्षक नैतिक दुविधाओं पर चर्चा कर विद्यार्थियों में निर्णय लेने एवं समस्या समाधान की क्षमता विकसित कर सकते हैं।
5. चरित्र निर्माण में सहायक: यह सिद्धान्त ईमानदारी, अनुशासन, सहानुभूति एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
6. नैतिक विकास का सीमित दृष्टिकोण यह सिद्धांत नैतिक विकास के सभी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत आयामों का पूर्णतः समावेश नहीं करता।

**सिद्धांत की सीमाएँ**

1. व्यवहार की अपेक्षा तर्क पर अधिक बल

यह सिद्धांत नैतिक व्यवहार की तुलना में नैतिक तर्क (Moral Reasoning) को अधिक महत्व देता है, जबकि व्यवहार कई अन्य कारणों से भी प्रभावित होता है।

2. सांस्कृतिक सीमाएँ:

यह सिद्धान्त मुख्यतः पाश्चात्य समाज पर आधारित है, इसलिए इसकी सभी अवस्थाएँ प्रत्येक संस्कृति में समान रूप से लागू नहीं होती।

### 3. भावनात्मक पक्ष की उपेक्षा

सिद्धान्त में सहानुभूति, संवेदना तथा भावनाओं की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है।

### 4. सभी व्यक्ति उच्चतम स्तर तक नहीं पहुँचते

व्यक्ति का नैतिक विकास उसकी परिस्थितियों, शिक्षा एवं अनुभवों पर निर्भर करता है; अतः सभी लोग अंतिम अवस्था तक नहीं पहुँचते।

### 5. आयु-क्रम की सार्वभौमिकता पर प्रश्न

व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग स्तरों का नैतिक तर्क प्रस्तुत कर सकता है, इसलिए अवस्थाओं का क्रम सदैव एक जैसा नहीं होता।

### 6. नैतिक विकास का सीमित दृष्टिकोण:

यह सिद्धांत नैतिक विकास के सभी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तिगत आयामों का पूर्णतः समावेश नहीं करता।

## जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1. कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास क्या है?

प्रश्न 2. कोहलबर्ग ने नैतिक विकास को कितने स्तरों एवं अवस्थाओं में विभाजित किया है?

प्रश्न 3. कोहलबर्ग के सिद्धान्त का शिक्षा में एक प्रमुख महत्व लिखिए।

### 6.3.5 सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त नैतिक तर्क के क्रमिक विकास को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित रूप से स्पष्ट करता है, इसलिए शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में इसका विशेष महत्व है। यह विद्यार्थियों में नैतिक निर्णय क्षमता, मूल्यबोध तथा सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास को प्रोत्साहित करता है। साथ ही, नैतिक दुविधाओं के माध्यम से चिंतन एवं विवेकपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में यह अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

यद्यपि यह सिद्धांत नैतिक विकास की प्रभावी व्याख्या करता है, फिर भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं। यह नैतिक व्यवहार की अपेक्षा नैतिक तर्क पर अधिक बल देता है तथा भावनात्मक, सांस्कृतिक एवं परिस्थितिजन्य कारकों को अपेक्षाकृत कम महत्व देता है। इसके अतिरिक्त, सभी व्यक्ति नैतिक विकास की उच्चतम अवस्था तक नहीं पहुँचते और विभिन्न संस्कृतियों में नैतिक मानदंड भिन्न हो सकते हैं।

निष्कर्षतः, कोहलबर्ग का सिद्धान्त नैतिक विकास को समझने का एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली सिद्धान्त है, किन्तु इसे अन्य मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दृष्टिकोणों के साथ समन्वित रूप में अधिक उपयुक्त माना जाता है।

## 6.4 सारांश

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि नैतिकता का विकास व्यक्ति में क्रमिक एवं बौद्धिक परिपक्वता के साथ होता है। उन्होंने नैतिक विकास को तीन स्तरों तथा छह अवस्थाओं में विभाजित किया है, जिनमें व्यक्ति स्वार्थ-आधारित निर्णयों से आगे बढ़कर सामाजिक नियमों, न्याय, मानवाधिकार एवं सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के आधार पर निर्णय लेना सीखता है। यह सिद्धान्त शिक्षा में नैतिक चिंतन, तर्कशक्ति, उत्तरदायित्व तथा मूल्यपरक व्यवहार के विकास पर विशेष बल देता है। यद्यपि इसकी कुछ सीमाएँ हैं, फिर भी नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण और मूल्य-आधारित शिक्षण के क्षेत्र में यह अत्यंत प्रभावशाली एवं प्रासंगिक सिद्धान्त माना जाता है।

## 6.5 शब्दावली -

1. नैतिकता = सदाचार
2. नैतिक विकास = परिपक्वता
3. नैतिक द्रविधा = द्वंद्व
4. परम्परागत = अनुपालन
5. न्याय = निष्पक्षता

## 6.6 अपनी प्रगति जांचे संभावित उत्तर-

संभावित उत्तर 1: नैतिक विकास सही-गलत का निर्णय लेने की क्षमता का क्रमिक विकास है, जो व्यक्ति की संज्ञानात्मक परिपक्वता के साथ विकसित होता है।

संभावित उत्तर 2: कोहलबर्ग ने नैतिक विकास को 3 स्तरों तथा 6 अवस्थाओं में विभाजित किया है।

संभावित उत्तर 3: यह सिद्धान्त विद्यार्थियों में नैतिक चिंतन, तर्कपूर्ण निर्णय क्षमता तथा मूल्यपरक व्यवहार के विकास में सहायक है।

## 6.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन

- NCERT ePathshala - नैतिक शिक्षा, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं मूल्य शिक्षा से संबंधित ई-पुस्तकें एवं अध्ययन सामग्री।
- SWAYAM - शैक्षिक मनोविज्ञान, बाल विकास एवं नैतिक शिक्षा पर निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम।

- NROER (National Repository of Open Educational Resources) - नैतिक विकास, अधिगम सिद्धान्त एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री से संबंधित मुक्त डिजिटल संसाधन।

---

## 6.8 संदर्भ -

---

कोहलबर्ग, एल. (1981). नैतिक विकास पर निबंध: खंड-1 : नैतिक विकास का दर्शन. हार्पर एंड रो.

कोहलबर्ग, एल. (1984). नैतिक विकास पर निबंध: खंड-2 : नैतिक विकास का मनोविज्ञान. हार्पर एंड रो.

क्रेन, डब्ल्यू. (2015). विकास के सिद्धान्त: अवधारणाएँ एवं अनुप्रयोग (6वाँ संस्करण). पियर्सन.

सैंट्रॉक, जे. डब्ल्यू. (2018). शैक्षिक मनोविज्ञान (6वाँ संस्करण). मैकग्रा-हिल एजुकेशन.

वूलफोक, ए. (2022). शैक्षिक मनोविज्ञान (15वाँ संस्करण). पियर्सन.

---

## 6.9 अभ्यास के प्रश्न -

---

A. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (संभावित विकल्प सहित)

1. कोहलबर्ग ने नैतिक विकास को कितने स्तरों में विभाजित किया है?

(अ) 2

(ब) 3

(स) 4

(द) 5

2. कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विकास का सर्वोच्च स्तर कौन-सा है?

(अ) पूर्व-परम्परागत स्तर

(ब) परम्परागत स्तर

(स) उत्तर-परम्परागत स्तर

(द) सामाजिक स्तर

3. कोहलबर्ग के सिद्धान्त में कुल कितनी अवस्थाएँ हैं?

(अ) 4

(ब) 5

(स) 6

(द) 7

4. कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धान्त मुख्यतः किस पर आधारित है?

(अ) शारीरिक विकास

(ब) भावनात्मक विकास

(स) संज्ञानात्मक विकास

(द) भाषा विकास

**B. लघु उत्तरीय प्रश्न-**

**प्रश्न** - कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धान्त से क्या अभिप्राय है?

**प्रश्न** - नैतिक विकास के तीन स्तरों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

कोहलबर्ग के सिद्धान्त का शिक्षा में क्या महत्व है?

**C. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-**

**प्रश्न** - कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन करते हुए उसके तीन स्तरों एवं छह अवस्थाओं को स्पष्ट कीजिए।

**प्रश्न** - कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए उसके शैक्षिक महत्व एवं सीमाओं की विवेचना कीजिए।

# इकाई - 7

## गैग्रे का अधिगम-स्तर एवं अधिगम की सूचना प्रसंस्करण प्रक्रिया

---

### 7.1 प्रस्तावना

### 7.2 उद्देश्य

### 7.3 गैग्रे का परिचय

7.3.1 अधिगम की अवधारणा. गैग्रे का अधिगम सिद्धान्त

7.3.2 गैग्रे के अधिगम के स्तर

7.3.3 आधुनिक शिक्षण एवं ई- लर्निंग में प्रासंगिकता

### 7.4 सारांश

### 7.5 शब्दावली

### 7.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 7.7 सहायक पाठ्य सामग्री

### 7.8 सन्दर्भ

### 7.9 अभ्यास

---

### 7.1 प्रस्तावना

- रॉबर्ट एम. गैग्रे (1916–2002) एक प्रसिद्ध अमेरिकी शैक्षिक मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने अधिगम (Learning) तथा अनुदेशन (Instruction) के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गैग्रे के अधिगम के स्तर (Levels of Learning) और अनुदेशन की नौ घटनाएँ (Nine Events of Instruction) का प्रतिपादन किया। उनका सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम के प्रकार और शिक्षण की प्रक्रिया का वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध ढंग से संगठन किया जाना चाहिए। उनके विचार आधुनिक शिक्षा, प्रशिक्षण तथा ई-लर्निंग में व्यापक रूप से उपयोग किए जाते हैं।

अधिगम एक सतत एवं उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों तथा व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन प्राप्त करता है। रॉबर्ट एम. गैग्रे ने अधिगम को वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध दृष्टिकोण से समझाते हुए अधिगम के स्तर तथा सूचना प्रसंस्करण प्रक्रिया का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब शिक्षण-अधिगम गतिविधियाँ शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं और अधिगम के प्रकारों के अनुरूप नियोजित हों। यह अध्याय गैग्रे के सिद्धांत, अधिगम के स्तरों, सूचना प्रसंस्करण प्रक्रिया तथा शिक्षा में उनके व्यावहारिक महत्व को स्पष्ट करता है।

---

### 7.2 उद्देश्य -

- रॉबर्ट एम. गैग्रे के अधिगम-स्तरों की अवधारणा, विशेषताओं एवं क्रमिक विकास को समझ सकेगा।

- गैग्रे की सूचना प्रसंस्करण (Information Processing) प्रक्रिया के विभिन्न चरणों तथा अधिगम में उनकी भूमिका का विश्लेषण कर सकेगा।
- गैग्रे के सिद्धान्त के शैक्षिक अनुप्रयोगों को समझते हुए प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उसका उपयोग कर सकेगा।

---

### 7.3 गैग्रे का परिचय

---

रॉबर्ट एम. गैग्रे (1916–2002) अमेरिकी शैक्षिक मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने अधिगम, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका सिद्धान्त वैज्ञानिक, क्रमबद्ध एवं शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण पर आधारित है।

#### 7.3.1 अधिगम की अवधारणा, गैग्रे का अधिगम सिद्धान्त

अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभव एवं अभ्यास के परिणामस्वरूप व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण तथा व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।

गैग्रे के अनुसार प्रत्येक प्रकार का अधिगम अलग प्रकृति का होता है, इसलिए प्रत्येक के लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीति आवश्यक है। प्रभावी शिक्षण तभी संभव है जब अनुदेशन अधिगम के प्रकार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के अनुरूप हो।

#### 7.3.2 गैग्रे के अधिगम के स्तर (Learning Hierarchy)

गैग्रे ने अधिगम को सरल से जटिल स्तरों में विकसित होने वाली प्रक्रिया माना। प्रत्येक उच्च स्तर का अधिगम निम्न स्तर के अधिगम पर आधारित होता है। इस प्रकार क्रमिक अधिगम से जटिल ज्ञान एवं कौशल विकसित होते हैं।

गैग्रे द्वारा प्रतिपादित अधिगम के प्रकार (Categories of Learning Outcomes)

गैग्रे ने अधिगम के पाँच प्रमुख परिणाम बताए—

बौद्धिक कौशल (Intellectual Skills)

संज्ञानात्मक रणनीतियाँ (Cognitive Strategies)

मौखिक सूचना (Verbal Information)

गतिशील कौशल (Motor Skills)

अभिवृत्तियाँ (Attitudes)

इन सभी के लिए भिन्न-भिन्न शिक्षण विधियाँ अपेक्षित होती हैं।

अधिगम की सूचना प्रसंस्करण (Information Processing) की अवधारणा

सूचना प्रसंस्करण सिद्धान्त के अनुसार अधिगम एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें प्राप्त जानकारी का चयन, संगठन, भंडारण तथा आवश्यकता पड़ने पर पुनः स्मरण किया जाता है।

सूचना प्रसंस्करण मॉडल के प्रमुख घटक

- (i) संवेदी स्मृति (Sensory Memory): इन्द्रियों द्वारा प्राप्त सूचना का अत्यल्प समय तक संग्रह।
- (ii) अल्पकालिक स्मृति (Short-Term Memory): चयनित सूचना का सीमित समय तक प्रसंस्करण एवं धारण।
- (iii) दीर्घकालिक स्मृति (Long-Term Memory): व्यवस्थित एवं स्थायी रूप से ज्ञान का संग्रह, जिसे आवश्यकता अनुसार पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

सूचना प्रसंस्करण की चरणबद्ध प्रक्रिया

उद्दीपन → संवेदना ग्रहण → ध्यान → अल्पकालिक स्मृति → कूटबद्धीकरण (Encoding) → दीर्घकालिक स्मृति → पुनः स्मरण (Retrieval) → प्रतिक्रिया (Response) → प्रतिपुष्टि (Feedback)

गैग्रे की नौ शिक्षण घटनाएँ (Nine Events of Instruction)

विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करना।

अधिगम उद्देश्यों से अवगत कराना।

पूर्व ज्ञान का स्मरण कराना।

नई विषय-वस्तु प्रस्तुत करना।

अधिगम में मार्गदर्शन देना।

अभ्यास के अवसर प्रदान करना।

त्वरित प्रतिपुष्टि देना।

अधिगम का मूल्यांकन करना।

ज्ञान के स्थानांतरण एवं स्थायित्व को बढ़ावा देना।

**शिक्षण-अधिगम में गैग्रे सिद्धांत का अनुप्रयोग**

पाठ योजना निर्माण में।

कौशल-आधारित शिक्षण में।

व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा में।

डिजिटल एवं ई-लर्निंग सामग्री के विकास में।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभावी संचालन में।

### **सिद्धान्त का शैक्षिक महत्व**

शिक्षण को वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित बनाता है।

स्पष्ट अधिगम उद्देश्यों पर बल देता है।

शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं को ध्यान में रखता है।

प्रभावी मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि को प्रोत्साहित करता है।

आधुनिक शिक्षण तकनीकों के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

### **सिद्धांत की सीमाएँ**

व्यक्तिगत भिन्नताओं पर सीमित ध्यान देता है।

सामाजिक एवं भावनात्मक पक्ष अपेक्षाकृत कम महत्त्व पाते हैं।

व्यवहार में सभी चरणों का पालन करना समयसाध्य हो सकता है।

रचनावादी (Constructivist) दृष्टिकोण को पर्याप्त महत्त्व नहीं देता।

### **सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा**

गैग्रे का सिद्धान्त शिक्षण को वैज्ञानिक, उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावी बनाता है, किन्तु इसकी अत्यधिक संरचित प्रकृति कभी-कभी शिक्षण की लचीलापन एवं सृजनात्मकता को सीमित कर देती है। फिर भी प्रशिक्षण, विद्यालयी शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षण में इसकी उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

### **जाँच करें अपनी प्रगति**

प्रश्न 1. गैग्रे के अनुसार अधिगम क्या है?

प्रश्न 2. सूचना प्रसंस्करण मॉडल के तीन प्रमुख घटकों के नाम लिखिए।

प्रश्न 3. गैग्रे की नौ शिक्षण घटनाओं का उद्देश्य क्या है?

### **7.3.3 आधुनिक शिक्षण एवं ई-लर्निंग में प्रासंगिकता**

वर्तमान डिजिटल युग में गैग्रे का सिद्धान्त ऑनलाइन शिक्षण, स्मार्ट कक्षा, ई-लर्निंग मॉड्यूल, MOOCs तथा मिश्रित (Blended) शिक्षण के प्रभावी डिज़ाइन का महत्वपूर्ण आधार है। यह शिक्षण को अधिक संगठित, परिणामोन्मुख तथा शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

---

## **7.4 सारांश-**

---

रॉबर्ट एम. गैग्रे ने अधिगम को वैज्ञानिक, क्रमबद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया माना। उन्होंने अधिगम के स्तर, अधिगम के पाँच परिणाम तथा सूचना प्रसंस्करण मॉडल के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि प्रभावी शिक्षण शिक्षार्थी की मानसिक प्रक्रियाओं के अनुरूप होना चाहिए। उनकी नौ शिक्षण घटनाएँ (Nine Events of Instruction) शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं परिणामोन्मुख बनाती हैं। वर्तमान समय में गैग्रे का सिद्धान्त विद्यालयी शिक्षा, शिक्षक-प्रशिक्षण तथा ई-लर्निंग में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

---

## 7.5 शब्दावली

---

अधिगम (Learning) – अनुभव से व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन।

अनुदेशन (Instruction) – अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु नियोजित शिक्षण प्रक्रिया।

सूचना प्रसंस्करण (Information Processing) – सूचना का ग्रहण, संगठन, संग्रहण एवं पुनःस्मरण करने की मानसिक प्रक्रिया।

संवेदी स्मृति (Sensory Memory) – इन्द्रियों से प्राप्त सूचना का अल्पकालिक भंडारण।

दीर्घकालिक स्मृति (Long-Term Memory) – ज्ञान का स्थायी एवं व्यवस्थित संग्रह।

---

## 7.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर सहित)

---

संभावित उत्तर 1 : अधिगम अनुभव एवं अभ्यास से व्यवहार, ज्ञान और कौशल में होने वाला अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन है।

संभावित उत्तर 2 : संवेदी स्मृति, अल्पकालिक स्मृति तथा दीर्घकालिक स्मृति।

संभावित उत्तर 3 : शिक्षण को क्रमबद्ध, प्रभावी, परिणामोन्मुख तथा स्थायी अधिगम सुनिश्चित करना।

---

## 7.7 सहायक पाठ्य सामग्री (मुक्त शैक्षिक संसाधन)

---

NCERT ePathshala –

<https://epathshala.nic.in>

DIKSHA Portal – <https://diksha.gov.in>

SWAYAM – <https://swayam.gov.in>

---

## 7.8 सन्दर्भ -

---

- Gagné, R. M. (1985). The Conditions of Learning and Theory of Instruction (4th ed.). Holt, Rinehart and Winston.
- Gagné, R. M., Wager, W. W., Golas, K. C., & Keller, J. M. (2005). Principles of Instructional Design (5th ed.). Wadsworth.
- Mangal, S. K. (2019). Educational Psychology. PHI Learning.
- Bhatia, H. R. (2018). Educational Psychology. Surjeet Publications.
- Sharma, R. A. (2017). Educational Psychology. R. Lall Book Depot.

---

## 7.9 अभ्यास प्रश्न

---

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs)

1. गैग्ने किस क्षेत्र के प्रमुख मनोवैज्ञानिक थे?

(A) व्यक्तित्व विकास

(B) अधिगम एवं अनुदेशन

(C) भाषा विकास

(D) मापन एवं मूल्यांकन

2. गैग्ने ने अधिगम के कितने प्रमुख परिणाम बताए हैं?

(A) 3

(B) 4

(C) 5

(D) 6

3. सूचना का स्थायी भंडारण किस स्मृति में होता है?

(A) संवेदी स्मृति

(B) अल्पकालिक स्मृति

(C) दीर्घकालिक स्मृति

(D) कार्यशील स्मृति

4. गैग्ने की शिक्षण घटनाओं की संख्या कितनी है?

(A) 7

(B) 8

(C) 9

(D) 10

5. गैग्रे का सिद्धान्त मुख्यतः किस पर बल देता है?

(A) दण्ड एवं पुरस्कार

(B) वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध शिक्षण

(C) केवल सामाजिक अधिगम

(D) केवल रटकर सीखना

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

**प्रश्न 1-** गैग्रे के अधिगम सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

**प्रश्न 2 -** सूचना प्रसंस्करण मॉडल के प्रमुख घटकों को स्पष्ट कीजिए।

**प्रश्न 3 -** गैग्रे द्वारा प्रतिपादित अधिगम के पाँच परिणामों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

**प्रश्न 1-** गैग्रे के अधिगम सिद्धान्त एवं सूचना प्रसंस्करण मॉडल का विस्तार से वर्णन करते हुए शिक्षा में इसकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

**प्रश्न 2 -** गैग्रे की नौ शिक्षण घटनाओं का क्रमवार वर्णन कीजिए तथा आधुनिक शिक्षण एवं ई-लर्निंग में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन कीजिए।

# इकाई – 8

## वाइगोत्सकी का सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धान्त

---

### 8.1 प्रस्तावना

### 8.2 उद्देश्य

### 8.3 सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम

#### 8.3.1 सिद्धान्त की अवधारणा

#### 8.3.2 सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

### 8.4 सारांश

### 8.5 शब्दावली

### 8.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 8.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 8.8 संदर्भ

### 8.9 अभ्यास

---

### 8.1 प्रस्तावना

लेव वाइगोत्सकी (1896–1934) रूस के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार बालक का संज्ञानात्मक विकास सामाजिक अंतःक्रिया, भाषा तथा संस्कृति के माध्यम से होता है। उनका सिद्धान्त शिक्षार्थी-केंद्रित एवं सहयोगात्मक अधिगम पर बल देता है।

अधिगम केवल व्यक्तिगत मानसिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण से प्रभावित विकास की प्रक्रिया है। वाइगोत्सकी ने स्पष्ट किया कि भाषा, संस्कृति, परिवार, शिक्षक तथा सहपाठी बालक के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह सिद्धान्त सहयोगात्मक अधिगम, सक्रिय सहभागिता एवं मार्गदर्शित शिक्षण को विशेष महत्व देता है।

---

### 8.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् शिक्षार्थी—

- वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धान्त को समझ सकेंगे।

- सामाजिक अंतःक्रिया, भाषा एवं संस्कृति की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षण में सिद्धान्त की उपयोगिता एवं अनुप्रयोग का मूल्यांकन कर सकेंगे।

## 8.3 सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम

### 8.3.1 सिद्धान्त की अवधारणा

वाइगोत्सकी के अनुसार ज्ञान का निर्माण सामाजिक अंतःक्रिया एवं सांस्कृतिक अनुभवों के माध्यम से होता है। बालक दूसरों के सहयोग से अधिक प्रभावी ढंग से सीखता है।

### II. सिद्धान्त के प्रमुख तत्व \*

- सामाजिक अंतःक्रिया (Social Interaction)
- भाषा का महत्व (Role of Language)
- सांस्कृतिक प्रभाव (Culture)
- समीपस्थ विकास क्षेत्र (Zone of Proximal Development—ZPD)
- सहारा प्रदान करना (Scaffolding)
- अधिक ज्ञानवान व्यक्ति (More Knowledgeable Other—MKO)

### III. समीपस्थ विकास क्षेत्र (ZPD)

यह वह अंतर है जो बालक स्वयं कर सकता है और जो वह शिक्षक, अभिभावक या सक्षम सहपाठी के सहयोग से कर सकता है।

### IV. स्कैफोल्डिंग (Scaffolding)

शिक्षार्थी को आवश्यकता के अनुसार अस्थायी सहायता प्रदान करना तथा दक्षता बढ़ने पर धीरे-धीरे सहायता कम कर देना।

### V. अधिक ज्ञानवान व्यक्ति (MKO)

ऐसा व्यक्ति जिसके पास शिक्षार्थी की अपेक्षा अधिक ज्ञान या कौशल हो तथा जो अधिगम में मार्गदर्शन प्रदान करे।

### VI. भाषा का महत्व

भाषा विचार, संचार, समस्या-समाधान एवं ज्ञान-निर्माण का प्रमुख माध्यम है।

### VII. शिक्षा में अनुप्रयोग

सहयोगात्मक अधिगम

समूह कार्य एवं चर्चा

सहपाठी शिक्षण (Peer Learning)

शिक्षक द्वारा मार्गदर्शन

गतिविधि-आधारित शिक्षण

समस्या-समाधान आधारित शिक्षण

### **VIII. सिद्धान्त का शैक्षिक महत्व**

शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षण को बढ़ावा देता है।

सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करता है।

भाषा एवं संवाद के महत्व को स्थापित करता है।

व्यक्तिगत क्षमता के विकास में सहायक है।

समावेशी शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्धान्त है।

### **IX. सिद्धान्त की सीमाएँ**

जैविक एवं व्यक्तिगत कारकों पर अपेक्षाकृत कम बल।

ZPD का सटीक मापन कठिन।

प्रत्येक परिस्थिति में समान रूप से लागू नहीं।

सांस्कृतिक भिन्नताओं के कारण परिणाम अलग हो सकते हैं।

### **जाँच करें अपनी प्रगति**

प्रश्न 1. वाइगोत्सकी के अनुसार अधिगम का प्रमुख आधार क्या है?

प्रश्न 2. ZPD से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 3. स्कैफोल्डिंग क्या है?

### **8.3.2 सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा**

वाइगोत्सकी का सिद्धान्त अधिगम को सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ में समझने का प्रभावी आधार प्रदान करता है। यद्यपि इसकी कुछ व्यावहारिक सीमाएँ हैं, फिर भी आधुनिक शिक्षा, सहयोगात्मक अधिगम एवं समावेशी कक्षाओं में इसकी उपयोगिता अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

### **आधुनिक शिक्षण एवं ई-लर्निंग में प्रासंगिकता**

ऑनलाइन शिक्षण, सहयोगात्मक परियोजनाएँ, चर्चा मंच (Discussion Forum), समूह गतिविधियाँ, डिजिटल सहयोग तथा मिश्रित (Blended) शिक्षण में वाइगोत्सकी का सिद्धान्त अत्यंत प्रासंगिक है।

---

## 8.4 सारांश

---

वाइगोत्सकी ने अधिगम को सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया माना। उनके अनुसार भाषा, सामाजिक अंतःक्रिया, ZPD तथा स्कैफोल्डिंग बालक के संज्ञानात्मक विकास के प्रमुख आधार हैं। यह सिद्धान्त आधुनिक, सहयोगात्मक एवं समावेशी शिक्षण की मजबूत नींव प्रस्तुत करता है।

---

## 8.5 शब्दावली

---

- सामाजिक अंतःक्रिया (Social Interaction) – दूसरों के साथ संवाद एवं सहभागिता।
- संस्कृति (Culture) – समाज के मूल्य, परम्पराएँ एवं जीवन-पद्धति।
- ZPD – समीपस्थ विकास क्षेत्र।
- स्कैफोल्डिंग (Scaffolding) – अस्थायी शिक्षण सहायता।
- MKO – अधिक ज्ञानवान व्यक्ति।

---

## 8.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर सहित)

---

संभावित उत्तर 1 : सामाजिक अंतःक्रिया एवं सांस्कृतिक वातावरण।

संभावित उत्तर 2 : वह क्षेत्र जहाँ शिक्षार्थी सक्षम व्यक्ति की सहायता से नया अधिगम करता है।

संभावित उत्तर 3 : अधिगम के दौरान शिक्षार्थी को दी जाने वाली अस्थायी एवं क्रमिक सहायता।

---

## 8.7 सहायक पाठ्य सामग्री (मुक्त शैक्षिक संसाधन)

---

NCERT ePathshala – <https://epathshala.nic.in>

DIKSHA Portal – <https://diksha.gov.in>

SWAYAM – <https://swayam.gov.in>

---

## 8.8 सन्दर्भ (APA शैली)

---

Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in Society*. Harvard University Press.

Woolfolk, A. (2022). *Educational Psychology*. Pearson.

Mangal, S. K. (2019). *Educational Psychology*. PHI Learning.

Santrock, J. W. (2021). *Educational Psychology*. McGraw-Hill.

Sharma, R. A. (2017). *Educational Psychology*. R. Lall Book Depot.

---

## 8.9 अभ्यास के प्रश्न

---

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वाइगोत्सकी किस देश के मनोवैज्ञानिक थे?

(A) अमेरिका

(B) रूस

(C) इंग्लैंड

(D) जर्मनी

2. ZPD का पूर्ण रूप क्या है?

(A) Zone of Proximal Development

(B) Zone of Personal Development

(C) Zero Process Development

(D) Zone of Practical Domain

3. स्कैफोल्डिंग का अर्थ है—

(A) दण्ड देना

(B) अस्थायी शिक्षण सहायता

(C) परीक्षा लेना

(D) मूल्यांकन करना

4. वाइगोत्सकी ने किस तत्व को संज्ञानात्मक विकास का प्रमुख आधार माना?

(A) वंशानुक्रम

(B) सामाजिक अंतःक्रिया

(C) परिपक्वता

(D) बुद्धिलब्धि

5. MKO का अर्थ है—

(A) More Knowledgeable Other

(B) Modern Knowledge Object

(C) Mental Knowledge Order

## (D) Multiple Knowledge Output

## (ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
2. ZPD एवं स्कैफोल्डिंग को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. भाषा एवं संस्कृति की भूमिका का वर्णन कीजिए।

## (ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वाइगोत्सकी के सामाजिक-सांस्कृतिक अधिगम सिद्धान्त का विस्तार से वर्णन करते हुए शिक्षा में इसकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।
2. ZPD, स्कैफोल्डिंग एवं MKO की अवधारणाओं का विश्लेषण करते हुए आधुनिक शिक्षण एवं ई-लर्निंग में उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन कीजिए।

# खंड - 3

## इकाई -9

# अधिगम के प्रेरक एवं व्यक्तिगत आयाम

### 9.1 प्रस्तावना

### 9.2 उद्देश्य

### 9.3 अधिगम के लिए प्रेरणा : अवधारणा एवं महत्व

#### 9.3.1 प्रेरणा की अवधारणा एवं परिभाषा

#### 9.3.2 आलोचनात्मक समीक्षा

### 9.4 सारांश

### 9.5 शब्दावली

### 9.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 9.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 9.8 संदर्भ

### 9.9 अभ्यास

### 9.1 प्रस्तावना

प्रेरणा (Motivation) अधिगम की आधारभूत शक्ति है, जो शिक्षार्थी को सीखने, लक्ष्य प्राप्त करने तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करती है। यह अधिगम को सक्रिय, उद्देश्यपूर्ण एवं प्रभावी बनाती है। प्रेरित शिक्षार्थी अधिक रुचि, उत्साह एवं आत्मविश्वास के साथ अधिगम करता है।

अधिगम तभी प्रभावी होता है जब शिक्षार्थी सीखने के लिए प्रेरित हो। प्रेरणा विद्यार्थियों में जिज्ञासा, रुचि, एकाग्रता तथा निरंतर प्रयास की भावना विकसित करती है। शिक्षक का दायित्व केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में सीखने की प्रेरणा उत्पन्न करना भी है। आधुनिक शिक्षण में प्रेरणा को सफल शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का प्रमुख आधार माना जाता है।

### 9.2 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् शिक्षार्थी—

- प्रेरणा की अवधारणा एवं प्रकृति को समझ सकेंगे।
- प्रेरणा के प्रकार तथा अधिगम में उसके महत्व का वर्णन कर सकेंगे।
- अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रेरक कारकों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कक्षा-कक्ष में प्रेरणा बढ़ाने के उपायों का प्रयोग कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षा एवं ई-लर्निंग में प्रेरणा की उपयोगिता का मूल्यांकन कर सकेंगे।

### 9.3 अधिगम के लिए प्रेरणा : अवधारणा एवं महत्व

#### प्रेरणा का परिचय-

प्रेरणा वह आंतरिक तथा बाह्य शक्ति है, जो व्यक्ति को किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित करती है। यह अधिगम को गति, दिशा एवं निरंतरता प्रदान करती है।

#### 9.3.1 प्रेरणा की अवधारणा एवं परिभाषा-

प्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के व्यवहार को आरम्भ, निर्देशित एवं बनाए रखती है। यह सीखने की इच्छा, उत्साह एवं उपलब्धि की भावना को विकसित करती है।

#### प्रेरणा की प्रकृति एवं विशेषताएँ

- प्रेरणा लक्ष्य-उन्मुख होती है।
- यह व्यवहार को दिशा एवं गति प्रदान करती है।
- प्रेरणा आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार की होती है।
- यह व्यक्ति-विशिष्ट एवं परिवर्तनशील होती है।
- अधिगम की गुणवत्ता एवं उपलब्धि को प्रभावित करती है।

#### प्रेरणा के प्रकार-

##### (क) आंतरिक प्रेरणा (Intrinsic Motivation)

जब शिक्षार्थी अपनी रुचि, जिज्ञासा एवं आत्मसंतोष के लिए सीखता है, तो उसे आंतरिक प्रेरणा कहते हैं।

##### (ख) बाह्य प्रेरणा (Extrinsic Motivation)

जब शिक्षार्थी पुरस्कार, अंक, प्रशंसा, प्रमाण-पत्र या दंड से बचने के उद्देश्य से सीखता है, तो उसे बाह्य प्रेरणा कहते हैं।

#### अधिगम में प्रेरणा का महत्व-

अधिगम के प्रति रुचि उत्पन्न करती है।

ध्यान एवं एकाग्रता में वृद्धि करती है।

अधिगम को प्रभावी एवं स्थायी बनाती है।

आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता का विकास करती है।

लक्ष्य प्राप्ति एवं उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए प्रेरित करती है।

#### अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रेरक कारक

- आवश्यकताएँ एवं रुचियाँ
- लक्ष्य एवं आकांक्षाएँ

- पुरस्कार एवं प्रतिपुष्टि
- परिवार एवं सामाजिक वातावरण
- शिक्षक का व्यवहार एवं शिक्षण शैली
- विद्यालय का वातावरण
- आत्मविश्वास एवं पूर्व अनुभव

### **कक्षा-कक्ष में प्रेरणा बढ़ाने के उपाय**

- शिक्षण को रोचक एवं गतिविधि-आधारित बनाना।
- विद्यार्थियों की रुचि एवं क्षमता के अनुरूप शिक्षण करना।
- समय-समय पर प्रशंसा एवं सकारात्मक प्रतिपुष्टि देना।
- उपयुक्त शिक्षण-सामग्री एवं डिजिटल संसाधनों का उपयोग करना।
- सहयोगात्मक एवं सहभागितापूर्ण अधिगम को बढ़ावा देना।

### **शिक्षण-अधिगम में प्रेरणा का अनुप्रयोग**

- स्पष्ट अधिगम उद्देश्यों का निर्धारण।
- समस्या-समाधान एवं परियोजना-आधारित शिक्षण।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार शिक्षण।
- पुरस्कार एवं प्रोत्साहन का संतुलित उपयोग।
- ICT एवं ई-लर्निंग उपकरणों का समावेश।

### **प्रेरणा का शैक्षिक महत्व**

- प्रभावी एवं सार्थक अधिगम को बढ़ावा देती है।
- आत्म-अधिगम एवं सृजनात्मकता का विकास करती है।
- विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करती है।
- उपलब्धि, अनुशासन एवं आत्मविश्वास में वृद्धि करती है।
- समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है।

### **प्रेरणा की सीमाएँ-**

- सभी विद्यार्थियों पर समान प्रभाव नहीं पड़ता।

बाह्य पुरस्कारों पर अधिक निर्भरता आंतरिक प्रेरणा को कम कर सकती है।

- प्रेरणा का स्तर समय एवं परिस्थिति के अनुसार बदल सकता है।
- केवल प्रेरणा से प्रभावी अधिगम सुनिश्चित नहीं होता।

### **जाँच करें अपनी प्रगति**

प्रश्न 1. प्रेरणा से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. प्रेरणा के दो प्रमुख प्रकार कौन-से हैं?

प्रश्न 3. अधिगम में प्रेरणा का एक प्रमुख महत्व लिखिए।

### 9.3.2 आलोचनात्मक समीक्षा

प्रेरणा अधिगम का आवश्यक आधार है, किंतु इसकी प्रभावशीलता शिक्षार्थी की क्षमता, शिक्षण-विधि, संसाधनों तथा वातावरण पर भी निर्भर करती है। अतः प्रेरणा को अन्य शैक्षिक कार्यों के साथ समन्वित रूप में अपनाना अधिक उपयोगी है।

### आधुनिक शिक्षा एवं ई-लर्निंग में प्रेरणा की प्रासंगिकता

डिजिटल युग में गेमिफिकेशन, ऑनलाइन क्विज, डिजिटल बैज, त्वरित प्रतिपुष्टि, स्मार्ट कक्षाएं एवं स्व-गति अधिगम (Self-paced Learning) विद्यार्थियों की प्रेरणा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए ई-लर्निंग में प्रेरणा प्रभावी अधिगम का प्रमुख आधार है।

---

## 9.4 सारांश -

प्रेरणा अधिगम की आधारशिला है। यह शिक्षार्थी में सीखने की इच्छा, उत्साह, आत्मविश्वास एवं लक्ष्य-प्राप्ति की भावना विकसित करती है। आंतरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार की प्रेरणा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाती हैं। आधुनिक शिक्षा एवं ई-लर्निंग में प्रेरणा विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता, उपलब्धि तथा आत्म-अधिगम को बढ़ावा देती है।

---

## 9.5 शब्दावली-

- प्रेरणा (Motivation) – लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य करने की आंतरिक या बाह्य शक्ति।
- आंतरिक प्रेरणा – स्वयं की रुचि एवं संतुष्टि से उत्पन्न प्रेरणा।
- बाह्य प्रेरणा – पुरस्कार, प्रशंसा या दण्ड से प्रभावित प्रेरणा।
- प्रतिपुष्टि (Feedback) – कार्य के परिणाम के संबंध में प्राप्त प्रतिक्रिया।
- आत्म-अधिगम (Self-learning) – स्वयं के प्रयासों से सीखने की प्रक्रिया।
- 

---

## 9.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर सहित)।

संभावित उत्तर 1 : प्रेरणा वह शक्ति है जो व्यक्ति को किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित करती है।

संभावित उत्तर 2 : आंतरिक प्रेरणा एवं बाह्य प्रेरणा।

संभावित उत्तर 3 : प्रेरणा विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, उत्साह एवं एकाग्रता बढ़ाती है।

---

## 9.7 सहायक पाठ्य सामग्री (मुक्त शैक्षिक संसाधन)

- NCERT ePathshala –

- <https://epathshala.nic.in>
- DIKSHA Portal – <https://diksha.gov.in>
- SWAYAM – <https://swayam.gov.in>

---

## 9.8 सन्दर्भ (APA शैली)

---

- Mangal, S. K. (2019). Educational Psychology. PHI Learning.
- Woolfolk, A. (2022). Educational Psychology. Pearson.
- Santrock, J. W. (2021). Educational Psychology. McGraw-Hill.
- Sharma, R. A. (2017). Educational Psychology. R. Lall Book Depot.
- Bhatia, H. R. (2018). Educational Psychology. Surjeet Publications.

---

## 9.9 अभ्यास के प्रश्न

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रेरणा का मुख्य कार्य क्या है?

- (A) व्यवहार को दिशा देना
- (B) केवल परीक्षा लेना
- (C) दण्ड देना
- (D) मूल्यांकन करना

2. आंतरिक प्रेरणा का स्रोत क्या है?

- (A) पुरस्कार
- (B) प्रशंसा
- (C) रुचि एवं आत्मसंतोष
- (D) दण्ड

3. बाह्य प्रेरणा का उदाहरण कौन-सा है?

- (A) जिज्ञासा से अध्ययन
- (B) ज्ञान प्राप्ति की इच्छा
- (C) पुरस्कार प्राप्त करने हेतु अध्ययन
- (D) आत्मसंतुष्टि

4. अधिगम में प्रेरणा किसे बढ़ाती है?

- (A) अरुचि
- (B) एकाग्रता
- (C) भय
- (D) तनाव

5. आधुनिक ई-लर्निंग में प्रेरणा बढ़ाने का प्रमुख माध्यम है—

- (A) केवल व्याख्यान
- (B) गेमिफिकेशन एवं त्वरित प्रतिपुष्टि
- (C) केवल गृहकार्य
- (D) केवल परीक्षा

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

**प्रश्न 1-** प्रेरणा की अवधारणा एवं प्रकृति स्पष्ट कीजिए।

**प्रश्न 2-** आंतरिक एवं बाह्य प्रेरणा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

**प्रश्न 3-** अधिगम में प्रेरणा के महत्व का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

**प्रश्न 1-** अधिगम के लिए प्रेरणा की अवधारणा, प्रकार एवं महत्व का विस्तार से वर्णन कीजिए।

**प्रश्न 2-** अधिगम को प्रभावित करने वाले प्रेरक कारकों तथा शिक्षण-अधिगम में प्रेरणा के अनुप्रयोग का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।

**प्रश्न 3-** कक्षा-गतिविधियाँ और उदाहरण जोड़ें

उद्देश्यों को ब्लूम वर्गीकरण से जोड़ें

आंतरिक और बाह्य प्रेरणा की सारणी बनाएं

# इकाई -10

## मास्लो का सिद्धांत

### 10.1 प्रस्तावना

### 10.2 उद्देश्य

### 10.3 मास्लो का आवश्यकता का श्रेणीक्रम सिद्धांत

#### 10.3.1 अब्राहम मास्लो का परिचय

#### 10.3.2 मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त का परिचय

### 10.4 सारांश

### 10.5 शब्दावली

### 10.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 10.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 10.8 संदर्भ

### 10.9 अभ्यास

### 10.1 प्रस्तावना

मानव व्यवहार अनेक प्रकार की आवश्यकताओं से प्रेरित होता है। व्यक्ति की प्रत्येक क्रिया के पीछे किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति का उद्देश्य निहित रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थियों की सीखने की इच्छा, उपलब्धि, सहभागिता तथा व्यक्तित्व विकास उनकी आवश्यकताओं की संतुष्टि पर निर्भर करता है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक अब्राहम मास्लो ने मानव आवश्यकताओं को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करते हुए बताया कि व्यक्ति निम्न स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात उच्च स्तर की आवश्यकताओं की ओर अग्रसर होता है। इसकी आवश्यकता श्रेणी क्रम सिद्धांत प्रेरणा को समझने का एक महत्वपूर्ण मानवतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

प्रेरणा अधिगम की आधारशिला है। जब तक विद्यार्थी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती, तब तक वह सीखने की प्रक्रिया में पूर्ण मनोयोग से भाग नहीं ले सकता। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण भी है जहाँ विद्यार्थियों की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है।

अब्राहम मास्लो ने अपनी आवश्यकता श्रेणी क्रम सिद्धान्त के माध्यम से स्पष्ट किया कि मानव आवश्यकताएँ एक निश्चित क्रम में विकसित होती हैं। भोजन, सुरक्षा और अपनत्व जैसी आवश्यकताओं की संतुष्टि के बाद ही व्यक्ति सम्मान और आत्म-साक्षात्कार जैसे उच्च उद्देश्यों की ओर अग्रसर होता है। यह सिद्धांत शिक्षा मनोविज्ञान में विशेष महत्व रखता है क्योंकि इसके आधार पर शिक्षक विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझकर अधिक प्रभावी, प्रेरणादायक एवं छात्र-केंद्रित शिक्षण वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा,

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL), मानसिक स्वास्थ्य तथा विद्यार्थी कल्याण पर बढ़ते बल के कारण मास्लो का सिद्धांत और अधिक प्रासंगिक हो गया है। यह सिद्धांत शिक्षकों को यह समझने में सहायता करता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की क्षमता उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं प्रेरणा के स्तर से गहराई से जुड़ी होती है।

---

## 10.2 उद्देश्य-

---

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी—

- अब्राहम मास्लो के व्यक्तित्व एवं योगदान का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- आवश्यकता एवं प्रेरणा की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त का वर्णन कर सकेंगे।
- आवश्यकताओं के पाँच स्तरों की व्याख्या कर सकेंगे।
- सिद्धांत की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कर सकेंगे।
- शिक्षा में सिद्धांत के अनुप्रयोग का विश्लेषण कर सकेंगे।
- सिद्धांत के शैक्षिक महत्व एवं सीमाओं का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षा एवं विद्यार्थी प्रेरणा में इसकी प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

---

## 10.3 मास्लो का आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त

---

### 10.3.1 अब्राहम मास्लो का परिचय

अब्राहम हेरोल्ड मास्लो (Abraham Harold Maslow) (1908–1970) अमेरिका के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक तथा मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic Psychology) के प्रमुख प्रवर्तकों में से एक थे। उन्होंने मानव व्यवहार को केवल जैविक प्रवृत्तियों या बाह्य उद्दीपनों का परिणाम न मानकर उसकी आवश्यकताओं, संभावनाओं एवं आत्म-विकास के संदर्भ में समझाया।

मास्लो ने 1943 में अपने प्रसिद्ध शोध-पत्र A Theory of Human Motivation में आवश्यकता श्रेणी क्रम सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसे बाद में अपनी पुस्तक Motivation and Personality (1954) में विस्तार से स्पष्ट किया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास करने तथा जीवन में सर्वोच्च उपलब्धि प्राप्त करने की स्वाभाविक इच्छा होती है। शिक्षा, प्रबंधन, परामर्श, संगठनात्मक व्यवहार तथा व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में उनके सिद्धांत का व्यापक प्रभाव है। शिक्षा मनोविज्ञान में उनका प्रमुख योगदान यह है कि उन्होंने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावी अधिगम एवं प्रेरणा का आधार माना।

### आवश्यकता की अवधारणा

आवश्यकता (Need) वह आंतरिक स्थिति या कमी है, जो व्यक्ति को किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। आवश्यकता मानव व्यवहार एवं प्रेरणा का मूल आधार है। जब कोई आवश्यकता पूर्ण नहीं होती, तो व्यक्ति उसे संतुष्ट करने के लिए सक्रिय प्रयास करता है।

## आवश्यकता की परिभाषा

**मैस्लो के अनुसार-** "आवश्यकताएँ मानव व्यवहार को दिशा देने वाली आंतरिक प्रेरक शक्तियाँ हैं, जिनकी संतुष्टि क्रमिक रूप से होती है।"

(यह परिभाषा मास्लो के सिद्धान्त की अवधारणा पर आधारित भावानुवाद है।)

## आवश्यकता और प्रेरणा का संबंध-

आवश्यकता, प्रेरणा का प्रमुख स्रोत है। अपूर्ण आवश्यकता व्यक्ति में प्रेरणा उत्पन्न करती है। आवश्यकता की तीव्रता के अनुसार व्यवहार की दिशा एवं प्रयास निर्धारित होते हैं। आवश्यकता की संतुष्टि होने पर व्यक्ति उच्च स्तर की नई आवश्यकताओं की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति उनके अधिगम, सहभागिता एवं उपलब्धि को प्रभावित करती है।

### 10.3.2 मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त का परिचय

मैस्लो का आवश्यकता श्रेणी क्रम सिद्धान्त मानवतावादी मनोविज्ञान पर आधारित प्रेरणा का प्रमुख सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव की आवश्यकताएँ एक निश्चित श्रेणी क्रम (Hierarchy) में व्यवस्थित होती हैं। निम्न स्तर की आवश्यकताओं की संतुष्टि के पश्चात ही व्यक्ति उच्च स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रेरित होता है। मास्लो ने आवश्यकताओं को पाँच स्तरों—शारीरिक, सुरक्षा, प्रेम, अपनत्व, सम्मान तथा आत्म-साक्षात्कार—में विभाजित किया। प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर आत्म-साक्षात्कार (Self-Actualization) प्राप्त करना है।

यह सिद्धान्त व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, आत्म-विकास एवं सकारात्मक क्षमता पर बल देता है। शिक्षा के संदर्भ में यह सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की संतुष्टि प्रभावी अधिगम, आंतरिक प्रेरणा तथा समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए अनिवार्य है।

मुख्य विचार: "विद्यार्थी तभी प्रभावी ढंग से सीख सकता है, जब उसकी मूलभूत आवश्यकताओं की संतुष्टि सुनिश्चित हो।"

### मास्लो की आवश्यकताओं के पाँच स्तर

- (i) शारीरिक आवश्यकताएँ
- (ii) सुरक्षा की आवश्यकता
- (iii) प्रेम एवं अपनत्व की आवश्यकता
- (iv) सम्मान (आत्म-सम्मान) की आवश्यकता
- (v) आत्म-साक्षात्कार की आवश्यकता

### सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएँ

- यह मानवतावादी मनोविज्ञान पर आधारित प्रेरणा का प्रमुख सिद्धान्त है।

- मानव आवश्यकताओं को क्रमबद्ध (Hierarchy) रूप में प्रस्तुत करता है।
- निम्न स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद ही उच्च स्तर की आवश्यकताएँ सक्रिय होती हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति में आत्म-विकास एवं आत्म-साक्षात्कार की स्वाभाविक क्षमता होती है।
- यह बाह्य पुरस्कारों की अपेक्षा आंतरिक प्रेरणा को अधिक महत्व देता है।
- सिद्धान्त व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता एवं सकारात्मक क्षमता पर बल देता है।
- यह समग्र व्यक्तित्व विकास तथा मानसिक संतुष्टि को अधिगम का आधार मानता है।

### शिक्षा में सिद्धान्त का अनुप्रयोग

- विद्यार्थियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर प्रभावी अधिगम सुनिश्चित करना।
- विद्यालय में सुरक्षित, सहयोगात्मक एवं भयमुक्त वातावरण का निर्माण करना।
- प्रेम, अपनत्व एवं सहभागिता की भावना विकसित करना।
- विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं आत्म-सम्मान को प्रोत्साहित करना।
- व्यक्तिगत रुचि एवं क्षमता के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान करना।
- रचनात्मकता, नवाचार एवं आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना।
- छात्र-केंद्रित एवं समावेशी शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करना।

### जाँच करें अपनी प्रगति

1. मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त से क्या अभिप्राय है?
2. मास्लो द्वारा बताई गई पाँच आवश्यकताओं के नाम लिखिए।
3. शिक्षा में मास्लो के सिद्धान्त का एक प्रमुख महत्व लिखिए।

### सिद्धान्त का शैक्षिक महत्व

- विद्यार्थी प्रेरणा को समझने का प्रभावी आधार प्रदान करता है।
- अधिगम के लिए अनुकूल एवं सकारात्मक वातावरण विकसित करने में सहायक है।
- समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल देता है।
- शिक्षक को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं को समझने में सहायता करता है।
- आत्मविश्वास, आत्मसम्मान एवं आत्मनिर्भरता का विकास करता है।
- समावेशी एवं छात्र-केंद्रित शिक्षा को प्रोत्साहित करता है।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं मानवीय बनाता है।

### सिद्धान्त की सीमाएँ

- सभी व्यक्तियों की आवश्यकताएँ हमेशा एक ही क्रम में विकसित नहीं होतीं।
- विभिन्न संस्कृतियों एवं सामाजिक परिस्थितियों में इसकी सार्वभौमिकता सीमित है।
- सिद्धान्त के समर्थन में पर्याप्त अनुभवजन्य (Empirical) प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं।
- कई बार व्यक्ति निम्न आवश्यकताओं की पूर्ति के बिना भी उच्च उपलब्धियाँ प्राप्त कर लेता है।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं एवं परिस्थितिजन्य कारकों पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है।

- आवश्यकताओं का स्पष्ट मापन कठिन है।

### सिद्धान्त की आलोचनात्मक समीक्षा

यह सिद्धांत प्रेरणा की मानवीय एवं सकारात्मक व्याख्या प्रस्तुत करता है। मानव की गरिमा, आत्म-विकास एवं क्षमता को महत्व देना इसकी प्रमुख विशेषता है। आवश्यकता श्रेणीक्रम व्यवहार में सदैव निश्चित क्रम का पालन नहीं करता।

विभिन्न संस्कृतियों में आवश्यकताओं का महत्व एवं क्रम भिन्न हो सकता है। इसके अनेक सिद्धान्तों का वैज्ञानिक परीक्षण सीमित रहा है। सीमाओं के बावजूद शिक्षा, प्रबंधन एवं परामर्श के क्षेत्र में इसका व्यापक उपयोग होता है। आधुनिक शिक्षा एवं विद्यार्थी प्रेरणा में प्रासंगिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) के छात्र-केंद्रित एवं समग्र शिक्षा दृष्टिकोण के अनुरूप है।

समावेशी शिक्षा एवं समान अवसरों को बढ़ावा देता है। विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) को सुदृढ़ करता है। मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सुरक्षा एवं विद्यार्थी कल्याण पर बल देता है। आत्म निर्देशित अधिगम, रचनात्मकता एवं नवाचार को प्रोत्साहित करता है। शिक्षक को प्रेरणादायक एवं सहयोगात्मक अधिगम वातावरण विकसित करने में सहायता करता है। 21वीं सदी के कौशल—आत्मविश्वास, सहयोग, समस्या-समाधान एवं आत्म-विकास—के विकास में सहायक है।

विद्यार्थियों को उनकी पूर्ण क्षमता के विकास एवं आत्म-साक्षात्कार की दिशा में प्रेरित करता है।

निष्कर्षात्मक विचार: मास्लो का आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त आज भी शिक्षा मनोविज्ञान का एक अत्यंत प्रभावशाली सिद्धांत है, क्योंकि यह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणा एवं समग्र विकास को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का केंद्र मानता है।

## 10.4 सारांश

अब्राहम मास्लो का आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त मानव प्रेरणा की व्याख्या करने वाला एक महत्वपूर्ण मानवतावादी सिद्धान्त है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताएँ एक निश्चित क्रम में विकसित होती हैं तथा निम्न स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति होने पर ही वह उच्च स्तर की आवश्यकताओं की ओर अग्रसर होता है। मास्लो ने आवश्यकताओं को पाँच स्तरों—शारीरिक, सुरक्षा, प्रेम एवं अपनत्व, सम्मान तथा आत्म-साक्षात्कार—में वर्गीकृत किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में यह सिद्धांत अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह शिक्षकों को विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझने तथा उनके अनुरूप शिक्षण वातावरण विकसित करने की दिशा प्रदान करता है। जब विद्यालय में सुरक्षित, सहयोगात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण उपलब्ध होता है, तब विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वास, सक्रियता और रुचि के साथ अधिगम में भाग लेते हैं। यद्यपि इस सिद्धांत की कुछ सीमाएँ भी हैं, फिर भी विद्यार्थी प्रेरणा, समावेशी शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य तथा समग्र व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से इसकी उपयोगिता आज भी बनी हुई है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में यह सिद्धांत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक मानवीय, छात्र-केंद्रित तथा प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## 10.5 शब्दावली

- I. आवश्यकता (Need) – जरूरत
- II. प्रेरणा (Motivation) – अभिप्रेरणा
- III. श्रेणीक्रम (Hierarchy) – क्रमबद्धता
- IV. शारीरिक आवश्यकता (Physiological Need) – जीवनोपयोगी
- V. सुरक्षा (Safety) – संरक्षण
- VI. अपनत्व (Belongingness) – आत्मीयता
- VII. आत्मसम्मान (Self-esteem) – स्वाभिमान
- VIII. आत्म-साक्षात्कार (Self-actualization) – आत्मबोध
- IX. मानवतावादी दृष्टिकोण (Humanistic Approach) – मानवतावाद
- X. व्यक्तित्व विकास (Personality Development) – व्यक्तित्व-निर्माण

---

## 10.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर सहित)

---

संभावित उत्तर 1 : यह सिद्धांत बताता है कि मानव की आवश्यकताएँ एक क्रम में विकसित होती हैं तथा निम्न स्तर की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद ही व्यक्ति उच्च स्तर की आवश्यकताओं की ओर बढ़ता है।

संभावित उत्तर 2 :

- (i) शारीरिक आवश्यकता
- (ii) सुरक्षा की आवश्यकता
- (iii) प्रेम एवं अपनत्व की आवश्यकता
- (iv) सम्मान (आत्म-सम्मान) की आवश्यकता
- (v) आत्म-साक्षात्कार की आवश्यकता

संभावित उत्तर 3 : यह सिद्धांत शिक्षक को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझकर प्रेरणादायक एवं छात्र-केंद्रित शिक्षण वातावरण विकसित करने में सहायता करता है।

---

## 10.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

---

- # DIKSHA (दीक्षा) पोर्टल – विद्यालय एवं शिक्षक शिक्षा से संबंधित ई-सामग्री।
- # SWAYAM – उच्च शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन पाठ्यक्रम।
- # e-PG Pathshala – विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा विकसित स्नातकोत्तर अध्ययन सामग्री।
- # NROER (National Repository of Open Educational Resources) – मुक्त शैक्षिक संसाधनों का राष्ट्रीय भंडार।
- # NCERT e-Resources – एनसीईआरटी की डिजिटल पुस्तकें एवं ई-सामग्री।
- # e-Gyankosh (IGNOU) – दूरस्थ शिक्षा एवं शिक्षा मनोविज्ञान से संबंधित अध्ययन सामग्री।

---

## 10.8 सन्दर्भ (APA 7th शैली)

---

- मास्लो, ए. एच. (1954). प्रेरणा एवं व्यक्तित्व (Motivation and Personality). न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो.
- मास्लो, ए. एच. (1970). प्रेरणा एवं व्यक्तित्व (द्वितीय संस्करण). हार्पर एंड रो.
- शंख, डी. एच. (2020). अधिगम सिद्धांत: के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य (8 वाँ संस्करण). पियर्सन
- वूलफोक, ए. (2022). शैक्षिक मनोविज्ञान (15 वाँ संस्करण). पियर्सन.
- मंगल, एस. के. (2019). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (द्वितीय संस्करण). पीएचआई लर्निंग.
- पाण्डेय, रामशकल. (2020). शैक्षिक मनोविज्ञान. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
- शर्मा, आर. ए. (2018). शैक्षिक मनोविज्ञान. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

---

## 10.9 अभ्यास के प्रश्न

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQ)

1. मास्लो का सिद्धांत किस मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है?

(अ) व्यवहारवाद

(ब) संज्ञानवाद

(स) मानवतावाद

(द) मनोविश्लेषणवाद

2. मास्लो के अनुसार सुरक्षा की आवश्यकता किस स्तर पर आती है?

(अ) प्रथम

(ब) द्वितीय

(स) तृतीय

(द) चतुर्थ

3. निम्नलिखित में से कौन-सी सामाजिक आवश्यकता है?

(अ) भोजन

(ब) प्रेम एवं अपनत्व

(स) सम्मान

(द) आत्म-साक्षात्कार

4. आत्मसम्मान की आवश्यकता किस स्तर पर स्थित है?

(अ) प्रथम

(ब) द्वितीय

(स) तृतीय

(द) चतुर्थ

5. मैस्लो के अनुसार सर्वोच्च आवश्यकता कौन-सी है?

(अ) सुरक्षा

(ब) सम्मान

(स) प्रेम एवं अपनत्व

(द) आत्म-साक्षात्कार

### **(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न -1 आवश्यकता से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2-मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त की मूल अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न -3 शारीरिक एवं सुरक्षा आवश्यकताओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4- शिक्षा में मास्लो के सिद्धान्त का कोई दो अनुप्रयोग लिखिए।

प्रश्न 5-मास्लो के सिद्धान्त की दो प्रमुख सीमाएँ लिखिए।

### **(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1- मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताओं, शैक्षिक महत्व एवं सीमाओं का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।

प्रश्न 2-आधुनिक शिक्षा एवं विद्यार्थी प्रेरणा के संदर्भ में मास्लो के आवश्यकता श्रेणीक्रम सिद्धान्त की प्रासंगिकता का उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए।

# इकाई -11

## कर्ट लीवन का क्षेत्र सिद्धांत

### 11.1 प्रस्तावना

### 11.2 उद्देश्य

### 11.3 कर्ट लीवन का क्षेत्र सिद्धांत एवं उनके शैक्षिक अनुप्रयोग

### 11.4 सारांश

### 11.5 शब्दावली

### 11.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 11.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 11.8 संदर्भ

### 11.9 अभ्यास

### 11.1 प्रस्तावना

कर्ट लेविन (Kurt Lewin) आधुनिक सामाजिक एवं शैक्षिक मनोविज्ञान के प्रमुख मनोवैज्ञानिकों में से एक थे। उन्होंने क्षेत्र सिद्धान्त (Field Theory) के माध्यम से स्पष्ट किया कि व्यक्ति का व्यवहार केवल उसके व्यक्तित्व का परिणाम नहीं होता, बल्कि व्यक्ति एवं उसके मनोवैज्ञानिक पर्यावरण की पारस्परिक अंतःक्रिया का फल होता है। यह सिद्धांत अधिगम, प्रेरणा, व्यवहार परिवर्तन तथा कक्षा शिक्षण को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, सहयोगात्मक अधिगम तथा सकारात्मक अधिगम वातावरण के निर्माण में इस सिद्धांत का विशेष महत्व है।

प्रत्येक विद्यार्थी का व्यवहार उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं, आवश्यकताओं, उद्देश्यों तथा उसके आसपास के शैक्षिक एवं सामाजिक वातावरण से प्रभावित होता है। कर्ट लेविन का क्षेत्र सिद्धांत इन सभी कारकों के समन्वित प्रभाव को स्पष्ट करता है। यह सिद्धांत शिक्षक को विद्यार्थियों की सीखने की परिस्थितियों, प्रेरणा, व्यवहार तथा समस्याओं को समझने में सहायता प्रदान करता है। इस अध्याय में क्षेत्र सिद्धान्त की मूल अवधारणाओं, उसके प्रमुख घटकों, बल-क्षेत्र विश्लेषण तथा शिक्षा में उसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों का अध्ययन किया जाएगा।

### 11.2 उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् शिक्षार्थी—

- कर्ट लेविन के जीवन एवं योगदान का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- क्षेत्र सिद्धान्त की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।

- क्षेत्र सिद्धान्त के प्रमुख घटकों का वर्णन कर सकेंगे।
- $B = f(P, E)$  व्यवहार सूत्र का अर्थ समझ सकेंगे।
- जीवन-क्षेत्र (Lifespace) की अवधारणा का विश्लेषण कर सकेंगे।
- बल-क्षेत्र विश्लेषण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- अधिगम एवं प्रेरणा में क्षेत्र सिद्धांत की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे।
- क्षेत्र सिद्धान्त के शैक्षिक अनुप्रयोगों का वर्णन कर सकेंगे।
- कक्षा शिक्षण में क्षेत्र सिद्धांत के उपयोग को समझ सकेंगे।
- शिक्षक की भूमिका का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- क्षेत्र सिद्धांत की सीमाओं की पहचान कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षा में क्षेत्र सिद्धांत की प्रासंगिकता का विश्लेषण कर सकेंगे।

### 11.3 कर्ट लेविन का क्षेत्र सिद्धांत एवं उनके शैक्षिक अनुप्रयोग

#### (i) कर्ट लेविन का परिचय

कर्ट लेविन (1890–1947) जर्मन-अमेरिकी मनोवैज्ञानिक तथा आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान के प्रमुख प्रवर्तक थे। उन्होंने क्षेत्र सिद्धान्त (Field Theory) का प्रतिपादन किया, जिसके अनुसार व्यक्ति का व्यवहार उनके व्यक्तित्व एवं मनोवैज्ञानिक पर्यावरण की पारस्परिक अंतःक्रिया का परिणाम होता है। समूह गतिकी (Group Dynamics), नेतृत्व शैली तथा व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

#### (ii) क्षेत्र सिद्धान्त (Field Theory) की अवधारणा

क्षेत्र सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति का व्यवहार केवल उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं से निर्धारित नहीं होता, बल्कि उस समय उपलब्ध मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ भी उसे प्रभावित करती हैं। अतः व्यवहार को समझने के लिए व्यक्ति और उसके परिवेश दोनों का समग्र अध्ययन आवश्यक है।

#### (iii) क्षेत्र सिद्धान्त के प्रमुख घटक

क्षेत्र सिद्धान्त के प्रमुख घटक हैं—

- व्यक्ति (Person), मनोवैज्ञानिक पर्यावरण (Psychological Environment),
- जीवन-क्षेत्र (Life Space),
- लक्ष्य (Goal),
- आवश्यकताएँ (Needs),
- प्रेरक
- अवरोधक बल (Driving and Restraining Forces)। इन सभी की पारस्परिक क्रिया व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है।
- 

#### (iv) व्यवहार का सूत्र $B = f(P, E)$ एवं उसका अर्थ

कर्ट लेविन ने व्यवहार को निम्न सूत्र द्वारा व्यक्त किया—  $B = f(P, E)$  जहाँ  $B = \text{Behaviour}$  (व्यवहार),  $P = \text{Person}$  (व्यक्ति),  $E = \text{Environment}$  (पर्यावरण)। इसका अर्थ है कि व्यक्ति का व्यवहार उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं तथा पर्यावरण के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होता है।

#### (v) जीवन-क्षेत्र (Life Space) की अवधारणा

जीवन-क्षेत्र से आशय उस सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक क्षेत्र से है जिसमें व्यक्ति, उसकी आवश्यकताएँ, लक्ष्य, अनुभव तथा उसके द्वारा अनुभव किया गया वातावरण सम्मिलित होता है। व्यक्ति का प्रत्येक निर्णय एवं व्यवहार उसके जीवन-क्षेत्र से प्रभावित होता है।

#### (vi) बल-क्षेत्र विश्लेषण (Force Field Analysis)

बल-क्षेत्र विश्लेषण वह प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यवहार या परिवर्तन को प्रभावित करने वाले प्रेरक बल (Driving Forces) तथा अवरोधक बल (Restraining Forces) का विश्लेषण किया जाता है। परिवर्तन तभी प्रभावी होता है जब प्रेरक बलों को सुदृढ़ तथा अवरोधक बलों को कम किया जाए।

#### (vii) अधिगम एवं प्रेरणा में क्षेत्र सिद्धान्त की भूमिका

यह सिद्धान्त बताता है कि प्रभावी अधिगम के लिए अनुकूल वातावरण, स्पष्ट लक्ष्य तथा सकारात्मक प्रेरणा आवश्यक हैं। जब विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, प्रेरित एवं समर्थ अनुभव करता है, तब उसका अधिगम अधिक प्रभावी एवं स्थायी होता है।

#### (viii) क्षेत्र सिद्धान्त के शैक्षिक अनुप्रयोग

क्षेत्र सिद्धान्त का उपयोग विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, सकारात्मक कक्षा वातावरण, सहयोगात्मक अधिगम, व्यवहार संशोधन, परामर्श एवं मार्गदर्शन तथा सीखने की बाधाओं की पहचान एवं समाधान में किया जाता है।

#### (ix) कक्षा शिक्षण में क्षेत्र सिद्धान्त का उपयोग

शिक्षक विद्यार्थियों की रुचि, आवश्यकताओं एवं व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण की योजना बनाता है। सहयोगात्मक गतिविधियाँ, प्रेरणादायक वातावरण तथा सक्रिय सहभागिता के माध्यम से अधिगम को अधिक प्रभावी बनाया जाता है।

#### (x) शिक्षक की भूमिका

शिक्षक का दायित्व है कि वह प्रेरक एवं सहयोगात्मक अधिगम वातावरण का निर्माण करे, विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने, सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करे तथा प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी क्षमता के अनुसार प्रोत्साहित करे।

#### (xi) क्षेत्र सिद्धान्त की सीमाएँ

यह सिद्धान्त व्यवहार की जटिलता को समझाने में उपयोगी है, किन्तु इसकी अनेक अवधारणाएँ अमूर्त एवं मापन की दृष्टि से कठिन हैं। सभी व्यवहारों की व्याख्या केवल व्यक्ति एवं पर्यावरण के आधार पर नहीं की जा सकती, इसलिए इसकी व्यावहारिक सीमाएँ भी हैं।

### (xii) आधुनिक शिक्षा में क्षेत्र सिद्धान्त की प्रासंगिकता

वर्तमान शिक्षा में समावेशी शिक्षा, विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, सहयोगात्मक अधिगम, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा सकारात्मक कक्षा प्रबंधन को बढ़ावा देने में क्षेत्र सिद्धान्त अत्यंत प्रासंगिक है। यह सिद्धान्त शिक्षकों को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रभावी शिक्षण-अधिगम वातावरण विकसित करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

### जाँच करें अपनी प्रगति

1. क्षेत्र सिद्धान्त के प्रतिपादक कौन हैं?
2.  $B = f(P, E)$  में E का अर्थ क्या है?
3. Life Space का संबंध किससे है?
4. Force Field Analysis का उपयोग किसके लिए किया जाता है?
5. क्षेत्र सिद्धान्त का मुख्य आधार क्या है?

---

## 11.4 सारांश

---

कर्ट लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति का व्यवहार उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं तथा मनोवैज्ञानिक पर्यावरण की पारस्परिक क्रिया का परिणाम होता है। यह सिद्धान्त अधिगम, प्रेरणा, व्यवहार परिवर्तन तथा कक्षा प्रबंधन को समझने का प्रभावी आधार प्रदान करता है। शिक्षक यदि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, उद्देश्यों तथा अधिगम वातावरण को ध्यान में रखकर शिक्षण करें, तो अधिगम अधिक प्रभावी एवं सार्थक बन सकता है। आधुनिक विद्यार्थी-केंद्रित एवं समावेशी शिक्षा में इस सिद्धान्त की उपयोगिता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

---

## 11.5 शब्दावली

---

- क्षेत्र सिद्धान्त (Field Theory): अन्तःक्रिया (Interaction)
- जीवन-क्षेत्र (Life Space): समग्रता (Totality)
- व्यवहार (Behaviour): अनुक्रिया (Response)
- मनोवैज्ञानिक पर्यावरण: अनुभूति (Perception)
- बल-क्षेत्र विश्लेषण: संतुलन (Balance)

---

## 11.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

---

उत्तर 1 : कर्ट लेविन।

उत्तर 2 : पर्यावरण (Environment)।

उत्तर 3 : व्यक्ति एवं उसके मनोवैज्ञानिक पर्यावरण से।

उत्तर 4 : परिवर्तन को प्रभावित करने वाले प्रेरक एवं अवरोधक बलों के विश्लेषण के लिए।

उत्तर 5 : व्यक्ति और पर्यावरण की पारस्परिक अंतःक्रिया।

---

### 11.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

---

- NCERT – शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री।
- ePG Pathshala – Educational Psychology एवं Learning Theories।
- SWAYAM – अधिगम एवं शैक्षिक मनोविज्ञान संबंधी ऑनलाइन पाठ्यक्रम।
- DIKSHA Portal – शिक्षक एवं शिक्षार्थियों हेतु डिजिटल शिक्षण सामग्री।
- NROER (National Repository of Open Educational Resources) – मुक्त शैक्षिक संसाधन एवं ई-सामग्री।

---

### 11.8 सन्दर्भ (APA शैली)

---

- लेविन, कर्ट. (1936). प्रिंसिपल्स ऑफ टोपोलॉजिकल साइकोलॉजी (Principles of Topological Psychology). मैकग्रा-हिल (McGraw-Hill)।
- लेविन, कर्ट. (1951). फील्ड थ्योरी इन सोशल साइंस (Field Theory in Social Science). हार्पर एंड रो (Harper & Row)।
- वूलफोक, अनीता. (2022). शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology) (15 वाँ संस्करण). पियर्सन (Pearson)।
- शंक, डेल एच. (2020). लर्निंग थ्योरी: एन एजुकेशनल पर्सपेक्टिव (Learning Theories: An Educational Perspective) (8 वाँ संस्करण). पियर्सन (Pearson)।
- मंगल, एस. के. (2019). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (Advanced Educational Psychology) (द्वितीय संस्करण). पीएचआई लर्निंग (PHI Learning)।

---

### 11.9 अभ्यास के प्रश्न

---

(क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. क्षेत्र सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं—

(अ) जीन पियाजे

(ब) कर्ट लेविन

(स) बी. एफ. स्किनर

(द) एडवर्ड थार्नडाइक

उत्तर: (ब)

2.  $B = f(P, E)$  में P का अर्थ है—

(अ) प्रक्रिया

(ब) व्यक्ति

(स) प्रतिफल

(द) प्रदर्शन

उत्तर: (ब)

3. Lifespace का संबंध है—

(अ) शारीरिक विकास

(ब) मनोवैज्ञानिक वातावरण

(स) सामाजिक वर्ग

(द) बुद्धि लब्धि

उत्तर: (ब)

4. Force Field Analysis का उद्देश्य है—

(अ) बुद्धि का मापन

(ब) परिवर्तन को प्रभावित करने वाले बलों का विश्लेषण

(स) व्यक्तित्व परीक्षण

(द) उपलब्धि परीक्षण

उत्तर: (ब)

### **(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1- क्षेत्र सिद्धांत की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2- Lifespace से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 3 -  $B = f(P, E)$  सूत्र का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

### **(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न -1 कर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए इसके प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न -2 बल-क्षेत्र विश्लेषण (Force Field Analysis) की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उनके शैक्षिक अनुप्रयोग लिखिए।

प्रश्न -3 आधुनिक शिक्षा में कर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धान्त की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक कीजिए।

# इकाई -12

## अधिगम में अभिरुचि, अभिवृत्ति

### 12.1 प्रस्तावना

### 12.2 उद्देश्य

### 12.3 अधिगम में अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा की भूमिका

### 12.4 सारांश

### 12.5 शब्दावली

### 12.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 12.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 12.8 संदर्भ

### 12.9 अभ्यास

### 12.1 प्रस्तावना

अधिगम केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह शिक्षार्थी की भावनात्मक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से भी गहराई से प्रभावित होता है। इनमें अभिरुचि (Interest), अभिवृत्ति (Attitude) तथा स्व-अवधारणा (Self-concept) तीन प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारक हैं, जो सीखने की गुणवत्ता, उपलब्धि तथा व्यक्तित्व विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। जिस शिक्षार्थी की किसी विषय में अभिरुचि होती है, जिसकी अभिवृत्ति सकारात्मक होती है तथा जिसकी स्व-अवधारणा स्वस्थ एवं आत्मविश्वास पूर्ण होती है, वह अधिक सक्रिय, प्रेरित एवं प्रभावी ढंग से सीखता है। इसलिए आधुनिक शिक्षा में इन तीनों कारकों का विकास शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है।

इस इकाई में अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा की अवधारणा, विशेषता, अधिगम में उनकी भूमिका, पारस्परिक संबंध, विकास के उपाय तथा आधुनिक एवं समावेशी शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाएगा।

प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी रुचियों, दृष्टिकोणों, अनुभवों एवं आत्मबोध के आधार पर सीखता है। यदि विद्यार्थी की किसी विषय में अभिरुचि हो, सीखने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो तथा वह स्वयं को सक्षम एवं योग्य मानता हो, तो उसका अधिगम अधिक सार्थक, स्थायी एवं प्रभावी होता है। इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृत्ति, कम आत्मविश्वास तथा विषय के प्रति अरुचि अधिगम में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) भी विद्यार्थी-केंद्रित, समावेशी एवं अनुभवात्मक शिक्षण पर बल देती है, जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी की रुचि, क्षमता एवं आत्मविश्वास का सम्मान किया जाता है। इस दृष्टि से शिक्षक

का दायित्व केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसा अधिगम वातावरण निर्मित करना भी है जो विद्यार्थियों में सकारात्मक अभिवृत्ति, विषय के प्रति अभिरुचि तथा स्वस्थ स्व-अवधारणा का विकास करे। यह इकाई इन्हीं मनोवैज्ञानिक पक्षों का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

## 12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् शिक्षार्थी—

- अभिरुचि की अवधारणा एवं विशेषताओं को स्पष्ट कर सकेंगे।
- अधिगम में अभिरुचि की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।
- अभिवृत्ति की अवधारणा एवं विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।\*
- अधिगम में अभिवृत्ति के महत्व को समझ सकेंगे।
- स्व-अवधारणा की अवधारणा एवं उसके प्रमुख आयामों की व्याख्या कर सकेंगे।
- अधिगम में स्व-अवधारणा की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।
- अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे।
- शिक्षण-अधिगम में इनका विकास करने के उपायों की पहचान कर सकेंगे।
- इनके शैक्षिक महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- उनकी सीमाओं एवं आलोचनात्मक समीक्षा का विवेचन कर सकेंगे।
- आधुनिक एवं समावेशी शिक्षा में इनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण कर सकेंगे।

## 12.3 अधिगम में अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा की भूमिका

### (i) अभिरुचि (Interest) की अवधारणा

अभिरुचि वह आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जो किसी विषय, कार्य या गतिविधि के प्रति व्यक्ति में आकर्षण एवं सीखने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न करती है। यह अधिगम को सहज, आनंददायक एवं प्रभावी बनाती है।

### (ii) अभिरुचि की विशेषता

अभिरुचि व्यक्तिगत एवं परिवर्तनशील होती है। यह अनुभव, आयु, आवश्यकता तथा वातावरण के अनुसार विकसित होती है। अभिरुचि सीखने में सक्रिय सहभागिता, एकाग्रता एवं निरंतरता को बढ़ाती है।

### (iii) अधिगम में अभिरुचि की भूमिका

अभिरुचि विद्यार्थी को सीखने के लिए प्रेरित करती है, ध्यान एवं एकाग्रता बढ़ाती है तथा अधिगम को स्थायी एवं अर्थपूर्ण बनाती है। यह रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता तथा शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि करती है।

### (iv) अभिवृत्ति (Attitude) की अवधारणा

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु, विषय अथवा परिस्थिति के प्रति विकसित सकारात्मक या नकारात्मक मानसिक प्रवृत्ति है, जो उसके विचार, भावनाओं एवं व्यवहार को प्रभावित करती है।

### **(v) अभिवृत्ति की विशेषताएँ**

अभिवृत्ति अर्जित होती है तथा अनुभव एवं सामाजिक वातावरण से विकसित होती है। यह अपेक्षाकृत स्थायी होती है, किन्तु उचित प्रशिक्षण एवं अनुभव द्वारा परिवर्तित भी की जा सकती है।

### **(vi) अधिगम में अभिवृत्ति की भूमिका**

सकारात्मक अभिवृत्ति सीखने के प्रति उत्साह, आत्मविश्वास एवं निरंतर प्रयास को बढ़ाती है, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति अधिगम में अरुचि, भय एवं कम उपलब्धि का कारण बन सकती है।

### **(vii) स्व-अवधारणा (Self-concept) की अवधारणा**

स्व-अवधारणा से तात्पर्य व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व, क्षमताओं, गुणों एवं सीमाओं के संबंध में स्वयं की धारणा से है। यह व्यक्ति के आत्मविश्वास एवं व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार है।

### **(viii) स्व-अवधारणा के प्रमुख आयाम**

स्व-अवधारणा के प्रमुख आयाम हैं— शैक्षिक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक एवं नैतिक स्व-अवधारणा। इन सभी आयामों का संतुलित विकास व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

### **(ix) अधिगम में स्व-अवधारणा की भूमिका**

सकारात्मक स्व-अवधारणा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म-प्रेरणा, लक्ष्य-निर्धारण एवं उपलब्धि की भावना को विकसित करती है। इसके विपरीत नकारात्मक स्व-अवधारणा सीखने में संकोच एवं असफलता की आशंका बढ़ जाती है।

### **(x) अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा का पारस्परिक संबंध**

अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। विषय के प्रति अभिरुचि सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करती है तथा सकारात्मक अभिवृत्ति स्वस्थ स्व-अवधारणा को सुदृढ़ करती है। तीनों मिलकर प्रभावी अधिगम एवं व्यक्तित्व विकास में योगदान देते हैं।

### **(xi) शिक्षण-अधिगम में इनका विकास करने के उपाय**

विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, सक्रिय अधिगम, सकारात्मक प्रतिपुष्टि, प्रोत्साहन, सहयोगात्मक अधिगम, अनुभवात्मक गतिविधियाँ, व्यक्तिगत भिन्नताओं का सम्मान तथा अनुकूल कक्षा वातावरण के माध्यम से अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा का विकास किया जा सकता है।

### **जाँच करें अपनी प्रगति**

1. अभिरुचि से क्या अभिप्राय है?
2. अभिवृत्ति (Attitude) क्या है?

3. स्व-अवधारणा से क्या तात्पर्य है?
4. सकारात्मक अभिवृत्ति का अधिगम पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. स्वस्थ स्व-अवधारणा का प्रमुख परिणाम क्या है?

### (xii) शैक्षिक महत्व

ये तीनों कारक अधिगम को प्रभावी, स्थायी एवं अर्थपूर्ण बनाते हैं। ये विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, सहयोग, समस्या-समाधान क्षमता, सकारात्मक व्यवहार तथा सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

### (xiii) सीमाएँ

अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा का स्तर प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न होता है तथा समय, अनुभव एवं वातावरण के अनुसार बदल सकता है। इनका वस्तुनिष्ठ मापन कठिन होता है और केवल इन्हीं के आधार पर अधिगम की सफलता का पूर्ण आकलन नहीं किया जा सकता।

### (xiv) आलोचनात्मक समीक्षा

यद्यपि ये मनोवैज्ञानिक कारक अधिगम को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, फिर भी अधिगम केवल इन पर निर्भर नहीं करता। बुद्धि, प्रेरणा, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षण विधियाँ तथा विद्यालय संसाधन भी अधिगम को समान रूप से प्रभावित करते हैं। अतः इनका अध्ययन समग्र शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में किया जाना चाहिए।

### (xv) आधुनिक एवं समावेशी शिक्षा में प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप आधुनिक एवं समावेशी शिक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी की रुचि, क्षमता एवं आत्मसम्मान को महत्व दिया जाता है। अभिरुचि, सकारात्मक अभिवृत्ति एवं स्वस्थ स्व-अवधारणा का विकास विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, सहयोग, नवाचार, जीवन-कौशल तथा आजीवन अधिगम की भावना विकसित करता है। इसलिए वर्तमान विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था में इसका विशेष महत्व है।

---

## 12.4 सारांश-

---

अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा अधिगम को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक निर्धारक हैं। अभिरुचि शिक्षार्थी को सीखने के प्रति प्रेरित करती है, सकारात्मक अभिवृत्ति सीखने में उत्साह एवं निरंतरता बनाए रखती है तथा स्वस्थ स्व-अवधारणा आत्मविश्वास, आत्मसम्मान एवं उपलब्धि की भावना को सुदृढ़ करती है। ये तीनों कारक परस्पर जुड़े हुए हैं और शिक्षार्थी के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

शिक्षक यदि विद्यार्थियों की रुचियों को पहचानकर, सकारात्मक अधिगम वातावरण का निर्माण कर तथा प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान कर शिक्षण करें, तो विद्यार्थियों में सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास का विकास होता है। आधुनिक, समावेशी एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था में इन

मनोवैज्ञानिक कारकों का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है।

---

## 12.5 शब्दावली

---

- # अभिरुचि (Interest) — रुचि
- # अभिवृत्ति (Attitude) — दृष्टिकोण
- # स्व-अवधारणा (Self-concept) — आत्मबोध
- # आत्मविश्वास (Self-confidence) — आत्मबल
- # प्रेरणा (Motivation) — प्रोत्साहन

---

## 12.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

---

1. उत्तर: किसी विषय या कार्य के प्रति स्वाभाविक आकर्षण एवं सीखने की इच्छा।
2. उत्तर: किसी व्यक्ति, वस्तु या विषय के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण।
3. उत्तर: व्यक्ति की अपने गुणों, क्षमताओं एवं व्यक्तित्व के प्रति स्वयं की धारणा।
4. उत्तर: यह अधिगम को अधिक प्रभावी, रुचिकर एवं सफल बनाती है।
5. उत्तर: आत्मविश्वास एवं बेहतर शैक्षिक उपलब्धि।

---

## 12.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

---

NCERT – शैक्षिक मनोविज्ञान एवं अधिगम संबंधी अध्ययन सामग्री।

DIKSHA Portal – शिक्षक एवं शिक्षार्थियों हेतु डिजिटल शिक्षण संसाधन।

SWAYAM – Educational Psychology एवं Teacher Education से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम।

ePG Pathshala – Educational Psychology एवं Learning विषयक ई-सामग्री।

NROER (National Repository of Open Educational Resources) – मुक्त शैक्षिक संसाधन एवं ई-पाठ्य सामग्री।

---

## 12.8 सन्दर्भ (APA शैली)

---

- वूलफोक, ए. (2022). शैक्षिक मनोविज्ञान (15 वाँ संस्करण). पियर्सन प्रकाशन।
- शंख, डी. एच. (2020). अधिगम सिद्धांत: के शैक्षिक परिप्रेक्ष्य (8 वाँ संस्करण). पियर्सन प्रकाशन।
- मंगल, एस. के. (2019). उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (द्वितीय संस्करण). पीएचआई लर्निंग।

- सैट्रॉक, जे. डब्ल्यू. (2021). शैक्षिक
- मनोविज्ञान (7वाँ संस्करण). मैकग्रा-हिल।
- स्लेविन, आर. ई. (2020). शैक्षिक मनोविज्ञान: सिद्धान्त एवं व्यवहार (13 वाँ संस्करण). पियर्सन प्रकाशन।

---

## 12.9 अभ्यास के प्रश्न

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अभिरुचि (Interest) का संबंध किससे है?

- (अ) शारीरिक विकास
- (ब) सीखने के प्रति आकर्षण
- (स) बुद्धि लब्धि
- (द) स्मृति

उत्तर: (ब)

2. सकारात्मक अभिवृत्ति का परिणाम है—

- (अ) अधिगम में अरुचि
- (ब) आत्मविश्वास एवं बेहतर अधिगम
- (स) भय एवं तनाव
- (द) असफलता

उत्तर: (ब)

3. Self-concept का हिंदी रूप है—

- (अ) आत्मनियंत्रण
- (ब) स्व-अवधारणा
- (स) आत्मनिरीक्षण
- (द) आत्म मूल्यांकन

उत्तर: (ब)

4. निम्नलिखित में से कौन-सा स्व-अवधारणा का आयाम है?

(अ) शैक्षिक

(ब) सामाजिक

(स) भावनात्मक

(द) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (द)

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न -1 अभिरुचि की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

अभिवृत्ति की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न - 2 स्व-अवधारणा से क्या अभिप्राय है?

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न 1- अधिगम में अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा की भूमिका का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2 - अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा के पारस्परिक संबंध की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 3. आधुनिक एवं समावेशी शिक्षा में अभिरुचि, अभिवृत्ति एवं स्व-अवधारणा की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

## खण्ड – 04

## इकाई -13

### सीखने की अवधारणा

---

#### 13.1 प्रस्तावना

#### 13.2 उद्देश्य

#### 13.3 शिक्षण की अवधारणा, अर्थ, प्रकृति

##### 13.3.1 अर्थ एवं अवधारणा

##### 13.3.2 शिक्षण की प्रकृति

##### 13.3.3 शिक्षण के उद्देश्य

#### 13.4 सारांश

#### 13.5 शब्दावली

#### 13.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 13.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

#### 13.8 संदर्भ

#### 13.9 अभ्यास

---

### 13.1 प्रस्तावना

---

शिक्षा की सफलता का आधार प्रभावी शिक्षण है। शिक्षण वह सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति तथा व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। आधुनिक शिक्षा में शिक्षण केवल विषय-वस्तु का संप्रेषण नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को सक्रिय, रचनात्मक, चिंतनशील एवं जीवनोपयोगी अनुभव प्रदान करने की प्रक्रिया है। यह अध्याय शिक्षण की अवधारणा, अर्थ, प्रकृति तथा उद्देश्यों का समग्र परिचय प्रस्तुत करता है।

मानव जीवन में शिक्षण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। समाज, संस्कृति तथा ज्ञान की निरंतरता शिक्षण के माध्यम से ही बनी रहती है। बदलते वैश्विक एवं तकनीकी परिवेश में शिक्षण की भूमिका केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह विद्यार्थियों में समस्या-समाधान, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, नैतिक मूल्यों तथा जीवन-कौशलों के विकास का प्रभावी माध्यम बन गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी शिक्षण को विद्यार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी तथा दक्षता मूलक बनाने पर बल देती है।

---

### 13.2 उद्देश्य

---

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् शिक्षार्थी-

- शिक्षण की अवधारणा एवं अर्थ को समझ सकेंगे।
- शिक्षण की प्रमुख विशेषताओं एवं प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे।
- शिक्षण के उद्देश्यों की व्याख्या कर सकेंगे।
- प्रभावी शिक्षण के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षण की विशेषताओं को व्यवहार में लागू कर सकेंगे।

### 13.3 शिक्षण की अवधारणा, अर्थ, प्रकृति एवं उद्देश्य

#### 13.3.1. शिक्षण का अर्थ एवं अवधारणा (Concept and Meaning of Teaching)

##### शिक्षण का अर्थ

शिक्षण (Teaching) एक उद्देश्यपूर्ण, योजनाबद्ध एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षक शिक्षार्थी के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, मूल्यों तथा व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। शिक्षण केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि सीखने के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना है।

##### शिक्षण की अवधारणा

आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षण एक शिक्षार्थी-केंद्रित, सहभागितापूर्ण एवं अंतःक्रियात्मक प्रक्रिया है। इसमें शिक्षक मार्गदर्शक, प्रेरक एवं सह-अधिगमकर्ता की भूमिका निभाता है तथा विद्यार्थी स्वयं अनुभव, चिंतन एवं गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करता है।

##### शिक्षण की प्रमुख विशेषताएँ

- शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है।
- यह शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अंतःक्रिया पर आधारित है।
- शिक्षण योजनाबद्ध एवं संगठित होता है।
- यह अधिगम को सुगम एवं प्रभावी बनाता है।
- शिक्षण व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया है।
- यह निरंतर मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि पर आधारित होता है।
- आधुनिक शिक्षण विद्यार्थी-केंद्रित एवं अनुभवात्मक होता है।

#### 13.3.2 शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching)

शिक्षण की प्रकृति उसकी मूल विशेषताओं एवं कार्यप्रणाली को स्पष्ट करती है। शिक्षण की प्रमुख प्रकृतियाँ निम्नलिखित हैं -

(i) **उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया**- शिक्षण पूर्व निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

(ii) **सामाजिक प्रक्रिया**- यह शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच सक्रिय सामाजिक अंतःक्रिया पर आधारित है।

(iii) **गतिशील प्रक्रिया**-समय, परिस्थिति एवं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण में परिवर्तन होता रहता है।

(iv) **विद्यार्थी-केंद्रित प्रक्रिया** - आधुनिक शिक्षण में विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, अनुभव एवं आवश्यकताओं को महत्व दिया जाता है।

(v) **वैज्ञानिक प्रक्रिया**-शिक्षण मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, अनुसंधान तथा वैज्ञानिक विधियों पर आधारित होता है।

(vi) **सृजनात्मक प्रक्रिया**-यह विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति, नवाचार एवं रचनात्मक चिंतन का विकास करता है।

(vii) **मूल्यपरक प्रक्रिया**-शिक्षण ज्ञान के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का भी विकास करता है।

(viii) **सतत् मूल्यांकन आधारित प्रक्रिया**- शिक्षण में निरंतर मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि के आधार पर सुधार किया जाता है।

**जाँच करें अपनी प्रगति**

1. शिक्षण से क्या अभिप्राय है?
2. आधुनिक शिक्षण की दो विशेषताएँ लिखिए।
3. शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
4. शिक्षण को वैज्ञानिक प्रक्रिया क्यों कहा जाता है?
5. शिक्षण में मूल्यांकन का क्या महत्व है?

### 13.3.3 शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching)

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास करना है।

शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य विषय का ज्ञान एवं समझ विकसित करना।

बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता का विकास करना।

समस्या-समाधान एवं आलोचनात्मक चिंतन विकसित करना।

व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी कौशलों का विकास करना।

सृजनात्मकता एवं नवाचार को प्रोत्साहित करना।

नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास करना।

प्रभावी संप्रेषण एवं सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देना।

आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता विकसित करना।

लोकतांत्रिक एवं उत्तरदायी नागरिक बनाना।

जीवनपर्यन्त अधिगम की प्रवृत्ति विकसित करना।

### 13.4 सारांश

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण, वैज्ञानिक, सामाजिक एवं विद्यार्थी-केंद्रित प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। प्रभावी शिक्षण विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, मूल्य, सृजनात्मकता तथा जीवन-कौशलों का विकास करता है। आधुनिक शिक्षा में शिक्षण को सहभागितापूर्ण, अनुभवात्मक तथा दक्षता मूलक बनाया गया है, जिससे शिक्षार्थी सक्रिय रूप से सीखते हुए जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें।

### 13.5 शब्दावली-

- शिक्षण-अधिगम को सुगम बनाने की प्रक्रिया
- अवधारणा-किसी विषय का मूल विचार
- अधिगम-अनुभव द्वारा व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन
- अंतःक्रिया-दो या अधिक व्यक्तियों के बीच पारस्परिक संवाद
- मूल्यांकन-उपलब्धि एवं प्रगति का आकलन
- 

### 13.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर)

1. उत्तर: शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल एवं व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाता है।
2. उत्तर: (i) विद्यार्थी-केंद्रित (ii) सहभागितापूर्ण एवं अनुभवात्मक।
3. उत्तर: शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास करना।
4. उत्तर: क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों, शोध एवं वैज्ञानिक विधियों पर आधारित होता है।
5. उत्तर: मूल्यांकन से अधिगम की प्रगति ज्ञात होती है तथा शिक्षण में आवश्यक सुधार किए जाते हैं।

### 13.7 सहायक पाठ्य सामग्री (मुक्त शैक्षिक संसाधन)

- NCERT e-Pathshala
- DIKSHA Portal
- SWAYAM
- e-PG Pathshala
- NROER (National Repository of Open Educational Resources)

---

### 13.8 संदर्भ -

---

- Aggarwal, J. C. (2022). Principles, Methods and Techniques of Teaching. Vikas Publishing House.
- Mangal, S. K., & Mangal, U. (2020). Essentials of Educational Psychology. PHI Learning.
- Bhatia, K. K., & Bhatia, B. D. (2019). The Principles and Methods of Teaching. Kalyani Publishers.
- NCFTE. (2009). National Curriculum Framework for Teacher Education. NCTE.
- Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.

---

### 13.9 अभ्यास के प्रश्न

---

#### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शिक्षण मुख्यतः किस प्रकार की प्रक्रिया है?

(अ) आकस्मिक

(ब) उद्देश्यपूर्ण

(स) अनियोजित

(द) प्राकृतिक

2. आधुनिक शिक्षण का केंद्र कौन है?

(अ) शिक्षक

(ब) प्रधानाचार्य

(स) विद्यार्थी

(द) पाठ्यपुस्तक

3. शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

(अ) केवल परीक्षा उत्तीर्ण कराना

(ब) केवल जानकारी देना

(स) शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास करना

(द) गृहकार्य देना

4. शिक्षण की कौन-सी विशेषता सही है?

(अ) स्थिर प्रक्रिया

(ब) गतिशील प्रक्रिया

(स) निष्क्रिय प्रक्रिया

(द) असंगठित प्रक्रिया

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न-1 शिक्षण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न -2 शिक्षण की चार प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न -3 शिक्षण के उद्देश्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

प्रश्न-1 शिक्षण की अवधारणा, अर्थ एवं प्रकृति का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

प्रश्न -2 शिक्षण के उद्देश्यों का शैक्षिक दृष्टि से विश्लेषण कीजिए।

## इकाई -14

### शिक्षण की प्रक्रिया एवं रणनीतियाँ

#### 14.1 प्रस्तावना

#### 14.2 उद्देश्य

#### 14.3 शिक्षण के सिद्धान्त एवं व्यावहारिक निहितार्थ

#### 14.4 सारांश

#### 14.5 शब्दावली

#### 14.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 14.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

#### 14.8 संदर्भ

#### 14.9 अभ्यास

#### 14.1 प्रस्तावना

शिक्षण एक नियोजित, उद्देश्यपूर्ण एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, मूल्य तथा व्यवहारगत परिवर्तन का विकास करता है। प्रभावी शिक्षण केवल विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह विभिन्न शिक्षण सिद्धान्तों पर आधारित होता है, जो अधिगम को अधिक अर्थपूर्ण, सक्रिय एवं स्थायी बनाते हैं। प्रत्येक शिक्षण सिद्धान्त शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के किसी न किसी महत्वपूर्ण पक्ष पर बल देता है तथा शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों के चयन में मार्गदर्शन प्रदान करता है। इन सिद्धान्तों का व्यावहारिक उपयोग शिक्षण को अधिक प्रभावी, विद्यार्थी-केंद्रित तथा परिणामोन्मुख बनाता है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में केवल सैद्धान्तिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस ज्ञान का कक्षा-शिक्षण में प्रभावी अनुप्रयोग भी आवश्यक है। शिक्षण के सिद्धान्त शिक्षक को यह समझने में सहायता करते हैं कि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुरूप शिक्षण कैसे किया जाए। इन सिद्धान्तों के व्यावहारिक निहितार्थों के माध्यम से शिक्षक उपयुक्त शिक्षण विधियों, शिक्षण-सामग्री, मूल्यांकन तकनीकों तथा कक्षा-प्रबंधन की प्रभावी रणनीतियों का चयन कर सकता है। इससे शिक्षण अधिक सहभागितापूर्ण, प्रेरणादायक, अनुभवात्मक एवं अधिगम-केंद्रित बनता है। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षण-कौशल के विकास तथा अधिगम परिणामों की प्राप्ति के लिए शिक्षण सिद्धान्त एवं उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग का समुचित ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।

#### 14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी—

- शिक्षण सिद्धांत की अवधारणा एवं आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- प्रमुख शिक्षण सिद्धांत की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
- शिक्षण सिद्धांत के शैक्षिक महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विभिन्न सिद्धान्तों के व्यावहारिक निहितार्थों को कक्षा-शिक्षण से जोड़ सकेंगे।
- प्रभावी शिक्षण हेतु उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों और विधियों का चयन कर सकेंगे।
- विद्यार्थी-केंद्रित एवं परिणामोन्मुख शिक्षण की योजना बनाने में सक्षम होंगे।

---

## 14.3 शिक्षण के सिद्धान्त एवं व्यावहारिक निहितार्थ

---

### 1. शिक्षण सिद्धांत की अवधारणा एवं अर्थ-

#### (Concept and Meaning of Teaching Principles)

शिक्षण सिद्धान्त वे मूलभूत नियम एवं मार्गदर्शक विचार हैं जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी, उद्देश्यपूर्ण एवं व्यवस्थित बनाते हैं। ये शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण विधियों, रणनीतियों तथा मूल्यांकन तकनीकों के चयन में सहायता प्रदान करते हैं।

### 2. शिक्षण सिद्धांत की प्रकृति

#### (Nature of Teaching Principles)

शिक्षण सिद्धान्त गतिशील, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं विद्यार्थी-केंद्रित होते हैं। ये परिस्थितियों, विषय-वस्तु तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार लचीले रूप में लागू किए जाते हैं तथा शिक्षण को प्रभावी एवं सार्थक बनाते हैं।

### 3. शिक्षण सिद्धांत की आवश्यकता एवं महत्व

#### (Need and Importance of Teaching Principles)

शिक्षण सिद्धान्त शिक्षण को योजनाबद्ध, व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण बनाते हैं। इसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुरूप शिक्षण कर सकता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी एवं स्थायी बनता है।

### 4. शिक्षण के प्रमुख सिद्धान्त

#### (Major Principles of Teaching)

प्रभावी शिक्षण के लिए विभिन्न सिद्धान्तों का समन्वित उपयोग आवश्यक है। प्रमुख सिद्धान्त हैं—

- प्रेरणा का सिद्धांत
- उद्देश्य की स्पष्टता का सिद्धांत

- क्रियाशीलता का सिद्धान्त
- ज्ञात से अज्ञात का सिद्धान्त
- सरल से जटिल का सिद्धान्त
- मूर्त से अमूर्त का सिद्धान्त
- विशेष से सामान्य का सिद्धान्त
- पूर्ण से अंश की ओर का सिद्धान्त
- अनुभव द्वारा अधिगम का सिद्धान्त
- व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त
- पुनर्बलन एवं अभ्यास का सिद्धान्त
- सहयोग एवं सहभागिता का सिद्धान्त
- पुनरावृत्ति एवं मूल्यांकन का सिद्धान्त

## 5. शिक्षण सिद्धान्तों के व्यावहारिक निहितार्थ एवं कक्षा-शिक्षण में अनुप्रयोग

### (Practical Implications and Classroom Application)

शिक्षण सिद्धान्तों का उपयोग पाठ-योजना निर्माण, उपयुक्त शिक्षण विधियों के चयन, शिक्षण-सहायक सामग्री के प्रयोग, कक्षा-प्रबंधन, विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने तथा प्रभावी मूल्यांकन में किया जाता है। इससे शिक्षण अधिक सक्रिय, रुचिकर एवं परिणामोन्मुख बनता है।

## 6. शिक्षण सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व

### (Educational Importance)

शिक्षण सिद्धान्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आधार हैं। ये विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता तथा नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होते हैं।

### जाँच करें अपनी प्रगति

1. शिक्षण सिद्धान्त से क्या अभिप्राय है?
2. शिक्षण के दो प्रमुख सिद्धान्त लिखिए।
3. व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धान्त का क्या महत्व है?
4. पुनर्बलन का सिद्धान्त और क्यों आवश्यक है?
5. NEP-2020 के अनुसार शिक्षण की प्रमुख विशेषता क्या है?

## 7. शिक्षण सिद्धान्त की सीमाएँ

कोई भी शिक्षण सिद्धान्त सभी परिस्थितियों में समान रूप से प्रभावी नहीं होता। विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं, संसाधनों की उपलब्धता, समय, विषय-वस्तु तथा कक्षा के वातावरण के अनुसार इनके प्रयोग में परिवर्तन करना आवश्यक होता है।

### 8. शिक्षण सिद्धान्तों की आलोचनात्मक समीक्षा

शिक्षण सिद्धान्त प्रभावी शिक्षण का आधार प्रदान करते हैं, परन्तु उनका यांत्रिक प्रयोग उचित नहीं है। शिक्षक को परिस्थिति, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा आधुनिक शैक्षिक परिवर्तनों के अनुसार उनका विवेकपूर्ण एवं लचीला उपयोग करना चाहिए।

### 9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति

शिक्षण सिद्धान्तों की प्रासंगिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षण को विद्यार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक, बहु विषयक, समावेशी एवं बनाने पर बल देती है। शिक्षण सिद्धान्त इन उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा गुणवत्तापूर्ण अधिगम को बढ़ावा देते हैं।

### 10. आधुनिक एवं प्रौद्योगिकी-समर्थ शिक्षण में शिक्षण सिद्धान्त की भूमिका

डिजिटल युग में शिक्षण सिद्धान्त ऑनलाइन शिक्षण, स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मिश्रित अधिगम (Blended Learning) तथा सहयोगात्मक अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हैं। ये तकनीक के उचित एवं उद्देश्यपूर्ण उपयोग का मार्गदर्शन करते हैं।

### 11. निष्कर्ष

शिक्षण सिद्धान्त प्रभावी, वैज्ञानिक एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण की आधारशिला हैं। इनके उचित एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग से शिक्षण अधिक सक्रिय, सहभागितापूर्ण, रुचिकर तथा परिणामोन्मुख बनता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए इन सिद्धान्तों का ज्ञान एवं उनका प्रभावी उपयोग प्रत्येक शिक्षक के लिए अनिवार्य है।

---

## 14.4 सारांश

---

शिक्षण के सिद्धान्त प्रभावी एवं वैज्ञानिक शिक्षण की आधारशिला हैं। ये शिक्षक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की प्रकृति, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा उपयुक्त शिक्षण विधियों के चयन में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इन सिद्धान्तों के व्यावहारिक निहितार्थ कक्षा-शिक्षण को अधिक सक्रिय, सहभागितापूर्ण, रुचिकर एवं परिणामोन्मुख बनाते हैं। अतः प्रत्येक शिक्षक के लिए इन सिद्धान्तों का सैद्धान्तिक ज्ञान एवं उनका व्यावहारिक अनुप्रयोग समान रूप से आवश्यक है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

---

## 14.5 शब्दावली-

---

- शिक्षण सिद्धान्त – शिक्षण को प्रभावी बनाने वाले मूल नियम एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त।
- प्रेरणा – सीखने के लिए आंतरिक या बाह्य प्रेरणा शक्ति।

- पुनर्बलन – उचित व्यवहार या अधिगम को प्रोत्साहित करने की प्रक्रिया।
- व्यक्तिगत भिन्नता – विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता एवं अधिगम गति में अंतर।
- सहभागिता – शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी।
- अनुभवात्मक अधिगम – प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया।
- मूल्यांकन – अधिगम उपलब्धियों एवं शिक्षण की प्रभावशीलता का आकलन।

---

## 14.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर)

---

1. उत्तर: शिक्षण सिद्धान्त के मूल नियम एवं दिशा निर्देश हैं जो शिक्षण को प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण बनाते हैं।
2. उत्तर: (i) प्रेरणा का सिद्धान्त (ii) क्रियाशीलता का सिद्धान्त।
3. उत्तर: यह प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता, रुचि एवं अधिगम गति के अनुसार शिक्षण करने पर बल देता है।
4. उत्तर: यह विद्यार्थियों को सही अधिगम एवं सकारात्मक व्यवहार के लिए प्रेरित करता है।
5. उत्तर: विद्यार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक एवं दक्षता मूलक शिक्षण।

---

## 14.7 सहायक पाठ्य सामग्री (मुक्त शैक्षिक संसाधन)

---

- NCERT e-Pathshala
- DIKSHA Portal
- SWAYAM
- e-PG Pathshala
- NROER (National Repository of Open Educational Resources)

---

## 14.8 संदर्भ (APA शैली)

---

- Aggarwal, J. C. (2022). Principles, Methods and Techniques of Teaching. Vikas Publishing House.
- Bhatia, K. K., & Bhatia, B. D. (2019). The Principles and Methods of Teaching. Kalyani Publishers.
- Mangal, S. K., & Mangal, U. (2020). Essentials of Educational Psychology. PHI Learning.

- Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- Woolfolk, A. (2022). Educational Psychology (15th ed.). Pearson.

---

## 14.9 अभ्यास के प्रश्न

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

#### 1. शिक्षण सिद्धान्तों का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (अ) केवल परीक्षा कराना
- (ब) शिक्षण को प्रभावी बनाना
- (स) अनुशासन बनाए रखना
- (द) गृहकार्य देना

#### 2. 'ज्ञात से अज्ञात' किसका सिद्धान्त है?

- (अ) शिक्षण सिद्धान्त
- (ब) मूल्यांकन सिद्धान्त
- (स) प्रशासनिक सिद्धान्त
- (द) प्रबंधन सिद्धान्त

#### 3. निम्न में से कौन-सा शिक्षण का प्रमुख सिद्धान्त है?

- (अ) प्रेरणा
- (ब) दण्ड
- (स) प्रतियोगिता
- (द) नियंत्रण

#### 4. पुनर्बलन का सम्बन्ध किससे है?

- (अधिगम को सुदृढ़ करना)
- (ब) परीक्षा लेना
- (स) समय-सारणी बनाना

(द) गृहकार्य देना

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. शिक्षण सिद्धांत की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
2. शिक्षण के चार प्रमुख सिद्धान्तों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. शिक्षण सिद्धांतों का शैक्षिक महत्व लिखिए।

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. शिक्षण के प्रमुख सिद्धान्तों का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए उनके व्यावहारिक निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में शिक्षण सिद्धांतों की प्रासंगिकता का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

# इकाई -15

## शिक्षण की विधियाँ

### 15.1 प्रस्तावना

### 15.2 उद्देश्य

### 15.3 शिक्षण की विधियाँ एवं सहायक साधन

### 15.4 सारांश

### 15.5 शब्दावली

### 15.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 15.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 15.8 संदर्भ

### 15.9 अभ्यास

### 15.1 प्रस्तावना

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण, योजनाबद्ध एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थियों में ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों का विकास करना है। इस उद्देश्य की प्रभावी प्राप्ति के लिए केवल विषय-वस्तु का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता, बल्कि शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण विधियों तथा शिक्षण सहायक साधनों का भी समुचित ज्ञान होना आवश्यक है। शिक्षण विधियाँ विषय-वस्तु को व्यवस्थित एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का मार्ग प्रदान करती हैं, जबकि शिक्षण सहायक साधन अधिगम को सरल, स्पष्ट, रोचक तथा स्थायी बनाते हैं।

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहा है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), डिजिटल शिक्षण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मिश्रित अधिगम (Blended Learning) तथा अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) ने शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, सहभागी एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बनाया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी शिक्षण में नवीन विधियों, डिजिटल संसाधनों तथा बहु-इन्द्रिय अधिगम के उपयोग पर विशेष बल देती है। अतः प्रत्येक शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह विभिन्न शिक्षण विधियों एवं सहायक साधनों का उचित चयन एवं प्रभावी उपयोग करना सीखे, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक गुणवत्तापूर्ण एवं परिणामोन्मुख बन सके।

प्रभावी शिक्षण की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक किस प्रकार की शिक्षण विधि तथा शिक्षण सहायक साधनों का चयन करता है। प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, अधिगम गति तथा अनुभव भिन्न होते हैं; इसलिए सभी परिस्थितियों में एक ही शिक्षण विधि समान रूप से प्रभावी नहीं हो सकती। शिक्षक को शिक्षण उद्देश्यों, विषय-वस्तु, उपलब्ध संसाधनों तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार उपयुक्त विधि एवं सहायक साधनों का चयन करना चाहिए।

शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों में सक्रिय सहभागिता, तार्किक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता, सृजनात्मकता तथा सहयोगात्मक अधिगम को विकसित करती हैं। वहीं शिक्षण सहायक साधन विषय-वस्तु को अधिक स्पष्ट, आकर्षक तथा जीवनोपयोगी बनाते हैं। चार्ट, मॉडल, मानचित्र, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, मल्टीमीडिया, ई-कंटेंट तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे साधन विद्यार्थियों को बहु-इन्द्रिय अनुभव प्रदान करते हैं, जिससे अधिगम अधिक स्थायी एवं अर्थपूर्ण बनता है।

आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के लिए सक्षम बनाना है। इसलिए शिक्षण विधियों एवं सहायक साधनों का समन्वित उपयोग आज गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। एक दक्ष शिक्षक वही है जो परिस्थिति, उद्देश्य तथा शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त शिक्षण विधि एवं सहायक साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग कर सके।

---

## 15.2 उद्देश्य (Objectives)

---

इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी—

- शिक्षण विधि की अवधारणा एवं महत्व को समझ सकेंगे।
- विभिन्न शिक्षण विधियों की विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
- शिक्षण विधियों के चयन के आधारों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- शिक्षण सहायक साधनों के अर्थ, उद्देश्य एवं प्रकारों को स्पष्ट कर सकेंगे।
- दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य तथा ICT आधारित शिक्षण साधनों की उपयोगिता का वर्णन कर सकेंगे।
- कक्षा-शिक्षण में उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं सहायक साधनों का समन्वित उपयोग कर सकेंगे।

---

## 15.3 शिक्षण की विधियाँ एवं सहायक साधन

---

### 1. शिक्षण विधि का अर्थ एवं अवधारणा (Meaning and Concept of Teaching Methods)

शिक्षण विधि से आशय उस व्यवस्थित प्रक्रिया, पद्धति अथवा कार्य-प्रणाली से है जिसके माध्यम से शिक्षक निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विषय-वस्तु का प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण करता है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को क्रमबद्ध, उद्देश्यपूर्ण तथा परिणामोन्मुख बनाती है। शिक्षण विधि केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में चिंतन, विश्लेषण, समस्या-समाधान, सृजनात्मकता तथा व्यवहारगत परिवर्तन विकसित करने का प्रभावी साधन भी है। आधुनिक शिक्षा में शिक्षण विधियाँ

शिक्षार्थी-केंद्रित, सहभागितापूर्ण एवं अनुभवात्मक अधिगम पर आधारित मानी जाती हैं। इनका चयन विषय-वस्तु, शिक्षण उद्देश्यों, विद्यार्थियों की आयु, रुचि, क्षमता तथा उपलब्ध संसाधनों के अनुसार किया जाता है।

### 2. शिक्षण विधियों की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of Teaching Methods)

प्रभावी शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण विधि का चयन अत्यंत आवश्यक है। उचित शिक्षण विधि शिक्षण को व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण एवं रोचक बनाती है तथा विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करती है।

### शिक्षण विधियों का महत्व निम्नलिखित है—

- शिक्षण उद्देश्यों की प्रभावी प्राप्ति में सहायता करती हैं।
- विषय-वस्तु को सरल, स्पष्ट एवं क्रमबद्ध बनाती हैं।
- विद्यार्थियों की रुचि एवं सक्रिय सहभागिता को बढ़ाती हैं।
- तार्किक चिंतन एवं समस्या-समाधान क्षमता का विकास करती हैं।
- अनुभवात्मक एवं क्रियात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करती हैं।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुरूप शिक्षण संभव बनाती हैं।
- अधिगम को स्थायी, अर्थपूर्ण एवं जीवनोपयोगी बनाती हैं।
- मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि को अधिक प्रभावी बनाती हैं।
- शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य प्रभावी अंतःक्रिया स्थापित करती हैं।
- गुणवत्तापूर्ण एवं परिणामोन्मुख शिक्षण को बढ़ावा देती हैं।

### 3. शिक्षण विधियों के प्रकार (Types of Teaching Methods)

शिक्षण उद्देश्यों, विषय-वस्तु तथा शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं के आधार पर अनेक शिक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है। प्रमुख शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित हैं—

#### (i) व्याख्यान विधि (Lecture Method)

यह शिक्षण की सबसे प्राचीन एवं प्रचलित विधि है, जिसमें शिक्षक विषय-वस्तु का मौखिक रूप से क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण करता है। इसका उपयोग विशेष रूप से उच्च कक्षाओं तथा सैद्धान्तिक विषयों के शिक्षण में किया जाता है।

#### (ii) प्रदर्शन विधि (Demonstration Method)

इस विधि में शिक्षक किसी प्रक्रिया, प्रयोग अथवा कौशल का प्रत्यक्ष प्रदर्शन करता है, जिससे विद्यार्थी देखकर एवं समझकर सीखते हैं। विज्ञान, गणित तथा व्यावसायिक शिक्षा में यह अत्यंत उपयोगी है।

#### (iii) चर्चा विधि (Discussion Method)

चर्चा विधि में शिक्षक एवं विद्यार्थी किसी विषय पर विचार-विमर्श करते हैं। इससे तार्किक चिंतन, अभिव्यक्ति क्षमता तथा सहयोगात्मक अधिगम का विकास होता है।

#### (iv) प्रश्नोत्तर विधि (Question–Answer Method)

इस विधि में शिक्षक प्रश्न पूछकर विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान को सक्रिय करता है तथा उत्तरों के माध्यम से नई अवधारणाओं का निर्माण करता है। इससे जिज्ञासा एवं चिंतनशीलता का विकास होता है।

#### (v) समस्या-समाधान विधि (Problem Solving Method)

इस विधि में विद्यार्थियों को वास्तविक अथवा काल्पनिक समस्याएँ दी जाती हैं, जिनका समाधान वे तर्क, विश्लेषण एवं अनुभव के आधार पर करते हैं। यह उच्च स्तरीय चिंतन को विकसित करती है।

#### **(vi) परियोजना विधि (Project Method)**

इस विधि में विद्यार्थी किसी कार्य अथवा परियोजना को योजना बनाकर पूर्ण करते हैं। इससे अनुभवात्मक अधिगम, सहयोग, उत्तरदायित्व एवं सृजनात्मकता का विकास होता है।

#### **(vii) खोज एवं अन्वेषण विधि**

##### **(Inquiry/Discovery Method)**

इस विधि में विद्यार्थी स्वयं खोज, निरीक्षण, प्रयोग एवं विश्लेषण के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं स्वतंत्र अधिगम को प्रोत्साहित करती है।

#### **(viii) सहकारी अधिगम एवं समूह शिक्षण विधि**

##### **(Cooperative Learning and Group Teaching)**

इस विधि में विद्यार्थी समूहों में मिलकर कार्य करते हैं तथा परस्पर सहयोग के माध्यम से अधिगम करते हैं। इससे सामाजिक कौशल, नेतृत्व क्षमता तथा सामूहिक उत्तरदायित्व का विकास होता है।

#### **जाँच करें अपनी प्रगति**

1. शिक्षण विधि से क्या अभिप्राय है?
2. शिक्षण सहायक साधनों का मुख्य उद्देश्य क्या है?
3. दृश्य सहायक साधनों के दो उदाहरण लिखिए।
4. ICT आधारित दो शिक्षण साधनों के नाम लिखिए।
5. शिक्षण विधियों के चयन का एक आधार लिखिए।

---

### **15.4 सारांश (Summary)**

---

शिक्षण विधियाँ एवं सहायक साधन प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण घटक हैं। शिक्षण विधियाँ शिक्षक को विषय-वस्तु प्रस्तुत करने का उचित मार्ग प्रदान करती हैं, जबकि सहायक साधन अधिगम को सरल, स्पष्ट, रोचक एवं स्थायी बनाते हैं।

उपयुक्त शिक्षण विधि का चयन शिक्षण उद्देश्यों, विषय-वस्तु, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा उपलब्ध संसाधनों के आधार पर किया जाना चाहिए। आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थी-केंद्रित, अनुभवात्मक एवं तकनीक-समर्थ शिक्षण को अधिक महत्व दिया जा रहा है।

दृश्य, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य तथा ICT आधारित शिक्षण साधन विद्यार्थियों में रुचि, सक्रियता एवं रचनात्मकता का विकास करते हैं। शिक्षण विधियों एवं सहायक साधनों का समन्वित उपयोग शिक्षण को प्रभावी, गुणवत्तापूर्ण एवं परिणामोन्मुख बनाता है।

अतः प्रत्येक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह विभिन्न शिक्षण विधियों एवं सहायक साधनों का ज्ञान प्राप्त कर उनका उचित एवं विवेकपूर्ण प्रयोग करे, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

---

## 15.5 शब्दावली (Glossary)

---

- शिक्षण विधि (Teaching Method) – विषय-वस्तु को सिखाने की व्यवस्थित प्रक्रिया।
- शिक्षण सहायक साधन (Teaching Aid) – शिक्षण को सरल एवं प्रभावी बनाने वाले उपकरण एवं सामग्री।
- ICT – सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी।
- दृश्य साधन – देखकर सीखने में सहायता करने वाले उपकरण।
- श्रव्य साधन – सुनकर सीखने में सहायता करने वाले उपकरण।
- दृश्य-श्रव्य साधन – देखने एवं सुनने दोनों पर आधारित साधन।
- सहकारी अधिगम – समूह में सहयोग द्वारा सीखने की प्रक्रिया।
- अनुभवात्मक अधिगम – प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखना।
- डिजिटल शिक्षण – तकनीकी संसाधनों द्वारा किया जाने वाला शिक्षण।

---

## 15.6 अपनी प्रगति जाँचें (संभावित उत्तर)

---

1. उत्तर: शिक्षण विधि वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विषय-वस्तु प्रस्तुत करता है।
2. उत्तर: शिक्षण को सरल, स्पष्ट, रोचक एवं प्रभावी बनाना।
3. उत्तर: चार्ट एवं मॉडल।
4. उत्तर: स्मार्ट बोर्ड एवं ई-कंटेंट।
5. उत्तर: शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूपता।

---

## 15.7 पाठ्य सहायक सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

---

- NCERT e-Pathshala
- DIKSHA Portal
- SWAYAM
- e-PG Pathshala

- NROER (National Repository of
- Open Educational Resources)
- शिक्षण एवं अधिगम हेतु डिजिटल संसाधन

---

## 15.8 संदर्भ (APA शैली)

---

- Aggarwal, J. C. (2022). Principles, Methods and Techniques of Teaching. Vikas Publishing House.
- Bhatia, K. K., & Bhatia, B. D. (2019). The Principles and Methods of Teaching. Kalyani Publishers.
- Mangal, S. K., & Mangal, U. (2020). Essentials of Educational Psychology. PHI Learning.
- Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.
- Woolfolk, A. (2022). Educational Psychology (15th ed.). Pearson.

---

## 15.9 अभ्यास सामग्री (Exercise)

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शिक्षण विधि का मुख्य उद्देश्य है—

(अ) समय व्यतीत करना

(ब) प्रभावी अधिगम कराना

(स) केवल परीक्षा लेना

(द) गृहकार्य देना

उत्तर – (ब) प्रभावी अधिगम कराना

2. स्मार्ट बोर्ड किस प्रकार का शिक्षण साधन है?

(अ) दृश्य

(ब) श्रव्य

(स) ICT आधारित

(द) पारंपरिक

उत्तर – (स) ICT आधारित

3. परियोजना विधि किस पर आधारित है?

(अ) अनुभवात्मक अधिगम

(ब) केवल व्याख्यान

(स) रटने की प्रक्रिया

(द) परीक्षा

उत्तर – (अ) अनुभवात्मक अधिगम

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. शिक्षण विधियों की आवश्यकता एवं महत्व स्पष्ट कीजिए।

2. शिक्षण सहायक साधनों के प्रकार लिखिए।

ICT आधारित शिक्षण साधनों का महत्व बताइए।

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. शिक्षण विधियों एवं सहायक साधनों की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उनके महत्व का वर्णन कीजिए।
2. प्रभावी शिक्षण में शिक्षण विधियों एवं शिक्षण सहायक साधनों के समन्वय की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

## इकाई -16

### शिक्षण के प्रकार

---

#### 16.1 प्रस्तावना

#### 16.2 उद्देश्य

#### 16.3 शिक्षण के प्रकार - कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण एवं समूह शिक्षण

#### 16.4 सारांश

#### 16.5 शब्दावली

#### 16.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 16.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

#### 16.8 संदर्भ

#### 16.9 अभ्यास

---

#### 16.1 प्रस्तावना

---

शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण एवं व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण एवं व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षक को विद्यार्थियों की संख्या, उनकी आवश्यकताओं, अधिगम क्षमता तथा परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त शिक्षण प्रकार का चयन करना आवश्यक होता है।

शिक्षण के प्रमुख प्रकारों में कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण एवं समूह शिक्षण महत्वपूर्ण हैं। कक्षा शिक्षण में शिक्षक एक साथ अनेक विद्यार्थियों को शिक्षित करता है, व्यक्तिगत शिक्षण में विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है तथा समूह शिक्षण में सहयोगात्मक एवं सहभागितापूर्ण अधिगम को बढ़ावा दिया जाता है।

शिक्षा में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताएँ महत्वपूर्ण होती हैं। प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति, रुचि, क्षमता एवं अनुभव अलग-अलग होते हैं। इसलिए प्रभावी शिक्षण के लिए विभिन्न शिक्षण प्रकारों की आवश्यकता होती है।

कक्षा शिक्षण बड़े समूहों के लिए उपयोगी है, व्यक्तिगत शिक्षण विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति करता है तथा समूह शिक्षण सहयोग, संचार एवं सामाजिक कौशल का विकास करता है। आधुनिक शिक्षा में इन तीनों शिक्षण प्रकारों का संतुलित प्रयोग विद्यार्थी-केंद्रित एवं प्रभावी अधिगम को सुनिश्चित करता है।

---

## 16.2 उद्देश्य

---

इस इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी—

- शिक्षण के प्रकारों की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- कक्षा, व्यक्तिगत एवं समूह शिक्षण की विशेषताओं को स्पष्ट कर सकेंगे।
- विभिन्न शिक्षण प्रकारों के लाभ एवं सीमाओं को समझ सकेंगे।
- शिक्षण परिस्थितियों के अनुसार उपयुक्त शिक्षण प्रकार का चयन कर सकेंगे।
- आधुनिक शिक्षा एवं NEP-2020 में शिक्षण प्रकारों की भूमिका को समझ सकेंगे।

---

## 16.3 शिक्षण के प्रकार – कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण एवं समूह शिक्षण

---

### 1. शिक्षण के प्रकार : अर्थ एवं अवधारणा

शिक्षण के प्रकार से आशय उन विभिन्न व्यवस्थाओं से है जिनके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान एवं अनुभव प्रदान करता है। शिक्षण का प्रकार विद्यार्थियों की संख्या, उनकी आवश्यकताओं, विषय-वस्तु तथा अधिगम उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है।

मुख्य रूप से शिक्षण के तीन प्रकार हैं—

क) समूह शिक्षण

ख) व्यक्तिगत शिक्षण

ग) कक्षा शिक्षण

### 2. शिक्षण के प्रकारों का वर्गीकरण

शिक्षण का वर्गीकरण मुख्यतः विद्यार्थियों की संख्या एवं शिक्षण व्यवस्था के आधार पर किया जाता है—

#### (क) सामूहिक शिक्षण (Group/Class Teaching)

जिसमें एक शिक्षक अनेक विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षित करता है।

#### (ख) व्यक्तिगत शिक्षण (Individual Teaching)

जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकता एवं क्षमता के अनुसार शिक्षण किया जाता है।

#### (ग) समूह शिक्षण (Group Teaching)

जिसमें विद्यार्थियों को छोटे समूहों में विभाजित कर सहयोगात्मक अधिगम कराया जाता है।

### 3. कक्षा शिक्षण (Classroom Teaching)

अर्थ

कक्षा शिक्षण वह शिक्षण प्रक्रिया है जिसमें एक शिक्षक एक निश्चित समय एवं स्थान पर अनेक विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षण प्रदान करता है।

### विशेषताएँ

- एक शिक्षक एवं अनेक विद्यार्थी होते हैं।
- निश्चित पाठ्यक्रम एवं समय-सारणी होती है।
- सामूहिक अधिगम को बढ़ावा मिलता है।
- शिक्षक का नियंत्रण अधिक होता है।
- सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त होते हैं।

### लाभ

- कम समय में अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा दी जा सकती है।
- आर्थिक एवं समय की दृष्टि से प्रभावी है।
- अनुशासन एवं सामाजिक भावना का विकास होता है।
- पाठ्यक्रम को व्यवस्थित रूप से पूरा किया जा सकता है।

### सीमाएँ

- व्यक्तिगत भिन्नताओं पर कम ध्यान दिया जाता है।
- सभी विद्यार्थियों की गति समान नहीं होती।
- कमजोर विद्यार्थियों को अतिरिक्त सहायता नहीं मिल पाती।

**4. व्यक्तिगत शिक्षण (Individual Teaching) अर्थ** - व्यक्तिगत शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमता, रुचि, आवश्यकता एवं सीखने की गति को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान किया जाता है।

### विशेषताएँ

- विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण।
- व्यक्तिगत ध्यान एवं मार्गदर्शन।
- विद्यार्थी अपनी गति से सीखता है।
- व्यक्तिगत मूल्यांकन किया जाता है।

### लाभ

- विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।
- कमजोर एवं प्रतिभाशाली दोनों विद्यार्थियों के लिए उपयोगी।
- आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता का विकास होता है।

### सीमाएँ

- अधिक समय एवं संसाधनों की आवश्यकता होती है।
- बड़ी कक्षाओं में कठिन होता है।
- शिक्षक पर अधिक कार्यभार पड़ता है।

**5. समूह शिक्षण (Group Teaching)** अर्थ समूह शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थियों को छोटे समूहों में विभाजित करके चर्चा, सहयोग एवं गतिविधियों के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान किए जाते हैं।

### विशेषताएँ

- सहयोगात्मक अधिगम।
- विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता।
- विचारों का आदान-प्रदान।
- नेतृत्व एवं सामाजिक कौशल का विकास।

**लाभ** संचार कौशल विकसित होता है।

- सहयोग एवं नेतृत्व क्षमता बढ़ती है।
- समस्या समाधान एवं चिंतन क्षमता का विकास होता है।

**सीमाएँ** - सभी विद्यार्थियों की समान भागीदारी नहीं होती। समय अधिक लगता है। समूह प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

### 6. कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण एवं समूह शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन

| आधार              | कक्षा शिक्षण  | व्यक्तिगत शिक्षण | समूह शिक्षण      |
|-------------------|---------------|------------------|------------------|
| विद्यार्थी संख्या | अधिक          | एक या बहुत कम    | छोटा समूह        |
| केंद्र            | शिक्षक        | विद्यार्थी       | समूह             |
| गति               | समान          | व्यक्तिगत        | सामूहिक          |
| सहभागिता          | सीमित         | अधिक             | अधिक             |
| उपयोगिता          | सामान्य कक्षा | विशेष आवश्यकता   | सहयोगात्मक अधिगम |

### 7. तीनों शिक्षण प्रकारों के लाभ एवं सीमाएँ

कक्षा शिक्षण व्यापक एवं व्यवस्थित है, परंतु व्यक्तिगत ध्यान सीमित होता है। व्यक्तिगत शिक्षण अधिक प्रभावी एवं विद्यार्थी-केंद्रित है, लेकिन इसमें समय एवं संसाधन अधिक लगते हैं। समूह शिक्षण सहयोग एवं सामाजिक कौशल विकसित करता है, परंतु समूह नियंत्रण की चुनौती रहती है।

## 8. तीनों शिक्षण प्रकारों का शैक्षिक महत्व

विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

अधिगम को प्रभावी एवं स्थायी बनाते हैं।

आत्मविश्वास एवं सहभागिता बढ़ाते हैं।

शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण रणनीति चुनने में सहायता करते हैं। समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देते हैं।

### जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1. शिक्षण के प्रमुख प्रकार कौन-कौन से हैं?

प्रश्न 2. व्यक्तिगत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य क्या है?

प्रश्न 3. समूह शिक्षण किसका विकास करता है?

## 9. आधुनिक शिक्षा में शिक्षण के प्रकारों की प्रासंगिकता

आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण, डिजिटल शिक्षा, मिश्रित अधिगम एवं समावेशी शिक्षा के कारण इन शिक्षण प्रकारों का महत्व बढ़ गया है। ऑनलाइन शिक्षा, स्मार्ट कक्षा एवं ICT के माध्यम से व्यक्तिगत एवं समूह शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

## 10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) के संदर्भ में शिक्षण के प्रकार

NEP-2020 अनुभवात्मक, गतिविधि आधारित, सहयोगात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण पर बल देती है। इसमें विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण व्यवस्था विकसित करने पर जोर दिया गया है।

कक्षा शिक्षण के साथ-साथ व्यक्तिगत अधिगम, समूह गतिविधियाँ, परियोजना कार्य एवं सहयोगात्मक अधिगम को शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग माना गया है।

---

## 16.4 सारांश

---

शिक्षण के प्रकार शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के महत्वपूर्ण साधन हैं। कक्षा शिक्षण सामूहिक ज्ञान प्रदान करता है, व्यक्तिगत शिक्षण विद्यार्थी की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा समूह शिक्षण सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देता है। आधुनिक शिक्षा में इन तीनों का समन्वित प्रयोग अधिक प्रभावी माना जाता है।

---

## 16.5 शब्दावली

---

- शिक्षण (Teaching) – ज्ञान एवं कौशल प्रदान करने की प्रक्रिया।
- कक्षा शिक्षण – अनेक विद्यार्थियों को एक साथ दिया जाने वाला शिक्षण।
- व्यक्तिगत शिक्षण – विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण।

- समूह शिक्षण – समूह में सहयोग द्वारा सीखने की प्रक्रिया।
- सहयोगात्मक अधिगम – मिलकर सीखने की प्रक्रिया।

---

## 16.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

---

1. उत्तर: कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण एवं समूह शिक्षण।
2. उत्तर: विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकता एवं क्षमता के अनुसार अधिगम प्रदान करना।
3. उत्तर: सहयोग, नेतृत्व एवं संचार कौशल का।

---

## 16.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

---

- DIKSHA पोर्टल
- SWAYAM प्लेटफॉर्म
- NCERT ई-पाठ्य सामग्री
- शिक्षक प्रशिक्षण हेतु डिजिटल संसाधन

---

## 16.8 संदर्भ (APA शैली)

---

- Mangal, S. K. (2019). Essentials of Educational Psychology. PHI Learning.
- Woolfolk, A. (2022). Educational Psychology. Pearson.
- NCERT. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.

---

## 16.9 अभ्यास

---

### वस्तुनिष्ठ प्रश्न

कक्षा शिक्षण में शिक्षक किसे शिक्षण प्रदान करता है?

(क) एक विद्यार्थी

(ख) समूह के कुछ विद्यार्थी

(ग) पूरी कक्षा

(घ) कोई नहीं

उत्तर – (ग)

व्यक्तिगत शिक्षण किस पर आधारित होता है?

(क) विद्यार्थी की आवश्यकता

(ख) केवल पाठ्यक्रम

(ग) समय

(घ) परीक्षा

**उत्तर – (क)**

**लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. कक्षा शिक्षण की विशेषताएँ लिखिए।
2. व्यक्तिगत शिक्षण का महत्व स्पष्ट कीजिए।
3. समूह शिक्षण के लाभ बताइए।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत शिक्षण एवं समूह शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
2. आधुनिक शिक्षा में विभिन्न शिक्षण प्रकारों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।
3. NEP-2020 के संदर्भ में शिक्षण प्रकारों की भूमिका समझाइए।

## खण्ड – 05

## इकाई -17

### शैक्षिक मूल्यांकन

---

#### 17.1 प्रस्तावना

#### 17.2 उद्देश्य

#### 17.3 शैक्षिक मूल्यांकन : अवधारणा, उद्देश्य एवं प्रकार

#### 17.4 सारांश

#### 17.5 शब्दावली

#### 17.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 17.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

#### 17.8 संदर्भ

#### 17.9 अभ्यास

---

### 17.1 प्रस्तावना

---

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति किस सीमा तक हुई है, इसका व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक निर्धारण शैक्षिक मूल्यांकन (Educational Evaluation) के माध्यम से किया जाता है। मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है, जो शिक्षार्थियों की उपलब्धियों, क्षमताओं, कौशलों, अभिवृत्तियों तथा व्यवहारगत परिवर्तनों का समग्र आकलन करता है।

वर्तमान समय में मूल्यांकन की अवधारणा केवल परीक्षा एवं अंक प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अधिगम की गुणवत्ता, शिक्षण की प्रभावशीलता तथा विद्यार्थियों के सतत विकास का आधार बन गई है। नई शिक्षा नीति 2020 ने भी दक्षतामूलक, सतत, समग्र एवं शिक्षार्थी-केंद्रित मूल्यांकन पर विशेष बल दिया है।

इस इकाई में शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा, उद्देश्य, प्रकृति, सिद्धान्त, प्रक्रिया, प्रकार, विधियाँ एवं उपकरणों के साथ-साथ मूल्यांकन, मापन एवं परीक्षण के मध्य अंतर, परिणाम-आधारित मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), डिजिटल मूल्यांकन तथा शिक्षक की भूमिका का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा।

शिक्षण तभी प्रभावी माना जाता है जब उसके परिणामों का वस्तुनिष्ठ एवं व्यवस्थित मूल्यांकन किया जाए। शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता का निर्धारण करने के साथ-साथ यह भी स्पष्ट करता है कि निर्धारित अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। यह केवल विद्यार्थियों की

उपलब्धियों का आकलन नहीं करता, बल्कि शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम, शिक्षण-सामग्री तथा सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था की प्रभावशीलता का भी परीक्षण करता है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन को विकासोन्मुख, सतत एवं सुधारात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। यह विद्यार्थियों की सीखने की गति, व्यक्तिगत भिन्नताओं, रुचियों, आवश्यकताओं तथा दक्षताओं की पहचान कर शिक्षण में आवश्यक सुधार का मार्ग प्रशस्त करता है। निर्माणात्मक, संकलनात्मक, निदानात्मक तथा स्थान निर्धारण मूल्यांकन जैसे विभिन्न प्रकार विद्यार्थियों के अधिगम की अलग-अलग अवस्थाओं में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन का स्वरूप अधिक लचीला, बहुआयामी, कौशल-आधारित एवं दक्षतामुखी हो गया है। इसमें रटने पर आधारित परीक्षाओं के स्थान पर चिंतन, समस्या-समाधान, सृजनात्मकता, सहयोग तथा वास्तविक जीवन में ज्ञान के अनुप्रयोग को अधिक महत्व दिया गया है। इस प्रकार शैक्षिक मूल्यांकन केवल उपलब्धि का मापन नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं समग्र विकास का प्रभावी माध्यम है।

---

## 17.2 उद्देश्य

---

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी—

- शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा एवं अर्थ को समझ सकेंगे।
- शैक्षिक मूल्यांकन की प्रमुख परिभाषाओं का वर्णन कर सकेंगे।
- शैक्षिक मूल्यांकन की प्रकृति, विशेषताओं एवं महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
- शैक्षिक मूल्यांकन के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
- शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया को क्रमबद्ध रूप से समझ सकेंगे।
- निर्माणात्मक, संकलनात्मक, निदानात्मक एवं स्थान निर्धारण मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- मूल्यांकन, मापन एवं परीक्षण के मध्य अंतर का विवेचन कर सकेंगे।
- संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक क्षेत्रों में मूल्यांकन की भूमिका को समझ सकेंगे।
- शैक्षिक मूल्यांकन की प्रमुख विधियों एवं उपकरणों का उपयोग समझ सकेंगे।
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), परिणाम-आधारित तथा दक्षता मूलक मूल्यांकन की अवधारणा का विश्लेषण कर सकेंगे।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में मूल्यांकन की नवीन प्रवृत्तियों को समझ सकेंगे।
- शैक्षिक मूल्यांकन में शिक्षक की भूमिका, चुनौतियों तथा सुधार के उपायों का विवेचन कर सकेंगे।

---

## 17.3 शैक्षिक मूल्यांकन : अवधारणा, उद्देश्य एवं प्रकार

---

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास की एक सतत प्रक्रिया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को विषय-वस्तु का ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनके ज्ञान, समझ, कौशल, व्यवहार, दृष्टिकोण, रुचि, अभिवृत्ति तथा व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन लाना भी है। यह जानना आवश्यक होता है कि शिक्षण के माध्यम

से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए **शैक्षिक मूल्यांकन** का विशेष महत्व है।

शिक्षण और मूल्यांकन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। शिक्षक जब किसी विषय को पढ़ाता है, तो उसके बाद यह जानना आवश्यक होता है कि विद्यार्थियों ने क्या सीखा, कितना सीखा और वे प्राप्त ज्ञान का प्रयोग किस प्रकार कर पा रहे हैं। मूल्यांकन इसी प्रक्रिया को व्यवस्थित रूप से समझने में सहायता करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी की उपलब्धियों के साथ-साथ उसकी कठिनाइयों और सीखने की आवश्यकताओं का भी पता लगाया जा सकता है।

आधुनिक शिक्षा में मूल्यांकन को केवल परीक्षा और अंक प्राप्त करने तक सीमित नहीं माना जाता। वर्तमान दृष्टिकोण में मूल्यांकन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी के सीखने की प्रगति का विभिन्न माध्यमों से अध्ययन किया जाता है और प्राप्त जानकारी के आधार पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आवश्यक सुधार किए जाते हैं।

### 1. शैक्षिक मूल्यांकन का अर्थ

‘मूल्यांकन’ का सामान्य अर्थ किसी व्यक्ति, वस्तु, कार्य अथवा उपलब्धि के संबंध में उसके मूल्य या गुणवत्ता का निर्धारण करना है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का आशय विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धियों तथा उसके विकास से संबंधित विभिन्न पक्षों के बारे में व्यवस्थित जानकारी एकत्र करके उसकी व्याख्या करने और उसके आधार पर उचित शैक्षिक निर्णय लेने से है।

शैक्षिक मूल्यांकन में केवल यह नहीं देखा जाता कि विद्यार्थी ने परीक्षा में कितने अंक प्राप्त किए हैं, बल्कि यह भी देखा जाता है कि उसने क्या समझा, वह सीखी हुई बातों का प्रयोग कैसे करता है, उसकी समस्या-समाधान क्षमता कैसी है, उसके व्यवहार में क्या परिवर्तन आया है तथा उसकी रुचियों और अभिवृत्तियों में किस प्रकार का विकास हुआ है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शैक्षिक मूल्यांकन वह व्यवस्थित एवं सतत प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, व्यवहार तथा अन्य शैक्षिक उपलब्धियों से संबंधित प्रमाण एकत्र करके उनके आधार पर शिक्षण-अधिगम के संबंध में निर्णय लिया जाता है।

### 2. शैक्षिक मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताएँ

शैक्षिक मूल्यांकन की प्रकृति को निम्नलिखित विशेषताओं के माध्यम से समझा जा सकता है—

(1) सतत प्रक्रिया

मूल्यांकन केवल वार्षिक या अंतिम परीक्षा के समय नहीं किया जाता। विद्यार्थी के सीखने की प्रक्रिया के दौरान लगातार उसकी प्रगति का निरीक्षण किया जाता है। इसलिए यह एक सतत प्रक्रिया है।

(2) व्यापक प्रक्रिया

मूल्यांकन केवल विद्यार्थी के बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहता। इसमें उसके शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, सृजनात्मक और व्यावहारिक विकास को भी ध्यान में रखा जा सकता है।

(3) उद्देश्यों पर आधारित

मूल्यांकन हमेशा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों के संदर्भ में किया जाता है। यदि किसी पाठ का उद्देश्य समस्या-समाधान कौशल विकसित करना है, तो मूल्यांकन में केवल तथ्यों को याद करने की क्षमता को पर्याप्त आधार नहीं माना जा सकता।

(4) प्रमाणों पर आधारित

मूल्यांकन में अनुमान के स्थान पर विद्यार्थी के कार्य, उत्तर, व्यवहार, गतिविधियों, परियोजनाओं, परीक्षाओं और अन्य प्रमाणों का उपयोग किया जाता है।

(5) निर्णय लेने में सहायक

मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को उचित निर्णय लेने में सहायता करती है। इससे यह तय किया जा सकता है कि आगे किस प्रकार का शिक्षण आवश्यक है।

(6) सुधारात्मक प्रकृति

मूल्यांकन का उद्देश्य केवल कमियाँ बताना नहीं है। इसका महत्वपूर्ण उद्देश्य कमियों को पहचानकर उन्हें दूर करने के लिए उचित उपाय करना भी है।

(7) विद्यार्थी-केंद्रित

आधुनिक मूल्यांकन में विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमताओं, आवश्यकताओं, रुचियों और सीखने की गति को महत्व दिया जाता है।

### (8) बहुआयामी प्रक्रिया

शैक्षिक उपलब्धि को जानने के लिए लिखित परीक्षा के साथ मौखिक परीक्षा, प्रायोगिक कार्य, परियोजना, निरीक्षण, गतिविधि, पोर्टफोलियो और अन्य साधनों का उपयोग किया जा सकता है।

### 3. शैक्षिक मूल्यांकन के उद्देश्य

शैक्षिक मूल्यांकन के अनेक उद्देश्य हैं। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

#### (1) विद्यार्थी की उपलब्धि ज्ञात करना

मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य यह पता लगाना है कि विद्यार्थी ने निर्धारित पाठ्यक्रम और शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार कितना ज्ञान और कौशल अर्जित किया है।

#### (2) सीखने की कठिनाइयों की पहचान

मूल्यांकन से यह पता चलता है कि विद्यार्थी को किन विषयों या अवधारणाओं को समझने में कठिनाई हो रही है। इससे शिक्षक उन कठिनाइयों को दूर करने के लिए विशेष शिक्षण की व्यवस्था कर सकता है।

#### (3) शिक्षण की प्रभावशीलता ज्ञात करना

विद्यार्थियों के परिणामों से शिक्षक को यह जानकारी मिलती है कि उसकी शिक्षण विधियाँ कितनी प्रभावी हैं। यदि बड़ी संख्या में विद्यार्थी किसी अवधारणा को नहीं समझ पा रहे हैं, तो शिक्षण पद्धति में परिवर्तन की आवश्यकता हो सकती है।

#### (4) शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का पता लगाना

शिक्षण के प्रारंभ में जो उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं, मूल्यांकन से यह पता लगाया जाता है कि वे उद्देश्य कितनी सीमा तक प्राप्त हुए हैं।

#### (5) विद्यार्थियों की प्रगति का पता लगाना

समय-समय पर मूल्यांकन करने से विद्यार्थी की सीखने की प्रगति का पता चलता है। इससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों अपनी वर्तमान स्थिति को समझ सकते हैं।

#### (6) सुधारात्मक शिक्षण में सहायता

मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थियों की कमियों की पहचान करके उनके लिए पुनः शिक्षण, अतिरिक्त अभ्यास या व्यक्तिगत मार्गदर्शन की व्यवस्था की जा सकती है।

#### (7) विद्यार्थियों को प्रेरित करना

उचित मूल्यांकन विद्यार्थियों को अपनी उपलब्धियों को समझने और आगे बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित कर सकता है। रचनात्मक प्रतिक्रिया विद्यार्थी में आत्मविश्वास विकसित करने में भी सहायक होती है।

#### (8) शैक्षिक निर्णय लेना

मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों से संबंधित अनेक शैक्षिक निर्णय लिए जा सकते हैं, जैसे अगली कक्षा में प्रवेश, अतिरिक्त सहायता, विषय चयन अथवा विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता।

#### (9) पाठ्यक्रम में सुधार

यदि मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि किसी पाठ्यक्रम के कुछ भाग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं, तो पाठ्यक्रम में संशोधन और सुधार किया जा सकता है।

#### (10) शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का अध्ययन

आधुनिक मूल्यांकन का उद्देश्य केवल परीक्षा परिणाम प्राप्त करना नहीं है। इसके द्वारा विद्यार्थी के ज्ञानात्मक, भावात्मक, सामाजिक, सृजनात्मक और व्यावहारिक विकास को समझने का प्रयास किया जाता है।

### 4. शैक्षिक मूल्यांकन के प्रकार

शैक्षिक मूल्यांकन को उसके उद्देश्य, समय, प्रक्रिया और प्रकृति के आधार पर विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

#### (क) प्रारंभिक मूल्यांकन

प्रारंभिक मूल्यांकन शिक्षण शुरू करने से पहले किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान, क्षमता, रुचि और आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना होता है।

उदाहरण के लिए, किसी नए अध्याय को शुरू करने से पहले शिक्षक विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न पूछकर यह जान सकता है कि उन्हें उस विषय के बारे में पहले से क्या जानकारी है।

महत्व:

इससे शिक्षक अपनी शिक्षण योजना को विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान और स्तर के अनुसार तैयार कर सकता है।

(ख) रचनात्मक या निर्माणात्मक मूल्यांकन

यह मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान लगातार किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने की प्रगति को जानना और समय रहते आवश्यक सुधार करना है।

इसके लिए कक्षा-प्रश्न, छोटी परीक्षाएँ, गृहकार्य, कक्षा गतिविधियाँ, चर्चा, अभ्यास, परियोजना आदि का उपयोग किया जा सकता है।

महत्व: इससे सीखने की कठिनाइयों का समय पर पता चलता है और शिक्षक तत्काल सुधारात्मक कदम उठा सकता है।

(ग) संकलनात्मक या योगात्मक मूल्यांकन

यह मूल्यांकन किसी पाठ्यक्रम, सत्र या शिक्षण अवधि के अंत में किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थी की कुल उपलब्धि का निर्धारण करना होता है।

वार्षिक परीक्षा, सेमेस्टर परीक्षा और पाठ्यक्रम के अंत में आयोजित परीक्षाएँ इसके उदाहरण हैं।

महत्व:

इससे यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि विद्यार्थी ने निर्धारित अवधि में अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धियाँ कितनी प्राप्त की हैं।

(घ) निदानात्मक मूल्यांकन

जब शिक्षक को यह पता चलता है कि विद्यार्थी किसी विषय को ठीक से नहीं समझ पा रहा है, तब उसकी कठिनाई के वास्तविक कारण का पता लगाने के लिए निदानात्मक मूल्यांकन किया जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी गणित में लगातार गलतियाँ कर रहा है, तो शिक्षक अलग-अलग प्रश्नों के माध्यम से यह पता लगा सकता है कि समस्या गणना में है, सूत्र की समझ में है या प्रश्न को समझने में।

महत्व:

यह मूल्यांकन समस्या की जड़ पहचानने और उसके अनुसार उपचारात्मक शिक्षण करने में सहायक होता है।

(ड) मानक-संदर्भित मूल्यांकन

इस प्रकार के मूल्यांकन में विद्यार्थी के प्रदर्शन की तुलना किसी निर्धारित समूह या मानक से की जाती है। इसमें यह देखा जाता है कि विद्यार्थी का प्रदर्शन अन्य विद्यार्थियों की तुलना में किस स्तर पर है।

इस प्रकार का मूल्यांकन विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं और चयन प्रक्रियाओं में उपयोगी हो सकता है।

(च) मानदंड-संदर्भित मूल्यांकन

इसमें विद्यार्थी के प्रदर्शन की तुलना किसी पूर्व निर्धारित मानदंड या सीखने के उद्देश्य से की जाती है। यहाँ मुख्य प्रश्न यह होता है कि विद्यार्थी ने निर्धारित दक्षता प्राप्त की या नहीं।

उदाहरण के लिए, यदि उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी किसी अवधारणा को 80 प्रतिशत शुद्धता के साथ समझा सके, तो मूल्यांकन उसी निर्धारित मानदंड के आधार पर किया जा सकता है।

(छ) आंतरिक मूल्यांकन

आंतरिक मूल्यांकन विद्यालय या महाविद्यालय के शिक्षक द्वारा शिक्षण अवधि के दौरान किया जाता है। इसमें कक्षा-कार्य, गृहकार्य, परियोजना, प्रायोगिक कार्य, उपस्थिति, गतिविधियाँ, परीक्षण आदि को शामिल किया जा सकता है।

(ज) बाह्य मूल्यांकन

बाह्य मूल्यांकन किसी बाहरी संस्था, बोर्ड, विश्वविद्यालय या अन्य अधिकृत निकाय द्वारा किया जाता है। इसमें मूल्यांकनकर्ता सामान्यतः उस संस्था से अलग होता है जहाँ विद्यार्थी अध्ययन कर रहा है।

(झ) मात्रात्मक मूल्यांकन

इसमें विद्यार्थी की उपलब्धि को संख्यात्मक रूप में व्यक्त किया जाता है। अंक, प्रतिशत, ग्रेड अथवा प्राप्तांक इसके सामान्य उदाहरण हैं।

इससे विद्यार्थियों की उपलब्धि को एक निश्चित संख्यात्मक रूप में प्रस्तुत करना आसान होता है।

### (ज) गुणात्मक मूल्यांकन

इस प्रकार के मूल्यांकन में विद्यार्थी की उपलब्धि और व्यवहार का वर्णनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसमें केवल अंक देने के स्थान पर विद्यार्थी की विशेषताओं, कठिनाइयों, प्रगति और कार्य-प्रदर्शन के बारे में विवरण दिया जाता है।

### (ट) औपचारिक मूल्यांकन

पूर्व निर्धारित योजना, नियम और प्रक्रिया के अनुसार किया जाने वाला मूल्यांकन औपचारिक मूल्यांकन कहलाता है। लिखित परीक्षाएँ, निर्धारित परीक्षण और प्रायोगिक परीक्षाएँ इसके उदाहरण हैं।

### (ठ) अनौपचारिक मूल्यांकन

यह मूल्यांकन दैनिक शिक्षण प्रक्रिया में स्वाभाविक रूप से किया जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर, कक्षा में सहभागिता, व्यवहार, गतिविधियों और मौखिक प्रतिक्रियाओं को देखकर उनके सीखने का अनुमान लगाता है।

## 5. शैक्षिक मूल्यांकन के प्रमुख साधन

शैक्षिक मूल्यांकन को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता है। प्रमुख साधन हैं—

1. लिखित परीक्षा
2. मौखिक परीक्षा
3. वस्तुनिष्ठ परीक्षण
4. निबंधात्मक परीक्षण
5. प्रायोगिक परीक्षा
6. कक्षा अवलोकन
7. साक्षात्कार
8. प्रश्नावली
9. गृहकार्य
10. परियोजना कार्य
11. पोर्टफोलियो
12. समूह गतिविधियाँ
13. स्व-मूल्यांकन

#### 14. सहपाठी मूल्यांकन

इन साधनों का चयन मूल्यांकन के उद्देश्य और विद्यार्थी की आयु तथा विषय की प्रकृति के अनुसार किया जाना चाहिए।

#### 6. शैक्षिक मूल्यांकन का महत्व

शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह शिक्षक को केवल विद्यार्थी की उपलब्धि जानने में ही सहायता नहीं करता, बल्कि पूरे शिक्षण-अधिगम तंत्र को अधिक प्रभावी बनाने में योगदान देता है।

विद्यार्थी के दृष्टिकोण से मूल्यांकन उसे अपनी शक्तियों और कमियों को पहचानने का अवसर देता है। शिक्षक के लिए यह शिक्षण विधि में सुधार का आधार बनता है। अभिभावकों को इससे विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति की जानकारी मिलती है तथा शैक्षिक संस्थाओं को पाठ्यक्रम और शिक्षण व्यवस्था की प्रभावशीलता समझने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार मूल्यांकन विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक और शैक्षिक संस्था—सभी के लिए उपयोगी है।

#### 7. प्रभावी शैक्षिक मूल्यांकन के लिए आवश्यक बातें

एक प्रभावी मूल्यांकन व्यवस्था में कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

- मूल्यांकन का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।
- मूल्यांकन विद्यार्थी की वास्तविक उपलब्धि को प्रदर्शित करने वाला होना चाहिए।
- प्रश्न और गतिविधियाँ पाठ्यक्रम एवं निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
- विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना चाहिए।
- केवल एक परीक्षा के आधार पर विद्यार्थी की संपूर्ण क्षमता का निर्णय नहीं करना चाहिए।
- मूल्यांकन के परिणामों की उपयोगी प्रतिक्रिया विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए।
- कमियों की पहचान के साथ सुधार के अवसर भी उपलब्ध कराने चाहिए।
- आवश्यकता के अनुसार विभिन्न मूल्यांकन साधनों का प्रयोग करना चाहिए।
- मूल्यांकन निष्पक्ष और पारदर्शी होना चाहिए।
- मूल्यांकन का उद्देश्य केवल अंक प्रदान करना नहीं, बल्कि सीखने में सुधार करना होना चाहिए।

## जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1. शैक्षिक मूल्यांकन से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक मूल्यांकन में एक अंतर लिखिए।

प्रश्न 3. मूल्यांकन, मापन एवं परीक्षण में क्या संबंध है?

प्रश्न 4. शैक्षिक मूल्यांकन के तीन प्रमुख क्षेत्र कौन-से हैं?

प्रश्न 5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल्यांकन के किस स्वरूप पर बल देती है?

## 17.4 सारांश

शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य एवं सतत घटक है, जिसका उद्देश्य केवल विद्यार्थियों की उपलब्धियों का आकलन करना नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना भी है। यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, मूल्यों एवं व्यवहारगत परिवर्तनों का समग्र एवं वस्तुनिष्ठ आकलन करता है तथा शिक्षण में आवश्यक सुधार हेतु उपयोगी प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।

इस इकाई में शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा, परिभाषाएँ, प्रकृति, उद्देश्य, सिद्धान्त एवं प्रक्रिया का अध्ययन किया गया। साथ ही निर्माणात्मक, संकलनात्मक, निदानात्मक तथा स्थान निर्धारण मूल्यांकन के प्रकारों, मूल्यांकन-मापन-परीक्षण के अंतर, संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक क्षेत्रों में मूल्यांकन, विभिन्न विधियों एवं उपकरणों, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), परिणाम-आधारित एवं दक्षतामूलक मूल्यांकन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप मूल्यांकन की नवीन प्रवृत्तियों का भी विवेचन किया गया।

समकालीन शिक्षा में डिजिटल एवं ऑनलाइन मूल्यांकन की बढ़ती उपयोगिता, शिक्षक की सक्रिय भूमिका, मूल्यांकन की चुनौतियाँ तथा सुधारात्मक उपायों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। समग्र रूप से शैक्षिक मूल्यांकन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षण तथा शिक्षा की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह केवल उपलब्धियों का निर्णय नहीं करता, बल्कि अधिगम को अधिक सार्थक, प्रभावी, समावेशी एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

## 17.5 शब्दावली (Glossary)

- शैक्षिक मूल्यांकन (Educational Evaluation)-समग्र आकलन
- मूल्यांकन (Evaluation) -निर्णय
- मापन (Measurement)-परिमाणीकरण
- परीक्षण (Test)-परीक्षा
- निर्माणात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation)-सुधारात्मक
- संकलनात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)-अंतिम
- निदानात्मक मूल्यांकन (Diagnostic Evaluation)-निदान
- स्थान निर्धारण मूल्यांकन (Placement Evaluation)-वर्गीकरण
- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)-निरंतरता
- दक्षतामूलक मूल्यांकन (Competency-based Assessment)

दक्षतामापन

## 17.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

1. संभावित उत्तर: शैक्षिक मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियों का व्यवस्थित, सतत एवं उद्देश्यपरक आकलन है।
2. संभावित उत्तर: निर्माणात्मक मूल्यांकन शिक्षण के दौरान सुधार हेतु किया जाता है, जबकि संकलनात्मक मूल्यांकन शिक्षण की समाप्ति पर अंतिम उपलब्धि ज्ञात करने के लिए किया जाता है।
3. संभावित उत्तर: परीक्षण द्वारा प्राप्त आंकड़ों का मापन किया जाता है तथा मापन के आधार पर निर्णय लेने की प्रक्रिया मूल्यांकन कहलाती है।
4. संभावित उत्तर: संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोक्रियात्मक क्षेत्र।
5. संभावित उत्तर: दक्षिण मूलक, सतत, समग्र एवं शिक्षार्थी-केंद्रित मूल्यांकन पर।

## 17.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources)

- NCERT ई-पाठशाला – विद्यालयी शिक्षा एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन सामग्री।\*
- DIKSHA Portal – डिजिटल पाठ्य सामग्री, मूल्यांकन उपकरण एवं शिक्षक प्रशिक्षण।
- SWAYAM – शिक्षा एवं मूल्यांकन से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम।
- NROER (National Repository of Open Educational Resources) – मुक्त शैक्षिक संसाधनों का भंडार।

- UGC e-PG Pathshala – उच्च शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा से संबंधित ई-सामग्री।
- IGNOU eGyankosh – मूल्यांकन एवं शैक्षिक मनोविज्ञान विषय अध्ययन सामग्री।
- National Digital Library of India (NDLI) – पुस्तकों, शोध-पत्रों एवं संदर्भ सामग्री का डिजिटल संग्रह।

---

## 17.8 सन्दर्भ (APA शैली)

---

- Aggarwal, J. C. (2010). Essentials of Educational Psychology. Vikas Publishing House.
- Bloom, B. S. (Ed.). (1956). Taxonomy of Educational Objectives: Handbook I: Cognitive Domain. David McKay.
- Gronlund, N. E., & Linn, R. L. (2000). Measurement and Evaluation in Teaching (8th ed.). Pearson.
- Mangal, S. K., & Mangal, S. (2022). Educational Psychology. PHI Learning.
- NCERT. (2023). National Curriculum \* Framework for School Education. New Delhi: NCERT
- .Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi.

---

## 17.9 अभ्यास प्रश्न

---

### (क) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (बहुविकल्पीय)

1. शैक्षिक मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य है— (अ) केवल अंक देना (ब) केवल परीक्षा लेना (स) अधिगम एवं शिक्षण की प्रभावशीलता का आकलन करना (द) केवल विद्यार्थियों का वर्गीकरण करना

उत्तर: (स)

2. निर्माणात्मक मूल्यांकन कब किया जाता है? (अ) सत्र समाप्ति पर (ब) शिक्षण प्रक्रिया के दौरान (स) प्रवेश के समय (द) परिणाम घोषित होने के बाद

उत्तर: (ब)

3. निम्न में से कौन-सा मूल्यांकन अधिगम कठिनाइयों की पहचान करता है? (अ) संकलनात्मक (ब) निदानात्मक (स) स्थान निर्धारण (द) मौखिक

उत्तर: (ब)

4. CCE का पूर्ण रूप है—

(अ) Continuous and Comprehensive Evaluation (ब) Continuous and Creative Education  
(स) Comprehensive Classroom Evaluation (द) Continuous Course Examination

उत्तर: (अ)

**(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

मूल्यांकन एवं मापन में अंतर लिखिए।

2. निर्माणात्मक एवं संकलनात्मक मूल्यांकन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

3. शैक्षिक मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

4. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) का महत्व बताइए।

**(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. शैक्षिक मूल्यांकन की अवधारणा, प्रकृति एवं उद्देश्यों का विस्तारपूर्वक विवेचना कीजिए।

2. शैक्षिक मूल्यांकन के प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

3. मूल्यांकन, मापन एवं परीक्षण में अंतर स्पष्ट करते हुए शैक्षिक मूल्यांकन की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शैक्षिक मूल्यांकन की नवीन प्रवृत्तियों का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

5. शैक्षिक मूल्यांकन की विधियों एवं उपकरणों का वर्णन करते हुए शिक्षक की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

## इकाई -18

### मूल्यांकन, चिंतन एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य

---

#### 18.1 प्रस्तावना

#### 18.2 उद्देश्य

#### 18.3 मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरण

##### 18.3.1 अधिगम की परिभाषा

##### 18.3.2 अधिगम की प्रकृति

#### 18.4 सारांश

#### 18.5 शब्दावली

#### 18.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 18.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

#### 18.8 संदर्भ

#### 18.9 अभ्यास

#### 18.1 प्रस्तावना

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मूल्यांकन (Evaluation) एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य घटक है। इसके माध्यम से यह ज्ञात किया जाता है कि विद्यार्थी ने निर्धारित शिक्षण उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है। मूल्यांकन केवल विद्यार्थियों को अंक या ग्रेड प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह उनके ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, रुचि, व्यवहार एवं समग्र विकास का वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित आकलन करने की प्रक्रिया है।

प्रभावी मूल्यांकन के लिए उचित तकनीकों एवं उपकरणों का चयन आवश्यक होता है। मूल्यांकन तकनीकें शिक्षक को यह निर्धारित करने में सहायता करती हैं कि किस प्रकार विद्यार्थी की उपलब्धियों को मापा जाए, जबकि मूल्यांकन उपकरण उन साधनों को कहते हैं जिनके माध्यम से विद्यार्थी के प्रदर्शन को रिकॉर्ड एवं विश्लेषित किया जाता है। मौखिक, लिखित, प्रायोगिक एवं अवलोकन जैसी तकनीकें तथा परीक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार, पोर्टफोलियो, रूब्रिक एवं मापनी जैसे उपकरण मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं विश्वसनीय बनाते हैं।

वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप विद्यार्थी-केंद्रित एवं कौशल आधारित हो गया है। इसलिए मूल्यांकन में केवल स्मृति एवं ज्ञान का परीक्षण न करके विद्यार्थियों की रचनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन, संचार कौशल एवं व्यावहारिक दक्षताओं का भी आकलन किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने भी मूल्यांकन को सीखने में सहायक, सतत एवं समग्र बनाने पर बल दिया

है। इस दृष्टि से मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरणों का अध्ययन शिक्षक शिक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का अंतिम चरण नहीं, बल्कि एक सतत एवं सुधारात्मक प्रक्रिया है, जो शिक्षण और अधिगम दोनों को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उचित मूल्यांकन तकनीकों एवं उपकरणों के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों की क्षमताओं, कमजोरियों एवं सीखने की आवश्यकताओं को पहचान सकता है तथा उनके अनुसार शिक्षण रणनीतियों में परिवर्तन कर सकता है।

मूल्यांकन उपकरण शिक्षक को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने तथा प्रत्येक विद्यार्थी की प्रगति का उचित आकलन करने में सहायता करते हैं। इसके द्वारा विद्यार्थियों को अपनी उपलब्धियों एवं कमियों का ज्ञान होता है, जिससे वे अपने अधिगम में सुधार कर सकते हैं।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन का उद्देश्य केवल परीक्षा लेना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में ज्ञान का अनुप्रयोग, कौशल विकास, आत्मविश्वास, रचनात्मक सोच एवं जीवनोपयोगी क्षमताओं का विकास करना है। इसलिए विभिन्न प्रकार की मूल्यांकन तकनीकों एवं उपकरणों का संतुलित उपयोग आवश्यक है।

डिजिटल तकनीक के विकास के साथ ऑनलाइन परीक्षण, ई-पोर्टफोलियो, डिजिटल क्विज एवं लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम जैसे नए मूल्यांकन साधनों का प्रयोग बढ़ा है। ये साधन मूल्यांकन को अधिक सरल, त्वरित एवं प्रभावी बनाते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं प्रभावी शिक्षण के आधारभूत तत्व हैं।

## 18.2 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी—

- मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरणों की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों के प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे।
- मूल्यांकन उपकरणों की उपयोगिता एवं विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- उपयुक्त मूल्यांकन तकनीक एवं उपकरणों का चयन कर सकेंगे।
- डिजिटल मूल्यांकन साधनों एवं NEP 2020 में मूल्यांकन की भूमिका को समझ सकेंगे।

## 18.3 मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरण

### I. मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरण: अर्थ एवं अवधारणा

#### (Meaning and Concept)

मूल्यांकन तकनीक (Evaluation Technique) वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति एवं व्यवहार का आकलन किया जाता है।

मूल्यांकन उपकरण (Evaluation Tools) वे साधन हैं जिनके द्वारा विद्यार्थी की उपलब्धियों एवं क्षमताओं को मापा और अभिलेखित किया जाता है।

मूल्यांकन तकनीक प्रक्रिया को दर्शाती है, जबकि उपकरण उस प्रक्रिया को क्रियान्वित करने के साधन होते हैं।

## II. मूल्यांकन तकनीक के प्रकार

### (Types of Evaluation Techniques)

#### 1. मौखिक तकनीक (Oral Technique)

इस तकनीक में विद्यार्थियों का मूल्यांकन प्रश्नोत्तर, चर्चा एवं मौखिक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से किया जाता है।

##### विशेषताएँ—

- त्वरित प्रतिक्रिया प्राप्त होती है।
- भाषा एवं अभिव्यक्ति कौशल का मूल्यांकन होता है।
- कक्षा शिक्षण में सरलता से प्रयोग किया जा सकता है।

#### 2. लिखित तकनीक (Written Technique)

इसमें विद्यार्थियों का मूल्यांकन लिखित परीक्षाओं, असाइनमेंट एवं उत्तर पुस्तिकाओं के माध्यम से किया जाता है।

##### विशेषताएँ—

ज्ञान एवं समझ का मापन प्रभावी रूप से होता है।

सभी विद्यार्थियों का समान रूप से मूल्यांकन संभव होता है।

#### 3. प्रायोगिक/व्यावहारिक तकनीक

##### (Practical Technique)

इस तकनीक द्वारा विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान, कौशल एवं कार्य करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

उदाहरण— प्रयोगशाला कार्य, परियोजना कार्य, शिक्षण अभ्यास आदि।

#### 4. अवलोकन तकनीक (Observation Technique)

इसमें शिक्षक विद्यार्थी के व्यवहार, गतिविधियों एवं कार्य प्रदर्शन का प्रत्यक्ष निरीक्षण करता है।

##### महत्व—

- व्यवहारात्मक उद्देश्यों के मूल्यांकन में उपयोगी।
- सामाजिक एवं भावात्मक विकास को समझने में सहायक।

### III. मूल्यांकन उपकरणों के प्रकार

#### (Types of Evaluation Tools)

##### 1. परीक्षण (Tests)

परीक्षण विद्यार्थियों के ज्ञान, क्षमता एवं उपलब्धि को मापने का प्रमुख उपकरण है।

प्रकार—

- उपलब्धि परीक्षण
- निदानात्मक परीक्षण
- अभिक्षमता परीक्षण
- 

##### 2. प्रश्नावली (Questionnaire)

प्रश्नावली प्रश्नों का व्यवस्थित समूह है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की जानकारी, विचार एवं अभिवृत्तियों का अध्ययन किया जाता है।

##### 3. साक्षात्कार (Interview)

साक्षात्कार प्रत्यक्ष संवाद पर आधारित उपकरण है, जिसमें विद्यार्थी की सोच, अनुभव एवं समस्याओं को समझा जाता है।

##### 4. अवलोकन सूची (Observation Schedule)

यह विद्यार्थियों के व्यवहार एवं गतिविधियों को रिकॉर्ड करने के लिए बनाई गई सूची होती है।

##### 5. जाँच सूची (Checklist)

जाँच सूची में निर्धारित बिंदुओं के आधार पर किसी कौशल या व्यवहार की उपस्थिति या अनुपस्थिति को दर्ज किया जाता है।

##### 6. मूल्यांकन मापनी (Rating Scale)

इसके माध्यम से किसी व्यवहार या कौशल की गुणवत्ता को विभिन्न स्तरों पर मापा जाता है।

##### 7. पोर्टफोलियो (Portfolio)

यह विद्यार्थी के कार्यों, उपलब्धियों एवं प्रगति का संग्रह होता है, जो उसके विकास को प्रदर्शित करता है।

##### 8. रूब्रिक (Rubric)

रूब्रिक एक मानदंड आधारित मूल्यांकन उपकरण है जिसमें प्रदर्शन के विभिन्न स्तर निर्धारित होते हैं।

### 9. उपाख्यान अभिलेख (Anecdotal Record)

इसमें विद्यार्थी के विशेष व्यवहार एवं घटनाओं का संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है।

### 10. संचयी अभिलेख (Cumulative Record)

यह विद्यार्थी की शैक्षिक, व्यक्तिगत एवं सह-पाठ्यचर्या संबंधी प्रगति का स्थायी रिकॉर्ड होता है।

## IV. वस्तुनिष्ठ एवं व्यक्तिनिष्ठ परीक्षण

### (Objective and Subjective Test)

- वस्तुनिष्ठ परीक्षण में उत्तर निश्चित होते हैं, जैसे— बहुविकल्पीय प्रश्न, सही-गलत प्रश्न।
- व्यक्तिनिष्ठ परीक्षण में विद्यार्थी को विस्तार से उत्तर लिखना होता है, जैसे— निबंधात्मक प्रश्न।

## V. मानकीकृत एवं शिक्षक-निर्मित परीक्षण

### (Standardized and Teacher-made Tests)

मानकीकृत परीक्षण विशेषज्ञों द्वारा निर्मित होते हैं तथा इनके मानक निर्धारित होते हैं।

शिक्षक-निर्मित परीक्षण शिक्षक द्वारा अपनी कक्षा की आवश्यकताओं के अनुसार बनाए जाते हैं।

## VI. एक अच्छे मूल्यांकन उपकरण की विशेषताएँ

### (Characteristics of a Good Evaluation Tool)

एक प्रभावी मूल्यांकन उपकरण में निम्न गुण होने चाहिए—

- वैधता (Validity)
- विश्वसनीयता (Reliability)
- वस्तुनिष्ठता (Objectivity)
- उपयोगिता (Utility)
- व्यवहार्यता (Practicability)

## VII. मूल्यांकन तकनीकों एवं उपकरणों के चयन के आधार

- शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप होना।
- विद्यार्थियों की आयु एवं स्तर के अनुसार होना।
- समय एवं संसाधनों की उपलब्धता।
- मूल्यांकन की विश्वसनीयता एवं निष्पक्षता।

## VIII. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में उपयोग

### मूल्यांकन तकनीक एवं उपकरण—

- विद्यार्थियों की प्रगति जानने।
- कमजोरियों की पहचान करने।
- शिक्षण सुधारने।
- अधिगम को प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं।

## IX. मूल्यांकन तकनीकों एवं उपकरणों के लाभ

- विद्यार्थियों की उपलब्धि का सही आकलन होता है।
- शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने में सहायता मिलती है।
- सुधारात्मक शिक्षण संभव होता है।

## X. मूल्यांकन तकनीकों एवं उपकरणों की सीमाएँ

- समय एवं संसाधनों की अधिक आवश्यकता।
- कुछ उपकरणों में व्यक्तिपरकता की संभावना।
- सभी क्षमताओं का पूर्ण मूल्यांकन कठिन।

## XI. डिजिटल मूल्यांकन तकनीक एवं उपकरण

### (Digital Evaluation Techniques and Tools)

आधुनिक शिक्षा में डिजिटल माध्यमों द्वारा मूल्यांकन अधिक प्रभावी एवं सरल हुआ है।

### प्रमुख साधन—

- ऑनलाइन टेस्ट
- Google Forms
- Learning Management System (LMS)
- ई-पोर्टफोलियो
- डिजिटल क्विज

## XII. NEP 2020 के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन तकनीक एवं उपकरण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मूल्यांकन को रटने की बजाय समझ, कौशल, योग्यता एवं समग्र विकास आधारित बनाने पर बल दिया गया है।

### मुख्य बिंदु—

- सतत एवं व्यापक मूल्यांकन।
- योग्यता आधारित मूल्यांकन।
- आत्म-मूल्यांकन एवं सहपाठी मूल्यांकन।

- डिजिटल मूल्यांकन का प्रयोग।

### जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1. मूल्यांकन तकनीक एवं उपकरण से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. किसी दो मूल्यांकन तकनीकों के नाम लिखिए।

प्रश्न 3. एक अच्छे मूल्यांकन उपकरण की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

प्रश्न 4. NEP 2020 में मूल्यांकन के संबंध में क्या प्रमुख विचार दिया गया है?

## 18.4 सारांश (Summary)

मूल्यांकन की तकनीक एवं उपकरण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के महत्वपूर्ण आधार हैं। मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थियों की उपलब्धियों, क्षमताओं, कौशलों एवं व्यवहारों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। मूल्यांकन तकनीकें जहाँ मूल्यांकन की प्रक्रिया को निर्धारित करती हैं, वहीं उपकरण उस प्रक्रिया को मापने एवं अभिलेखित करने के साधन प्रदान करते हैं।

मौखिक, लिखित, प्रायोगिक एवं अवलोकन जैसी तकनीकें तथा परीक्षण, प्रश्नावली, साक्षात्कार, जाँच सूची, मापनी, पोर्टफोलियो एवं रूब्रिक जैसे उपकरण विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास को समझने में सहायक होते हैं। एक प्रभावी मूल्यांकन उपकरण में वैधता, विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता एवं उपयोगिता जैसे गुणों का होना आवश्यक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन को केवल परीक्षा एवं अंक तक सीमित न रखकर सतत, व्यापक, कौशल आधारित एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी योग्यता आधारित एवं समग्र मूल्यांकन पर बल देती है। अतः शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों एवं उपकरणों का उचित चयन एवं प्रभावी प्रयोग करना जाने, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हो और विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

## 18.5 शब्दावली (Glossary)

### 1. मूल्यांकन (Evaluation)

किसी विद्यार्थी की उपलब्धियों, क्षमताओं एवं व्यवहार का गुणात्मक एवं मात्रात्मक आकलन करने की प्रक्रिया।

### 2. मापन (Measurement)

किसी गुण, क्षमता या उपलब्धि को निश्चित इकाइयों के आधार पर व्यक्त करने की प्रक्रिया।

### 3. परीक्षण (Test)

विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल एवं योग्यता को मापने का एक साधन।

### 4. वैधता (Validity)

किसी मूल्यांकन उपकरण की वह विशेषता जिससे वह वास्तव में उसी गुण का मापन करता है, जिसके लिए उसे बनाया गया है।

#### 5. विश्वसनीयता (Reliability)

किसी उपकरण द्वारा बार-बार प्रयोग करने पर समान परिणाम प्राप्त करने की क्षमता।

#### 6. वस्तुनिष्ठता (Objectivity)

मूल्यांकन में व्यक्तिगत पक्षपात से मुक्त होकर निष्पक्ष परिणाम प्राप्त करना।

#### 7. रूब्रिक (Rubric)

मूल्यांकन के लिए निर्धारित मानदंडों एवं प्रदर्शन स्तरों की स्पष्ट रूपरेखा।

#### 8. पोर्टफोलियो (Portfolio)

विद्यार्थी के कार्यों, उपलब्धियों एवं प्रगति का व्यवस्थित संग्रह।

#### 9. निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test)

विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कठिनाइयों की पहचान करने वाला परीक्षण।

#### 10. सतत मूल्यांकन (Continuous Evaluation)

अधिगम प्रक्रिया के दौरान निरंतर किया जाने वाला मूल्यांकन।

---

### 18.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

---

(Check Your Progress – Possible Answers)

1. उत्तर: मूल्यांकन तकनीक वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी की उपलब्धियों एवं क्षमताओं का आकलन किया जाता है, जबकि मूल्यांकन उपकरण वे साधन हैं जिनके माध्यम से इस आकलन को मापा एवं रिकॉर्ड किया जाता है।

2. उत्तर: मौखिक तकनीक, लिखित तकनीक

3. उत्तर: वैधता (Validity), विश्वसनीयता (Reliability)

4. उत्तर: NEP 2020 ने मूल्यांकन को योग्यता आधारित, सतत, व्यापक एवं विद्यार्थी के समग्र विकास पर आधारित बनाने पर बल दिया है।

---

### 18.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

---

विद्यार्थी एवं शिक्षक निम्न मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं—

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) के ऑनलाइन संसाधन।
- SWAYAM एवं DIKSHA पोर्टल पर उपलब्ध मूल्यांकन संबंधी पाठ्य सामग्री।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) की अध्ययन सामग्री।
- विश्वविद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थानों द्वारा उपलब्ध ई-पुस्तकें एवं शोध सामग्री।
- डिजिटल मूल्यांकन उपकरणों जैसे Google Forms, LMS एवं ऑनलाइन क्विज प्लेटफॉर्म का प्रयोग।

---

## 18.8 संदर्भ (References)

---

- Bloom, B. S., Hastings, J. T., & Madaus, G. F. (1971). Handbook on Formative and Summative Evaluation of Student Learning. New York: McGraw-Hill.
- Gronlund, N. E. (2006). Assessment of Student Achievement. Boston: Pearson Education.
- Mangal, S. K. (2019). Advanced Educational Psychology. New Delhi: PHI Learning.
- NCERT. (2005). National Curriculum Framework. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP). (2020). भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।
- Singh, Y. K. (2008). Educational Evaluation. New Delhi: APH Publishing Corporation.

---

## 18.9 अभ्यास के प्रश्न (Exercise Questions)

---

(A) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

1. मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (a) केवल अंक प्रदान करना
- (b) विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करना
- (c) परीक्षा लेना
- (d) अनुशासन बनाए रखना

उत्तर – (b) विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करना

2. पोर्टफोलियो किस प्रकार का मूल्यांकन उपकरण है?

- (a) लिखित परीक्षण
- (b) विद्यार्थी कार्यों का संग्रह

(c) मौखिक परीक्षा

(d) साक्षात्कार

उत्तर – (b) विद्यार्थी कार्यों का संग्रह

3. रूब्रिक किससे संबंधित है?

(a) पाठ्यक्रम निर्माण

(b) मूल्यांकन के मानदंड

(c) शिक्षण विधि

(d) अनुशासन

उत्तर – (b) मूल्यांकन के मानदंड

### **(B) लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. मूल्यांकन तकनीक एवं उपकरण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

2. अवलोकन तकनीक का महत्व बताइए।

अच्छे मूल्यांकन उपकरण की विशेषताएँ लिखिए।

### **(C) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

2. विभिन्न मूल्यांकन उपकरणों की उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।

3. NEP 2020 के संदर्भ में मूल्यांकन की बदलती अवधारणा पर चर्चा कीजिए।

# इकाई -19

## चिंतनशील शिक्षण

### 19.1 प्रस्तावना

### 19.2 उद्देश्य

### 19.3 चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन

### 19.4 सारांश

### 19.5 शब्दावली

### 19.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

### 19.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

### 19.8 संदर्भ

### 19.9 अभ्यास

### 19.1 प्रस्तावना

शिक्षण एक गतिशील एवं निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है। प्रभावी शिक्षक केवल विषय-वस्तु का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह अपने शिक्षण कार्य, विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं अधिगम परिणामों का निरंतर विश्लेषण करने वाला चिंतनशील व्यक्ति भी होता है। इसी प्रक्रिया को चिंतनशील शिक्षण (Reflective Teaching) कहा जाता है।

चिंतनशील शिक्षण में शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों का अवलोकन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन करता है तथा आवश्यक सुधार के लिए नए प्रयास करता है। यह शिक्षक को अपनी शिक्षण पद्धतियों, व्यवहार एवं निर्णयों को बेहतर बनाने में सहायता करता है।

आत्म-चिंतन (Self-Reflection) वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति स्वयं के विचारों, कार्यों, अनुभवों एवं क्षमताओं का गहन विश्लेषण करता है। शिक्षक के लिए आत्म-चिंतन अपने व्यावसायिक विकास, आत्म-सुधार एवं प्रभावी शिक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह केवल ज्ञान प्रदान करने वाला न होकर एक चिंतनशील, नवाचारी एवं सीखने वाला शिक्षक बने। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी शिक्षक को निरंतर सीखने, आत्म-मूल्यांकन करने एवं व्यावसायिक विकास के लिए प्रेरित करती है।

चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन शिक्षक के व्यावसायिक विकास के महत्वपूर्ण आधार हैं। इनके माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों का विश्लेषण करके यह समझ सकता है कि कौन-सी शिक्षण रणनीतियाँ प्रभावी हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

चिंतनशील शिक्षक विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझने, नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने तथा कक्षा की समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम होता है। आत्म-चिंतन शिक्षक को अपनी शक्तियों एवं कमजोरियों की पहचान करने तथा निरंतर सुधार की दिशा में कार्य करने का अवसर प्रदान करता है।

यह प्रक्रिया शिक्षण को अधिक विद्यार्थी-केंद्रित, रचनात्मक एवं प्रभावी बनाती है। आज के बदलते शैक्षिक परिवेश में चिंतनशील शिक्षण शिक्षक को एक जिम्मेदार, संवेदनशील एवं कुशल शिक्षाविद के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

---

## 19.2 उद्देश्य (Objectives)

---

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी—

चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन की अवधारणा को समझ सकेंगे।

चिंतनशील शिक्षक की विशेषताओं एवं गुणों की पहचान कर सकेंगे।

आत्म-चिंतन की प्रक्रिया एवं तकनीकों को समझ सकेंगे।

चिंतनशील शिक्षण के मॉडल एवं चरणों का वर्णन कर सकेंगे।

शिक्षक विकास में आत्म-चिंतन की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे।

NEP 2020 के संदर्भ में चिंतनशील शिक्षक के महत्व को समझ सकेंगे।

---

## 19.3 चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन

---

### I. चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन : अर्थ एवं अवधारणा

#### (Meaning and Concept of Reflective Teaching and Self-Reflection)

चिंतनशील शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों, विधियों एवं परिणामों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है तथा शिक्षण में सुधार हेतु आवश्यक परिवर्तन करता है।

आत्म-चिंतन व्यक्ति द्वारा अपने विचारों, कार्यों, निर्णयों एवं अनुभवों का स्वयं मूल्यांकन करने की प्रक्रिया है।

दोनों प्रक्रियाएँ शिक्षक को आत्म-जागरूक बनाती हैं और उसके व्यावसायिक विकास में सहायता करती हैं।

### II. चिंतनशील शिक्षण की विशेषताएँ

#### (Characteristics of Reflective Teaching)

### चिंतनशील शिक्षण की प्रमुख विशेषताएँ—

- आत्म-मूल्यांकन आधारित प्रक्रिया
- निरंतर सुधार की प्रक्रिया
- आलोचनात्मक चिंतन पर आधारित
- विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण
- समस्या समाधान में सहायक
- नवाचार एवं रचनात्मकता को बढ़ावा देने वाली

### III. चिंतनशील शिक्षक की भूमिका एवं गुण

#### (Role and Qualities of Reflective Teacher)

- एक चिंतनशील शिक्षक
- अपने शिक्षण कार्य का मूल्यांकन करता है।
- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझता है।
- नई शिक्षण विधियों को अपनाते है।
- सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रयास करता है।
- 

#### प्रमुख गुण—

- आत्म-जागरूकता
- आलोचनात्मक सोच
- रचनात्मकता
- धैर्य
- सीखने की निरंतर इच्छा

### IV. आत्म-चिंतन: अर्थ, प्रकृति एवं महत्व

#### (Meaning, Nature and Importance of Self-Reflection)

- आत्म-चिंतन स्वयं के अनुभवों एवं कार्यों पर विचार करने की प्रक्रिया है।
- प्रकृति-
  1. व्यक्तिगत एवं आंतरिक प्रक्रिया
  2. सुधारात्मक प्रक्रिया
  3. अनुभव आधारित प्रक्रिया

#### महत्व—

- आत्म-जागरूकता बढ़ाता है।

- निर्णय क्षमता विकसित करता है।
- व्यावसायिक विकास में सहायता करता है।

## **V. चिंतनशील शिक्षण की प्रक्रिया**

### **(Process of Reflective Teaching)**

#### 1. अनुभव (Experience)

शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों को प्राप्त करता है।

#### 2. अनुभव पर विचार (Reflection on Experience)

शिक्षक अपने अनुभवों का विश्लेषण करता है।

#### 3. विश्लेषण (Analysis)

शिक्षण की प्रभावशीलता एवं समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

#### 4. सुधारात्मक कार्यवाही (Improvement Action)

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शिक्षण में सुधार किया जाता है।

## **VI. आत्म-चिंतन की तकनीक एवं उपकरण**

### **(Techniques and Tools of Self-Reflection)**

#### 1. चिंतनशील डायरी (Reflective Journal)

शिक्षक अपने अनुभवों एवं विचारों को लिखित रूप में दर्ज करता है।

#### 2. स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment)

शिक्षक स्वयं के कार्य एवं क्षमताओं का मूल्यांकन करता है।

#### 3. सहकर्मी प्रतिक्रिया (Peer Feedback)

सहकर्मी शिक्षक के शिक्षण पर सुझाव प्रदान करते हैं।

#### 4. पोर्टफोलियो (Portfolio)

शिक्षक के कार्यों एवं उपलब्धियों का संग्रह।

#### 5. कक्षा अवलोकन (Classroom Observation)

शिक्षण प्रक्रिया का निरीक्षण एवं विश्लेषण।

## **VII. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में चिंतनशील शिक्षण का महत्व**

- शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करता है।

विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने में सहायता करता है।

- प्रभावी शिक्षण रणनीतियों के चयन में सहायक होता है।
- कक्षा की समस्याओं के समाधान में उपयोगी है।

### VIII. प्रभावी शिक्षक विकास में आत्म-चिंतन की भूमिका

#### आत्म-चिंतन शिक्षक को—

- अपनी क्षमताओं एवं कमियों को पहचानने।
- नए कौशल सीखने।
- व्यावसायिक दक्षता बढ़ाने।
- बेहतर शिक्षक बनने में सहायता करता है।

### IX. चिंतनशील शिक्षण के चरण एवं मॉडल

#### 1. ड्यूई का चिंतनशील चिंतन मॉडल (Dewey's Reflective Thinking Model)

जॉन ड्यूई के अनुसार चिंतनशील चिंतन में समस्या की पहचान, विचार, विश्लेषण एवं समाधान की प्रक्रिया शामिल होती है।

#### 2. शॉन का चिंतनशील अभ्यास मॉडल (Schön's Reflective Practice Model)

शॉन ने दो प्रकार के चिंतन बताए—

- Reflection-in-Action – कार्य करते समय चिंतन
- Reflection-on-Action – कार्य के बाद चिंतन

### X. चिंतनशील शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक

- शिक्षक की अभिवृत्ति
- विद्यालय का वातावरण
- समय एवं संसाधन
- सहयोग एवं प्रशिक्षण
- आत्म-प्रेरणा

### XI. चिंतनशील शिक्षण के लाभ

- शिक्षण में सुधार होता है।
- शिक्षक की निर्णय क्षमता बढ़ती है।
- विद्यार्थियों का अधिगम प्रभावी होता है।

- नवाचार को बढ़ावा मिलता है।

## **XII. चिंतनशील शिक्षण की सीमाएँ एवं चुनौतियाँ**

- समय की आवश्यकता अधिक होती है।
- सभी शिक्षक आत्म-विश्लेषण के लिए तैयार नहीं होते।
- उचित मार्गदर्शन एवं संसाधनों की कमी हो सकती है।

## **XIII. डिजिटल युग में चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन**

डिजिटल तकनीक ने चिंतनशील शिक्षण को निम्न साधन से अधिक प्रभावी बनाया है-

- ऑनलाइन पोर्टफोलियो
- डिजिटल डायरी
- वीडियो रिकॉर्डिंग द्वारा कक्षा विश्लेषण
- ऑनलाइन फीडबैक
- 

## **XIV. NEP 2020 के संदर्भ में चिंतनशील शिक्षक की भूमिका**

NEP 2020 शिक्षक को निरंतर सीखने वाला, नवाचारी एवं चिंतनशील शिक्षक बनने पर बल देती है।

प्रमुख बिंदु—

- शिक्षक व्यावसायिक विकास।
- आत्म-मूल्यांकन।
- नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग।

शविद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा।

## **जाँच करें अपनी प्रगति**

प्रश्न 1. चिंतनशील शिक्षण से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. आत्म-चिंतन का क्या महत्व है?

प्रश्न 3. चिंतनशील शिक्षण की प्रक्रिया के चरण लिखिए।

प्रश्न 4. शॉन के चिंतनशील अभ्यास मॉडल के दो प्रकार कौन-से हैं?

---

## **19.4 सारांश (Summary)**

---

चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन आधुनिक शिक्षक शिक्षा के महत्वपूर्ण घटक हैं। चिंतनशील शिक्षण के माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों, विधियों एवं परिणामों का विश्लेषण करके शिक्षण प्रक्रिया में आवश्यक सुधार करता है। यह शिक्षक को केवल ज्ञान प्रदान करने वाला व्यक्ति न बनाकर एक सक्रिय, जागरूक, नवाचारी एवं सीखने वाला शिक्षक बनाता है।

आत्म-चिंतन शिक्षक को अपने विचारों, कार्यों, निर्णयों एवं व्यवहारों का मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करता है। इसके द्वारा शिक्षक अपनी शक्तियों एवं कमजोरियों को पहचानकर अपने व्यावसायिक विकास की दिशा में कार्य कर सकता है।

चिंतनशील शिक्षण की प्रक्रिया में अनुभव, अनुभव पर विचार, विश्लेषण एवं सुधारात्मक कार्यवाही शामिल होती है। डायरी लेखन, स्व-मूल्यांकन, सहकर्मी प्रतिक्रिया, पोर्टफोलियो एवं कक्षा अवलोकन जैसी तकनीकें आत्म-चिंतन को प्रभावी बनाती हैं।

ड्यूई एवं शॉन के चिंतनशील मॉडल शिक्षक को अपने अनुभवों से सीखने एवं शिक्षण में सुधार करने की दिशा प्रदान करते हैं। वर्तमान डिजिटल युग में ऑनलाइन पोर्टफोलियो, वीडियो विश्लेषण एवं डिजिटल फीडबैक जैसे साधनों ने चिंतनशील शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी शिक्षक को निरंतर सीखने वाला, चिंतनशील एवं व्यावसायिक रूप से दक्ष बनाने पर बल देती है। अतः चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं प्रभावी शिक्षक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

---

## 19.5 शब्दावली (Glossary)

---

### 1. चिंतनशील शिक्षण (Reflective Teaching)

शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण अनुभवों एवं कार्यों का विश्लेषण कर सुधार करने की प्रक्रिया।

### 2. आत्म-चिंतन (Self-Reflection)

स्वयं के विचारों, कार्यों एवं अनुभवों का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया।

### 3. चिंतनशील शिक्षक (Reflective Teacher)

वह शिक्षक जो अपने शिक्षण कार्य का निरंतर विश्लेषण एवं सुधार करता है।

### 4. आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)

किसी विषय या समस्या का तार्किक एवं गहन विश्लेषण करने की क्षमता।

### 5. अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)

अनुभवों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया।

### 6. स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment)

व्यक्ति द्वारा स्वयं के कार्य एवं क्षमताओं का मूल्यांकन।

7. सहकर्मि प्रतिक्रिया (Peer Feedback)

सहकर्मियों द्वारा दिए गए सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ।

8. चिंतनशील डायरी (Reflective Journal)

अनुभवों एवं विचारों का लिखित रिकॉर्ड।

9. व्यावसायिक विकास (Professional Development)

शिक्षक के ज्ञान, कौशल एवं दक्षताओं में निरंतर वृद्धि।

10. सुधारात्मक कार्यवाही (Improvement Action)

विश्लेषण के आधार पर शिक्षण में किए जाने वाले सकारात्मक परिवर्तन।

## 19.6 अपनी प्रगति जाँचें – संभावित उत्तर

### (Check Your Progress – Possible Answers)

1. उत्तर: चिंतनशील शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक अपने शिक्षण अनुभवों, विधियों एवं परिणामों का विश्लेषण करके शिक्षण में आवश्यक सुधार करता है।

2. उत्तर: आत्म-चिंतन शिक्षक को अपनी क्षमताओं एवं कमजोरियों को पहचानने, निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने तथा व्यावसायिक विकास में सहायता करता है।

3. उत्तर: चिंतनशील शिक्षण की प्रक्रिया के प्रमुख चरण हैं—

अनुभव, अनुभव पर विचार, विश्लेषण, सुधारात्मक कार्यवाही

4. उत्तर: Reflection-in-Action (कार्य करते समय चिंतन)

Reflection-on-Action (कार्य के बाद चिंतन)

## 19.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन

(Supporting Learning Material – Open Educational Resources)

चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन के अध्ययन हेतु निम्न मुक्त शैक्षिक संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है—

- NCERT की शिक्षक शिक्षा संबंधी अध्ययन सामग्री।
- DIKSHA एवं SWAYAM पोर्टल पर उपलब्ध शिक्षक विकास पाठ्यक्रम।
- NCTE (National Council for Teacher Education) द्वारा उपलब्ध शिक्षक शिक्षा संसाधन।

- विभिन्न विश्वविद्यालयों की ई-पुस्तकें एवं शोध सामग्री।
- डिजिटल साधन
- ई-पोर्टफोलियो
- ऑनलाइन जर्नल
- वीडियो आधारित कक्षा विश्लेषण
- ऑनलाइन फीडबैक प्लेटफॉर्म

---

## 19.8 संदर्भ (References)

---

- Dewey, J. (1933). How We Think: A Restatement of the Relation of Reflective Thinking to the Educative Process. Boston: D.C. Heath.
- Schön, D. A. (1983). The Reflective Practitioner: How Professionals Think in Action. New York: Basic Books.
- Pollard, A. (2002). Reflective Teaching: Effective and Evidence-informed Professional Practice. London: Continuum.
- Mangal, S. K. (2019). Advanced Educational Psychology. New Delhi: PHI Learning.
- NCERT. (2005). National Curriculum Framework. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP). (2020). भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।

---

## 19.9 अभ्यास के प्रश्न (Exercise Questions)

---

(A) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

1. चिंतनशील शिक्षण का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (a) केवल परीक्षा लेना
- (b) शिक्षण में सुधार करना
- (c) पाठ्यक्रम समाप्त करना
- (d) अनुशासन बनाए रखना

उत्तर – (b) शिक्षण में सुधार करना

2. Reflection-in-Action की अवधारणा किसने दी?

- (a) ड्यूई

(b) पियाजे

(c) शॉन

(d) स्किनर

उत्तर – (c) शॉन

3. आत्म-चिंतन का संबंध किससे है?

(a) स्वयं के मूल्यांकन से

(b) केवल परीक्षा से

(c) पाठ्यक्रम से

(d) अनुशासन से

उत्तर – (a) स्वयं के मूल्यांकन से

**(B) लघु उत्तरीय प्रश्न**

1. चिंतनशील शिक्षण की परिभाषा दीजिए।
2. आत्म-चिंतन की कोई चार तकनीकी लिखिए।
3. चिंतनशील शिक्षक के गुणों का वर्णन कीजिए।
4. ड्यूई के चिंतनशील चिंतन मॉडल को समझाइए।

**(C) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

1. चिंतनशील शिक्षण एवं आत्म-चिंतन की अवधारणा, महत्व एवं प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।
2. चिंतनशील शिक्षण के प्रमुख मॉडलों का वर्णन कीजिए।
3. शिक्षक के व्यावसायिक विकास में आत्म-चिंतन की भूमिका पर चर्चा कीजिए।
4. NEP 2020 के संदर्भ में चिंतनशील शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

## इकाई -20

### सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

---

#### 20.1 प्रस्तावना

#### 20.2 उद्देश्य

#### 20.3 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का शिक्षण अधिगम में उपयोग एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य

#### 20.4 सारांश

#### 20.5 शब्दावली

#### 20.6 अपनी प्रगति जाँचें - संभावित उत्तर

#### 20.7 सहायक पाठ्य सामग्री - मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

#### 20.8 संदर्भ

#### 20.9 अभ्यास

---

#### 20.1 प्रस्तावना

---

वर्तमान ज्ञान एवं तकनीकी युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है। ICT ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकालकर अधिक प्रभावी, सरल, रोचक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाया है। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट डिवाइस, डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से ज्ञान का आदान-प्रदान तीव्र एवं व्यापक रूप से संभव हुआ है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में ICT केवल शिक्षण का सहायक साधन नहीं है, बल्कि यह अधिगम के नए अवसरों, नवीन शिक्षण विधियों एवं डिजिटल दक्षताओं के विकास का आधार बन गया है। शिक्षक ICT के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री तैयार कर सकते हैं तथा विद्यार्थी अपनी गति एवं आवश्यकता के अनुसार अधिगम कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 ने भी शिक्षा में डिजिटल तकनीक के समुचित उपयोग, ऑनलाइन एवं मिश्रित अधिगम तथा डिजिटल साक्षरता के विकास पर विशेष बल दिया है। अतः वर्तमान समय में ICT का ज्ञान एवं प्रभावी उपयोग शिक्षकों एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए आवश्यक हो गया है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने में ICT की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह शिक्षा को अधिक सुलभ, समावेशी एवं नवीन बनाने में सहायता करता है। ICT के माध्यम से शिक्षक जटिल विषयों को चित्र, वीडियो, एनिमेशन एवं अन्य मल्टीमीडिया साधनों द्वारा सरल एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं।

ICT विद्यार्थियों में स्व-अधिगम, रचनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता एवं डिजिटल कौशल का विकास करता है। यह शिक्षार्थियों को विश्वव्यापी ज्ञान संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है तथा सीखने के लिए अधिक अवसर उपलब्ध कराता है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में ICT दूरस्थ शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षा, आभासी कक्षाओं एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित अधिगम प्रणालियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसलिए आधुनिक शिक्षक के लिए ICT दक्षता एक आवश्यक व्यावसायिक योग्यता बन गई है।

---

## 20.2 उद्देश्य (Objectives)

---

**इस इकाई के अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी—**

- ICT की अवधारणा एवं महत्व को समझ सकेंगे।
- ICT की प्रकृति एवं विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ICT के उपयोग को समझ सकेंगे।
- ICT आधारित शिक्षण साधनों एवं संसाधनों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- डिजिटल शिक्षण सामग्री एवं ई-अधिगम की उपयोगिता समझ सकेंगे।
- ऑनलाइन एवं मिश्रित अधिगम की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
- मूल्यांकन एवं समावेशी शिक्षा में ICT की भूमिका को जान सकेंगे।
- NEP 2020 के संदर्भ में ICT के महत्व को समझ सकेंगे।
- ICT के लाभ, सीमाएँ एवं चुनौतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- शिक्षा में ICT के प्रभावी उपयोग के उपायों को समझ सकेंगे।

---

## 20.3 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का शिक्षण-अधिगम में उपयोग एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य

---

### I. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का अर्थ एवं अवधारणा

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology) उन तकनीकों का समन्वित रूप है जिनके माध्यम से सूचना का संग्रह, प्रसंस्करण, भंडारण एवं आदान-प्रदान किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में ICT कंप्यूटर, इंटरनेट, डिजिटल प्लेटफॉर्म, स्मार्ट बोर्ड एवं ऑनलाइन संसाधनों के उपयोग को संदर्भित करता है।

### II. ICT की प्रकृति एवं विशेषताएँ

- सूचना तक तीव्र एवं सरल पहुंच।
- संचार को प्रभावी एवं व्यापक बनाना।
- विद्यार्थी-केंद्रित एवं सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देना।
- मल्टीमीडिया आधारित शिक्षण की सुविधा।
- समय एवं स्थान की सीमाओं को कम करना।

### III. शिक्षण-अधिगम में ICT की भूमिका

- शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी एवं रोचक बनाना।
- विद्यार्थियों में स्व-अधिगम की भावना विकसित करना।
- व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान करना।
- शिक्षक को नवीन शिक्षण विधियों के प्रयोग में सहायता देना।

### IV. ICT आधारित शिक्षण-अधिगम के साधन एवं संसाधन

- कंप्यूटर एवं लैपटॉप।
- स्मार्ट बोर्ड एवं प्रोजेक्टर।
- इंटरनेट एवं शैक्षिक वेबसाइट।
- मोबाइल एप्स एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म।
- ई-पुस्तकें एवं डिजिटल पुस्तकालय।

### V. डिजिटल शिक्षण सामग्री एवं ई-अधिगम (E-Learning)

डिजिटल शिक्षण सामग्री इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से उपलब्ध अध्ययन सामग्री है, जिसमें ई-पुस्तक, वीडियो व्याख्यान, डिजिटल मॉड्यूल एवं ऑनलाइन पाठ्य सामग्री शामिल हैं। ई-अधिगम विद्यार्थियों को कहीं भी और कभी भी सीखने की सुविधा प्रदान करता है।

### VI. ऑनलाइन एवं मिश्रित अधिगम (Online and Blended Learning)

ऑनलाइन अधिगम में इंटरनेट के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है, जबकि मिश्रित अधिगम में पारंपरिक कक्षा शिक्षण एवं ऑनलाइन शिक्षण का संयोजन होता है। यह अधिगम को अधिक लचीला एवं प्रभावी बनाता है।

### VII. शिक्षक एवं विद्यार्थी के लिए ICT का महत्व

#### शिक्षक के लिए:

- नवीन शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग।
- डिजिटल सामग्री निर्माण।
- व्यावसायिक विकास के अवसर।

#### विद्यार्थी के लिए:

- ज्ञान के विस्तृत स्रोतों तक पहुंच।
- स्व-अधिगम एवं रचनात्मकता का विकास।
- डिजिटल कौशल में वृद्धि।

### VIII. मूल्यांकन प्रक्रिया में ICT का उपयोग

- ऑनलाइन परीक्षा एवं क्विज।
- डिजिटल मूल्यांकन प्रणाली।
- त्वरित प्रतिक्रिया एवं परिणाम विश्लेषण।

- विद्यार्थी प्रगति का डिजिटल रिकॉर्ड।

### **IX. समावेशी शिक्षा में ICT की भूमिका**

ICT विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करता है। सहायक तकनीकों के माध्यम से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अधिगम को सरल एवं सुलभ बनाया जा सकता है।

### **X. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 एवं ICT**

NEP 2020 में डिजिटल शिक्षा, तकनीकी एकीकरण, ऑनलाइन शिक्षण एवं डिजिटल साक्षरता को शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का महत्वपूर्ण माध्यम माना गया है।

### **XI. समकालीन शिक्षा में डिजिटल तकनीक एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग**

- व्यक्तिगत अधिगम (Personalized Learning)।
- स्मार्ट ट्यूटोरिंग सिस्टम।
- अधिगम विश्लेषण (Learning Analytics)।
- स्वचालित मूल्यांकन प्रणाली।

### **XII. ICT के लाभ एवं शैक्षिक प्रभाव**

- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
- अधिगम को रुचिकर एवं प्रभावी बनाना।
- ज्ञान तक व्यापक पहुंच।
- रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन का विकास।

### **XIII. ICT के उपयोग में चुनौतियाँ एवं सीमाएँ**

- डिजिटल विभाजन।
- तकनीकी संसाधनों की कमी।
- इंटरनेट की सीमित उपलब्धता।
- साइबर सुरक्षा एवं गोपनीयता की समस्या।
- तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव।

### **XIV. ICT के प्रभावी उपयोग हेतु आवश्यक उपाय**

- शिक्षकों को ICT प्रशिक्षण प्रदान करना।
- गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री का विकास।
- तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- सुरक्षित एवं नैतिक तकनीकी उपयोग को बढ़ावा देना।

### **XV. निष्कर्ष एवं भविष्य की संभावनाएँ**

ICT भविष्य की शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, आभासी वास्तविकता (VR), ऑनलाइन प्लेटफॉर्म एवं डिजिटल संसाधन शिक्षा को और अधिक प्रभावी एवं व्यक्तिगत बनाएंगे।

## जाँच करें अपनी प्रगति

प्रश्न 1. ICT का पूरा नाम क्या है?

प्रश्न 2. शिक्षण-अधिगम में ICT का एक प्रमुख लाभ लिखिए।

प्रश्न 3. मिश्रित अधिगम (Blended Learning) क्या है?

प्रश्न 4. NEP 2020 में ICT को क्यों महत्व दिया गया है?

प्रश्न 5. ICT की एक चुनौती लिखिए।

---

## 20.4 सारांश (Summary)

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने शिक्षा के स्वरूप एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन किया है। ICT ने पारंपरिक शिक्षण को डिजिटल, संवादात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाया है। इसके माध्यम से शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री तैयार कर सकते हैं तथा विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं एवं गति के अनुसार अधिगम कर सकते हैं।

ICT का उपयोग ई-अधिगम, ऑनलाइन शिक्षा, मिश्रित अधिगम, डिजिटल मूल्यांकन एवं समावेशी शिक्षा में प्रभावी रूप से किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षा में तकनीकी एकीकरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

यद्यपि ICT के अनेक लाभ हैं, फिर भी डिजिटल विभाजन, तकनीकी संसाधनों की कमी एवं साइबर सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। उचित प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता एवं नैतिक उपयोग के माध्यम से ICT शिक्षा की गुणवत्ता एवं पहुंच को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

---

## 20.5 शब्दावली (Glossary)

1. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) – सूचना के संग्रह, प्रसंस्करण, भंडारण एवं संचार हेतु प्रयुक्त तकनीकों का समन्वित रूप।
2. डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy) – डिजिटल उपकरणों एवं तकनीकों के प्रभावी एवं सुरक्षित उपयोग की क्षमता।
3. ई-अधिगम (E-Learning) – इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों एवं इंटरनेट द्वारा किया जाने वाला अधिगम।
4. ऑनलाइन अधिगम (Online Learning) – इंटरनेट आधारित शिक्षण प्रक्रिया जिसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी डिजिटल माध्यमों से जुड़े होते हैं।
5. मिश्रित अधिगम (Blended Learning) – पारंपरिक कक्षा शिक्षण एवं ऑनलाइन शिक्षण का संयोजन।
6. डिजिटल शिक्षण सामग्री (Digital Learning Material) – इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से उपलब्ध अध्ययन सामग्री जैसे ई-पुस्तक, वीडियो एवं डिजिटल मॉड्यूल।

7. वर्चुअल कक्षा (Virtual Classroom) – ऑनलाइन माध्यम से संचालित कक्षा जिसमें शिक्षक एवं विद्यार्थी दूर रहकर भी संवाद कर सकते हैं।
8. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) – ऐसी तकनीक जो मशीनों को मानव जैसी सोच एवं निर्णय क्षमता प्रदान करती है।
9. अधिगम प्रबंधन प्रणाली (Learning Management System - LMS) – ऑनलाइन शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन के प्रबंधन हेतु डिजिटल प्रणाली।
10. डिजिटल विभाजन (Digital Divide) – तकनीकी संसाधनों एवं डिजिटल सुविधाओं की उपलब्धता में असमानता।

---

## 20.6 अपनी प्रगति जांचे – संभावित उत्तर

---

### (Check Your Progress – Expected Answers)

1. उत्तर: ICT का पूरा नाम Information and Communication Technology (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) है।
2. उत्तर: ICT शिक्षण-अधिगम को प्रभावी, रोचक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाता है।
3. उत्तर: पारंपरिक कक्षा शिक्षण एवं ऑनलाइन शिक्षण के संयोजन को मिश्रित अधिगम कहते हैं।
4. उत्तर: शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, सुलभ एवं तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के लिए NEP 2020 में ICT को महत्व दिया गया है।
5. उत्तर: डिजिटल विभाजन ICT के उपयोग की प्रमुख चुनौती है।

---

## 20.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (Supporting Learning Material – Open Educational Resources)

---

1. DIKSHA Portal

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए डिजिटल शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराने वाला राष्ट्रीय मंच।

2. SWAYAM Portal

ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं MOOCs आधारित अधिगम मंच।

3. e-PG Pathshala

उच्च शिक्षा के लिए डिजिटल अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने वाला मंच।

4. National Digital Library of India (NDLI)

विभिन्न विषयों की डिजिटल पुस्तकों एवं संसाधनों का संग्रह।

5. NROER (National Repository of Open Educational Resources)

मुक्त शैक्षिक संसाधनों का डिजिटल भंडार।

6. शिक्षक प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन प्लेटफॉर्म

ICT आधारित प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करते हैं।

---

## 20.8 संदर्भ (References) – APA शैली

---

- Government of India. (2020). National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India.
- UNESCO. (2018). ICT Competency Framework for Teachers. UNESCO Publishing.
- Mangal, S. K., & Mangal, U. (2020). Essentials of Educational Technology. PHI Learning.
- Aggarwal, J. C. (2019). Essentials of Educational Technology: Teaching Learning Innovations. Vikas Publishing House.
- Kumar, K. L. (2018). Educational Technology. New Age International Publishers.
- Sharma, R. A. (2021). Educational Technology and ICT in Education. R. Lall Book Depot.

---

## 20.9 अभ्यास के प्रश्न (Exercise Questions)

---

### (A) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Questions)

1. ICT का पूरा नाम है—

- (a) Information and Communication Technology
- (b) Indian Communication Technology
- (c) Information Computer Technique
- (d) Internet Communication Tool

उत्तर: (a) Information and Communication Technology

2. NEP 2020 में किस पर विशेष बल दिया गया है?

- (a) केवल पुस्तक आधारित शिक्षा
- (b) डिजिटल शिक्षा एवं तकनीकी एकीकरण

(c) केवल परीक्षा प्रणाली

(d) केवल व्याख्यान विधि

उत्तर: (b) डिजिटल शिक्षा एवं तकनीकी एकीकरण

3. ऑनलाइन अधिगम किस पर आधारित होता है?

(a) इंटरनेट

(b) केवल पुस्तक

(c) केवल कक्षा

(d) केवल प्रयोगशाला

उत्तर: (a) इंटरनेट

### **(B) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short Answer Questions)**

1. ICT की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

2. शिक्षण-अधिगम में ICT की भूमिका लिखिए।

3. ई-अधिगम से आप क्या समझते हैं?

4. ICT के प्रमुख साधनों का वर्णन कीजिए।

### **(C) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (Long Answer Questions)**

#### **Questions)**

1. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ICT के उपयोग एवं महत्व की व्याख्या कीजिए।

2. समकालीन शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में ICT एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

3. ICT के लाभ एवं चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में ICT के महत्व को समझाइए।